अनुवाद पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह

4 सितंबर 2015, डिब्रूगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा अपने अनुवाद पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन 4 सितंबर 2015 को डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया तथा अनुवाद की महत्ता को रेखांकित किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने भारत की बहुभाषी विविधता को रेखांकित करते हुए कहा कि इस बहुभाषी विविधता में भारत के इस पूर्वोत्तर क्षेत्र में सबसे अधिक क्षेत्रीय भाषाएँ हैं। उन्होंने अनुवाद के सौंदर्य के बारे में भी बात की। अकादेमी द्वारा पुरस्कार के रूप में रु. 50,000/- की राशि, स्मृति पट्टिका एवं शॉल भेंट किया जाता है। इस वर्ष के अकादेमी के अनुवाद पुरस्कार प्राप्तकर्ता निम्न हैं :

बिपुल देउरी (असमिया) – अमिश त्रिपाठी के अंग्रेज़ी उपन्यास *द इम्मोर्टल्स ऑफ़ मेलुहा* का असमिया भाषा में अनुवाद।

विनय कुमार माहाता (बाङ्ला) – सुधांशु शेखर चौधरी के मैथिली उपन्यास *ई बतहा संसार* का बाङ्ला में अनुवाद।

सुरथ नार्ज़ारी (बोडो)–रवींद्रनाथ ठाकुर के *गीतांजलि* का बोडो में अनुवाद।

यशपाल 'निर्मल' (डोगरी) – कृपासागर के पंजाबी नाटक *डीडो जम्वाल* का डोगरी में अनुवाद।

पद्मिनी राजप्पा (अंग्रेज़ी) – बाणभट्ट की संस्कृत कृति *कादंबरी* का अंग्रेज़ी में अनुवाद।

(स्व.) नगीनदास जीवन लाल शाह (गुजराती) – गुणरत्नम सूरी के संस्कृत ग्रंथ का गुजराती में अनुवाद।

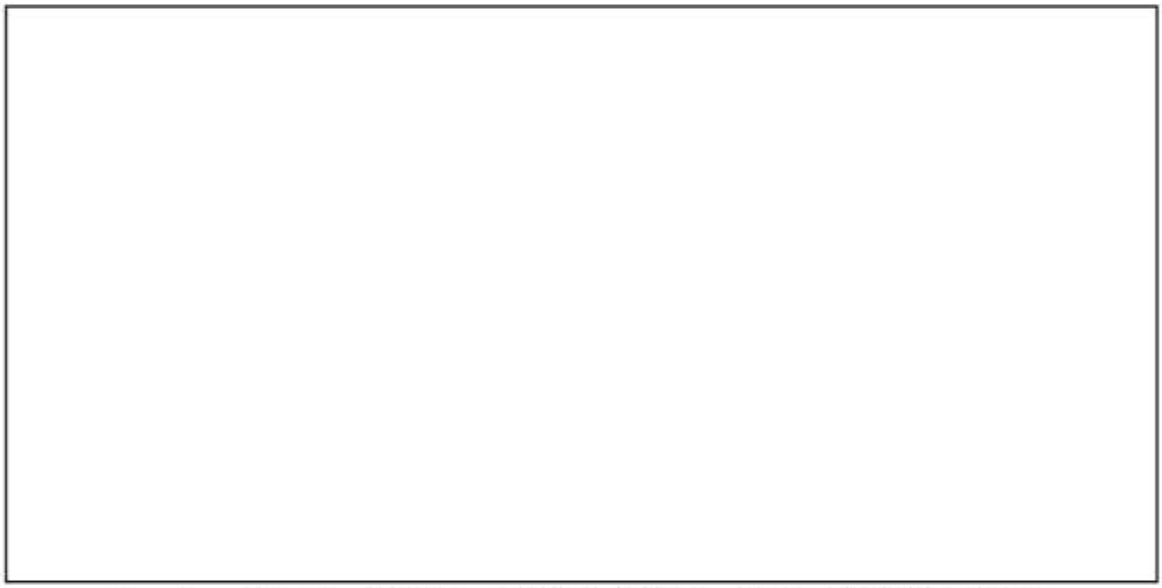

अनुवाद पुरस्कार विजेता लेखकों के साथ मुख्य अतिथि श्रीमती प्रतिभा राय तथा अकादेमी के सचिव एवं अध्यक्ष

डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से अनुवाद पुरस्कार प्राप्त करते हुए सुरथ नाज़ीरी

फूलचंद मानव (हिंदी) – बलदेव सिंह के पंजाबी उपन्यास *अन्नदाता* का हिंदी में अनुवाद।

जी. एन. रंगनाथ राव (कन्नड) – राजमोहन गाँधी की अंग्रेज़ी जीवनी *मोहन दास : ए ट्रू स्टोरी ऑफ़ ए मैन, हिज़ पीपल एंड एन एंपायर* का कन्नड में अनुवाद।

एम. एच. ज़फ़र (कश्मीरी)–वसु गुप्त रेशी के संस्कृत निबंध *शिव सूत्र* का कश्मीरी में अनुवाद।

पांडुरंग काशिनाथ गावडे (कोंकणी)–लक्ष्मण गायकवाड कृत मराठी आत्मकथा *उचल्या* का कोंकणी में अनुवाद।

रामनारायण सिंह (मैथिली)–तकषी शिवशंकर पिल्लै के मलयाळम् उपन्यास *चेम्मीन* का मैथिली में अनुवाद।

प्रिया ए. एस. (मलयाळम्)–अरुंधती राय के अंग्रेज़ी उपन्यास *द गॉड ऑफ़ स्माल थिंग्स* का मलयाळम् में अनुवाद।

वाइखोम चा इवोतोम्बी मङ्गाङ् (मणिपुरी)–रवींद्रनाथ ठाकुर के उपन्यास *नौका डूबी* का मणिपुरी में अनुवाद।

मधुकर सुदाम पाटिल (मराठी)–गणेश देवी की अंग्रेज़ी कृति *ऑफ़्टर अम्नेशिया* का मराठी में अनुवाद।

डंबर मणि प्रधान (नेपाली)–सुरेंद्र वर्मा का हिंदी उपन्यास *मुझे चाँद चाहिए* का नेपाली में अनुवाद।

रवींद्र कुमार प्रहराज (ओड़िया) – टेकचंद ठाकुर के बाङ्ला उपन्यास *आलालेर घरेर दुलाल* का ओड़िया में अनुवाद।

तरसेम (पंजाबी)–सुनील गंगोपाध्याय के बाङ्ला उपन्यास *मनेर मानुष* का पंजाबी में अनुवाद।

कैलाश मंडेला (राजस्थानी)–तिरुवल्लुवर कृत तमिळ काव्यकृति *तिरुक्कुरल* का राजस्थानी में अनुवाद।

नारायण दाश (संस्कृत)–चंद्रशेखर दास वर्मा के कहानी-संग्रह *झड़ ओ अन्यान्य गल्प* का संस्कृत में अनुवाद।

सारो हंसदा (संताली) – शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के बाङ्ला उपन्यास *देवदास* का संताली में अनुवाद।

राम कुकरेजा (सिंधी) – बाङ्ला यात्रा-वृत्तांत *मरु तीर्थ* का सिंधी में अनुवाद।

एस. देवदास (तमिळ) – भवानी भट्टाचार्य के अंग्रेज़ी उपन्यास *शैडो फ्रॉम लद्दाख* का तमिळ में अनुवाद।

आर. शांता सुंदरी (तेलुगु)–शिवरानी देवी की प्रेमचंद पर लिखी हिंदी जीवनी *प्रेमचंद घर में* का तेलुगु में अनुवाद।

वेद राही (उर्दू)–वेद राही द्वारा रचित डोगरी उपन्यास *ललद्यद* का स्वयं द्वारा उर्दू में अनुवाद।

पुरस्कार अर्पण समारोह के बाद समारोह की मुख्य अतिथि ओड़िया की लब्धप्रतिष्ठ कथाकार डॉ. प्रतिभा राय ने सभा को संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि अनुवाद कितना कठिन एवं दुष्कर कार्य है। डॉ. राय ने आगे कहा कि अनुवाद प्रक्रिया में मूल भाव के कुछ अंश के नष्ट होने का भय सदैव बना रहता है। उन्होंने

प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से अनुवाद पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्री पांडुरंग काशीनाथ गावडे

प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से अनुवाद पुरस्कार प्राप्त करती हुई श्रीमती सारो हांसदा

अनुवादकों को सलाह दी कि उन्हें उन्हीं पुस्तकों के अनुवाद करना चाहिए, जिन्हें वे बहुत पसंद करते हैं। डॉ. राय ने लेखकों से आह्वान किया कि कमियों के बावजूद अनुवाद को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। कार्यक्रम का समापन अनवर ख़ाँ मंगनियार एवं ग्रुप द्वारा राजस्थानी लोकगीतों की शानदार प्रस्तुति के साथ हुआ।

अनुवादक सम्मिलन

5 सितंबर 2015, डिब्रूगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत अनुवादकों का सम्मिलन 5 सितंबर 2015 को डिब्रूगढ़ में किया गया, जिसकी अध्यक्षता अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. कर्बी डेका हज़ारिका ने की। सम्मिलन में बोलते हुए बोडो के श्री सुरथ नार्ज़ारी ने कहा कि अनुवाद करते हुए मुझे लगा कि मूल रचनाकार के भाव का अनुवाद बहुत मुश्किल होता है। डोगरी के श्री यशपाल निर्मल ने कहा कि मेरा दृढ़ विश्वास है कि आज जबकि पूरा विश्व सूचना तकनीक के माध्यम से एक गाँव बन चुका है, अनुवाद की भूमिका अतुल्य है। ओड़िया भाषा के लिए पुरस्कृत श्री रवींद्र कुमार प्रहराज ने कहा कि मुझे जिस बाङ्ला उपन्यास के अनुवाद पर पुरस्कार दिया गया है, संभवतः भारतीय साहित्य में यह पहला उपन्यास है, जिसमें आम आदमी और उसकी गतिविधियों को चित्रित किया गया है, जबकि दूसरी भाषाओं में ऐतिहासिक एवं पौराणिक रोमांस को दर्शाया गया है। अंग्रेज़ी के लिए सम्मानित श्रीमती पद्मिनी राजप्पा ने कहा कि मेरा मानना है कि सभी अनुवादकों का सामना पठनीयता बनाम सच्चाई से होता है। उन्होंने आगे कहा कि समस्याओं के दो पहलू हैं—लेखक की शैली की सच्चाई तथा रचना की सामग्री की सच्चाई।

हिंदी के लिए पुरस्कृत श्री फूलचंद मानव ने कहा कि उन्हें कविता का अनुवाद करना अच्छा लगता है, क्योंकि वे कविता की व्याख्या अपने ढंग से कर सकते हैं। कन्नड भाषा के लिए पुरस्कृत श्री जी. एन. रंगनाथन राव ने कहा कि एक अनुवादक के लिए पूरी तरह से अर्थ और मूल रचना की बारीकियों की समझ होना ज़रूरी है। अनुवादक को दोनों भाषाओं की निष्पक्ष काव्य शास्त्र, अर्थ के ज्ञान और स्वनिम होना चाहिए। कश्मीरी के श्री एम. एच. ज़फ़र ने कहा कि जब हम उस परंपरा की जाँच गहराई से करते

अनुवाद सम्मिलन में बोलते हुए श्रीमती पद्मिनी राजप्पा

हैं तो हमें अपनी जड़ों का मध्ययुगीन कश्मीर के आध्यात्मिक और रहस्यवादी संस्कृति में जाने का एहसास होता है। कोंकणी भाषा के लिए सम्मानित श्री पांडुरंग काशीनाथ गावडे ने कहा कि कोंकणी साहित्य में दलित साहित्य बहुत कम है। *उचल्या* जैसी दलित प्रेरित रचनाएँ जनसाधारण को जागरूक एवं शिक्षित करती हैं। मैथिली के श्री रामनारायण सिंह ने कहा कि वे जो कुछ भी लिखते हैं ख़ुद की ख़ुशी और संतुष्टि के लिए लिखते हैं। यह उनके अनुवाद कर्म में भी परिलक्षित होता है। नेपाली के श्री डंबर मणि प्रधान ने दुनिया में अनुवाद के विकास के बारे में बात की। कुछ प्रसिद्ध लेखकों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया विभिन्न अनुवाद के माध्यम से हर व्यक्ति के लिए एक छोटी जगह हो गई है। पंजाबी के श्री तरसेम ने कहा कि अनुवाद इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि एक भाषा के माध्यम से हम दूसरी भाषा की रचना को जान सकते हैं।

राजस्थानी के श्री कैलाश मंडेला ने कहा कि कुरल काव्य के द्वारा हम दैनिक जीवन को कैसे एक आदर्श मानदंड के अनुसार व्यतीत कर सकते हैं। संस्कृत के श्री नारायण दाश ने कहा कि अनुवाद करते समय मौलिक स्रोत को बरक़रार रखना चाहिए। संताली की श्रीमती सारो हांसदा ने कहा कि वे फ़िल्मों से बहुत ज़्यादा प्रभावित हैं। *देवदास* का अनुवाद करने में उन्हें लगभग दो वर्ष का समय लग गया। तमिळ के श्री एस. देवदास ने कहा कि मुझे कथेतर साहित्य को अनुवाद करना अच्छा और चुनौतीपूर्ण लगता है। असमिया के श्री बिपुल देउरी ने कहा कि शुरू में मुझे लगा था कि अनुवाद कठिन कार्य नहीं है, लेकिन बाद में पता चला कि अनुवाद करना एक दुष्कर कार्य है।

अभिव्यक्ति

5 सितंबर 2015, डिब्रूगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद पुरस्कार अर्पण समारोह के दौरान 5 सितंबर 2015 को 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम का आयोजन डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में किया गया जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों एवं कवियों को रचना पाठ के लिए आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि एक रचनाकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि स्वयं को कैसे अभिव्यक्त किया जाए। कई बार ऐसा भी होता है कि बोली गई भाषा को जब शब्दों का रूप दिया जाता है तो वे अपना बहुत-सा सार खो देते हैं। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अलक कुमार बरगोहाईं ने विज्ञान एवं रचनात्मक लेखन के मर्ज पर बात की। अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. कर्बी डेका हज़ारिका ने कहा कि साहित्य किस प्रकार अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है तथा अकादेमी को इस आयोजन के लिए बधाई दी।

बोडो के श्री रत्नेश्वर बसुमतारी ने अपनी बोडो कविताओं को प्रस्तुत किया तत्पश्चात् उनके हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किए। मणिपुरी के डॉ. गुरुमायूम बिजय कुमार शर्मा ने अपनी मणिपुरी कविताओं को पहले मणिपुरी में फिर कुछ कविताओं के हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किए। नेपाली के श्री अरुणचंद्र राई ने अपनी कुछ कविताएँ नेपाली तथा अंग्रेज़ी में प्रस्तुत कीं। तमिळ के श्री अयप्पा माधवन ने अपनी कुछ तमिळ कविताओं के अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। असमिया के श्री जीबन नरह ने भी अपनी कुछ कविताएँ प्रस्तुत कीं। सत्र के अंतिम कवि उर्दू के श्री रऊफ़ ख़ैर ने अपनी उर्दू नज़्में और ग़ज़लें प्रस्तुत कीं, जिन्हें श्रोताओं द्वारा सराहा गया।

सत्र का समापन डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के सेंटर फ़ॉर परफ़ार्मिंग आर्ट्स के छात्रों की नृत्य प्रस्तुति से हुआ।

6 सितंबर 2015 को प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध लेखक श्री नगेन सैकिया ने की तथा सत्र का विषय था 'मेरी दुनिया मेरा लेखन'। बाङ्ला के सिलादित्य सेन ने इंदर ठाकुर और विभूति भूषण के चरित्रों पर प्रकाश डाला तथा कहा कि ये चरित्र मानवजीवन के आदर्श उदाहरण हैं तथा उनके अलग-अलग अनुभवों और भावनाओं के कारण सामने आते हैं। मलयाळम् लेखक श्री पी.

'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम में श्री नगेन सैकिया और श्री आनंद

सच्चिदानंदन ने सेना की अपनी सेवाओं को याद करते हुए चीन द्वारा तथा पूर्वी पाकिस्तान के पूर्वोत्तर में आक्रमण को रेखांकित किया। उन अनुभवों ने सामाजिक आर्थिक समस्याओं पर लेखन को विवश किया। मणिपुरी के डॉ. आई. देवेन सिंह ने जो कि पेशे से एक चिकित्सक हैं, ने कहा कि लेखक को अपने लेखन द्वारा सामाजिक परिवर्तन लाने की कोशिश करनी चाहिए।

मराठी के श्री राजन गवास ने कहा कि समाज और क़ानून एक बार फिर केंद्र में है। उन्होंने देवदासी आंदोलन के बारे में भी बात की। सत्र के अध्यक्ष श्री नगेन सैकिया ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि एक लेखक को मानवता प्रेमी होना चाहिए, प्रेम के बिना कोई व्यक्ति रचनात्मक लेखक नहीं हो सकता।

दूसरा सत्र कहानी पाठ का सत्र था तथा सत्र की अध्यक्षता कोंकणी भाषा के श्री पुंडलिक नाइक ने की। श्री देबाशीष पाणिग्रही जो कि एक पुलिस अधिकारी हैं, ने अपनी अनूदित कहानी का पाठ किया। सत्र के अध्यक्ष श्री पुंडलिक नाइक ने कहा कि कैसे कहानियां महत्त्वपूर्ण होती हैं और कहानियों को किस तरह रेडियो नाटक, टीवी सीरियल तथा टेलीफ़िल्म के रूप में रूपांतरित किया जा सकता है।

अंतिम सत्र काव्य गोष्ठी पर आधारित था तथा सत्र की अध्यक्षता राजस्थानी के श्री चंद्रप्रकाश देवल ने की। सत्र में डोगरी के कवि श्री मोहन सिंह ने अपनी तीन कविताएँ 'तपती धूप', 'वर्तमान का चित्र' एवं 'मुर्गा और आदमी' प्रस्तुत कीं। गुजराती के श्री संजू बाला ने अपनी गुजराती कविताओं तथा उनके अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। मैथिली की सुश्री स्वयंप्रभा झा ने अपनी कविताओं का पाठ किया। संस्कृत की सुश्री जयश्री चट्टोपाध्याय ने अपनी संस्कृत कविताओं का पाठ किया। पंजाबी के श्री सतपाल भीखी ने अपनी कविताएँ पंजाबी एवं हिंदी में प्रस्तुत कीं। सत्र के अंत में सिंधी के कवि श्री हरीश करमचंदानी ने भी अपनी सिंधी एवं हिंदी कविताओं का पाठ किया।

समारोह में छात्र, अध्यापक, लेखक, कवि तथा मीडिया के लोग भारी संख्या में उपस्थित थे।

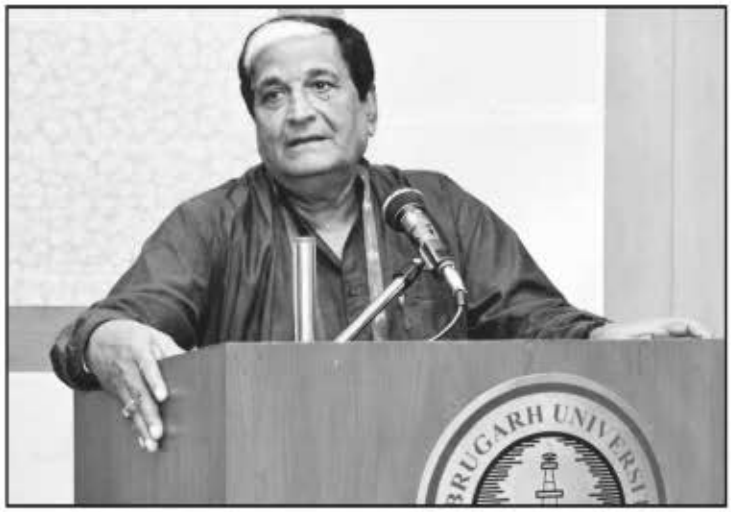

'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम में डॉ. चंद्रप्रकाश देवल

बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह

14 नवंबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन रवींद्र नाट्य मंदिर, प्रभादेवी, मुंबई में 14 नवंबर 2015 को किया गया, जिसके मुख्य अतिथि थे श्री चंद्रकांत सेठ तथा अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पुरस्कृत लेखकों एवं अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने याद दिलाया कि बच्चे किसी भी सभ्यता की रीढ़ होते हैं, उनके लिए समृद्ध साहित्य का उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे उन्हें अपनी विरासत का परिचय मिलता है। इसीलिए बाल साहित्यकार की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने श्रेष्ठ साहित्य को आम जन तक पहुँचाने के लिए साहित्य अकादेमी की गतिविधियों और प्रयासों के बारे में भी बताया।

अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि अकादेमी हर 16 घंटे में एक पुस्तक का प्रकाशन करती है तथा हर 19 घंटे में एक साहित्यिक आयोजन करती है। यह दर्शाता है कि अकादेमी साहित्य के क्षेत्र में कितनी सक्रिय है। अकादेमी का मुख्य उद्देश्य समृद्ध साहित्य एवं साहित्यकार का सम्मान करना है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अन्य दूसरी संस्थाओं द्वारा भी पुरस्कार दिए जाते हैं तथा अकादेमी द्वारा भी पुरस्कृत किया जाता है, लेकिन मैं इसे पुरस्कार नहीं बल्कि सम्मान कहता हूँ। उन्होंने समृद्ध साहित्य की रचना के लिए सभी लेखकों के प्रति आभार व्यक्त किया। भारतीय साहित्य एक संयुक्त परिवार को बढ़ावा देता है। इस अवसर पर 24 भाषाओं में पुरस्कृत लेखकों को सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि गुजराती के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री चंद्रकांत शेठ ने कहा कि एक बच्चा भगवान का मानव रूप होता है। एक बच्चे की भाषा बिलकुल अलग होती

बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं के साथ अकादेमी के सचिव, अध्यक्ष तथा मुख्य अतिथि श्री चंद्रकांत शेठ

डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्रीमती धीरूबेन पटेल

डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्रीमती अली अहमद

है जो किसी भी गंदगी या प्रदूषण से मुक्त होती है। उन्होंने कहा कि बच्चे की भाषा का मुख्य स्रोत कृष्ण लीला है, *पंचतंत्र* और *रामचरितमानस,* महाकाव्य भी बाल साहित्य का चित्रण करते हैं। जीवन की दिन प्रतिदिन की दिनचर्या में इनका अद्वितीय महत्त्व है।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

लेखक सम्मिलन

15 नवंबर 2015, मुंबई

पुरस्कार अर्पण समारोह के दूसरे दिन लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया, जिसमें सभी पुरस्कृत लेखकों ने अपने अनुभव श्रोताओं से साझा किए। सम्मिलन की अध्यक्षता अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. शितांशु यशश्चंद्र ने की। उन्होंने कहा कि भारत विविधताओं का देश है। बाल भाषा अद्वितीय तथा अन्य सभी भाषाओं से अलग होती है। यह राज्य, क्षेत्र या प्रांत के साथ अलग नहीं होती है।

असमिया की श्रीमती अली अहमद ने कहा कि सभी जातियों और समुदायों की अपनी भाषा होती है। बच्चे सबसे पहले गीत, लोरी, कहानियाँ अपनी मातृभाषा में सुनते हैं। बाङ्ला के श्री कार्तिक घोषाल ने कहा कि बाङ्ला साहित्य में बाल साहित्य का एक बड़ा हिस्सा है। बाङ्ला में रवींद्रनाथ ठाकुर से लेकर उपेंद्रकिशोर राय चौधुरी तक सभी ने बच्चों के लिए लेखन किया है। बोडो के श्री तिरेन बोरो के अनुसार शब्दों के रूप में विचारों की अभिव्यक्ति को साहित्य के रूप में जाना जाता है, लेकिन विचार सभी के लिए स्वीकार्य होना चाहिए। डोगरी के श्री ताराचंद कलंदरी ने उन घटनाओं के बारे में बताया, जिनसे उन्हें एक साहित्यकार बनने का प्रोत्साहन मिला। उन्होंने अपनी पहली पुस्तक 2010 में लिखी और अब तक 100 से अधिक बाल कविताओं की रचना की।

अंग्रेज़ी के श्री सौम्य राजेंद्रन ने कहा कि दुनिया में कोई जगह ऐसी नहीं है, जहाँ बच्चों की ख़ामोशी बर्दाश्त की जाती हो। उन्हें बोलना चाहिए, उन्हें पूछना चाहिए और उन्हें कभी शांत नहीं रहना चाहिए।

डॉ. के. श्रीनिवासराव एवं प्रो. सितांशु यशश्चंद्र

हिंदी के श्री शेरजंग गर्ग ने कहा कि वर्तमान समय में बच्चों का बहुत-सा साहित्य मौजूद है। आकर्षक कवर और रेखाचित्र बच्चों को पुस्तकें पढ़ने के लिए आकर्षित करती हैं जो कि एक सकारात्मक लक्षण है। कन्नड के श्री टी. एस. नागराज शेट्टी ने कहा कि बाल साहित्य मानव संस्कृति का फल है। आधुनिक साहित्य एक वृक्ष के समान है जहाँ बाल साहित्य अंकुर और फूल की तरह है, जिसके बिना पेड़ एक झाड़ है। कोंकणी के श्री रामनाथ जी गवडे ने कहा कि कोंकणी साहित्य में पहली कहानी संस्कृत कहानी का अनुवाद थी। हम रामायण, महाभारत, पंचतंत्र के आधार पर लिखते हैं। हमें बच्चों के लिए भी लिखना चाहिए। मैथिली के श्री रामदेव झा का कहना था कि एक बच्चे को पहली बार बोलना

लेखक सम्मिलन में बोलते हुए श्री जनार्दन हेगड़े

सिखाया जाता है उसके बाद भाषा, ज्ञान से विभिन्न पुस्तकों को पढ़ने की रुचि उत्पन्न होती है। मलयाळम् के श्री एस. शिवदास ने एक लेखक का वर्णन उस ख़ूबसूरत फूल की तरह किया, जो अपनी पंखुड़ियाँ खोलकर अपनी ख़ुशबू बिखेरता है। मणिपुरी के थोङ्चोम थोएबा मैतेई ने मणिपुरी साहित्य के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने कहा कि बाल साहित्यकारों को मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक साहित्य की रचना करनी चाहिए। नेपाली के श्री मुक्ति उपाध्याय ने कहा कि धरती माँ प्रकृति के सुंदर आकर्षण के साथ धन्य है। उन्होंने आगे कहा कि

लेखक सम्मिलन में बोलते हुए श्री नईम कश्मीरी

प्रकृति और जीवन का एक-दूसरे के साथ पूर्ण सामंजस्य है। ओड़िया की श्रीमती स्नेहलता महांति का कहना था कि वर्तमान प्रवृत्ति में सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं दिख रहा है। बाल साहित्य का भविष्य उज्ज्वल नहीं है।

पंजाबी के श्री सुखदेव मदपुरी ने कहा कि उन्हें बाल साहित्य लिखने की प्रेरणा लोरी, लोककथाएँ सुनकर मिली। शुरू में उन्होंने उर्दू भाषा में बाल साहित्य पढ़ना शुरू किया। अध्यापन के पेशे से जुड़े होने के कारण बच्चों के विचारों का बहुत सूक्ष्मता से अनुभव किया। श्री कृष्ण कुमार 'आशु' (राजस्थानी) का विश्वास था कि राजस्थान में बाल साहित्य के विकास का बहुत सारा

लेखक सम्मिलन में बोलते हुए श्री कार्तिक घोष

लेखक सम्मिलन में बोलते हुए श्री सेला गणपति

काम किया जाना शेष है। संस्कृत के श्री जनार्दन हेगड़े ने कहा कि उन्हें इस बात की चिंता है कि अन्य भारतीय भाषाओं के बाल साहित्य की अपेक्षा संस्कृत में बाल-साहित्य दिन-प्रतिदिन लुप्त होता जा रहा है। सिंधी के श्री जेठो लालवाणी का विचार था कि बाल साहित्य समाज, देश और भाषा का आधार होता है। यह समय का दर्पण होता है। संताली के श्री श्रीकांत सरेन का कहना था कि यदि एक लेखक सफल होना चाहता है तो उसे लंबी अवधि तक स्वयं को एक अच्छे लेखक के रूप में स्थापित करना होगा। तमिळ के श्री सेल्ला गणपति का विश्वास था कि बाल साहित्य तभी सफल होगा जब उसका सरोकार बच्चों की तरह होगा।

तेलुगु के श्री चोक्कपू वेंकटरमण ने कहा कि कहानी कहना बाल साहित्य की नींव होती है। वरिष्ठ लेखक बाल साहित्य की रचना कर रहे हैं, परंतु युवा लेखकों की इसमें कोई रुचि नहीं है। उर्दू की श्रीमती बानो सरताज ने कहा कि वे अपने गुरु श्रीपत राय के सिद्धांतों का पालन करती हैं, जिन्होंने उन्हें उर्दू-हिंदी में बाल लेखन की शिक्षा दी थी।

सम्मिलन का समापन क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबहुने के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

संगोष्ठी : बाल साहित्य लेखन : नई चुनौतियाँ

15 नवंबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह के दौरान 15 नवंबर 2015 को 'बाल साहित्य लेखन : नई चुनौतियाँ' विषय पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पुरस्कृत लेखकों, प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि बच्चों की अपनी एक काल्पनिक दुनिया होती है और कोई उनके विचारों की कल्पना नहीं कर सकता। बाल साहित्य एक अनूठी कला है और लेखक का रुख़ इस साहित्य में मायने रखता है।

अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि बाल साहित्य को लोकप्रिय बनाया जाना चाहिए, जिसके लिए युवा लेखकों को आगे बढ़कर यह चुनौती स्वीकार करनी

बाल साहित्य पर केंद्रित संगोष्ठी के प्रतिभागी गण

चाहिए। उन्होंने पढ़ी गई एक कविता 'एक बूँद की यात्रा' को स्मरण करते हुए साझा किया कि किस प्रकार इस कविता से उनका बाल साहित्य के प्रति झुकाव पैदा हुआ।

अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. भालचंद्र नेमाड़े इस सत्र के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने बाल साहित्य की रचना नहीं कर पाने की पीड़ा व्यक्त की। एक लेखक, जो बाल साहित्य की रचना करता है, उसे बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उद्घाटन सत्र में काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। बोडो के श्री आनो ब्रह्म ने अपनी कविताओं का पाठ किया। गुजराती की सुश्री रक्षा दवे ने अपनी 'कौन खाये कौन खेले', 'हे दिन दिन बजाता है' शीर्षक कविताओं का पाठ बाल सुलभ ढंग से किया। हिंदी के श्री प्रत्यूष गुलेरी ने 'यह मेरे पापा का घर है', 'चंदा मामा हमें बुलाना', 'हम थे भाई छोटे छोटे' शीर्षक कविताएँ प्रस्तुत कीं। कन्नड कवि श्री एच. एस. बयाकोड ने भी अपनी कविताओं का पाठ किया। कोंकणी भाषा की सुश्री नयना अदरकर ने 'हो पाखो' (कोंकणी में) 'माँ तुम्हारे बचपन में', 'इतवार', 'अद्भुत बातें' (हिंदी में) शीर्षक कविताओं का पाठ किया। ग्रामीण महाराष्ट्र से पधारे मराठी कवि श्री सैयद सलाहुद्दीन ने 'हमारे गाँव में थी एक हीरा रानी', 'ऐसा दिन आएगा क्या', 'बोल ना नानी?', 'एक गाँव पानी के वास्ते चाँद पर गया' शीर्षक कविताओं का पाठ किया।

सत्र का समापन अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणु मोहन भान के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

संगोष्ठी के दूसरे दिन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता मराठी के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री अनंत भावे ने की। असमिया के श्री रोतिंद्रनाथ गोस्वामी, हिंदी के श्री दिनेश चमोला 'शैलेश', मलयाळम् के श्री पल्लियारा श्रीधरन तथा मराठी के श्री महावीर जोंढले ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री अनंत माने के अनुसार बाल साहित्य लेखन को नेक और रचनात्मक पेशा नहीं माना जाता है, लेकिन उनका मानना था कि बाल साहित्य समाज के बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहलुओं में शामिल है। यह समाज की सांस्कृतिक कमी का संकेत एवं मानक होता है। श्री रोतिंद्रनाथ गोस्वामी ने कहा कि अरबी कहानियों को असमिया में अनुवाद कर बाल साहित्य प्रस्तुत किया गया। असमिया पत्रिकाओं ने बाल साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्री दिनेश चमोला का कहना था कि बच्चा एक विकसित देश का आधार होता है। उन्होंने आगे कहा कि साहित्य को बच्चे के जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करने वाला होना चाहिए। श्री पलियार श्रीधरन का कहना था कि एक लेखक बाल साहित्य लिखने से बचता है कि उसे वह मान्यता नहीं मिलती। महावीर जोंढले ने एक बच्चे में पढ़ने की आदत विकसित करने पर बल दिया। माता-पिता को अपने बच्चे के लिए अच्छी पढ़ने की सामग्री उपलब्ध कराना चाहिए। सत्र के अध्यक्ष श्री अनंत भावे ने एक बाल कविता बहुत बाल सुलभ ढंग से प्रस्तुत की और सत्र का समापन किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध बाङ्ला विद्वान श्री अमरेंद्र चक्रवर्ती ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री चक्रवर्ती ने कहा कि बच्चे हमारे देश की बड़ी धरोहर हैं। बच्चों के माता-पिता और संरक्षक बच्चों की रुचियों एवं आदतों के ज़िम्मेदार होते हैं। गुजराती के श्री हरेकृष्ण पाठक ने बाल साहित्य की चुनौतियाँ विषय पर अपने आलेख में मोबाइल एवं टेलीविज़न के बच्चों के मस्तिष्क पर बढ़ते प्रभाव के प्रति चिंता व्यक्त की। उन्होंने याद दिलाया कि गुजराती भाषा में गिजू भाई बाल साहित्य के पुरोधा हैं। मणिपुरी के श्री गुरुमायूम बिजय कुमार शर्मा ने अपने आलेख में कहा कि बच्चों के लिए लिखना एक लाभप्रद क्षेत्र है, लेकिन मुश्किल से कोई लेखक इस क्षेत्र में रुचि एवं गंभीरता दिखाता है। इस क्षेत्र में जागरूकता लाने के लिए शोध की ज़रूरत है।

तीसरा सत्र काव्य गोष्ठी का था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. सितांशु यशश्चंद्र ने की। काव्य गोष्ठी में कवियों ने कुछ बाल गीत / कविताएँ भी प्रस्तुत कीं। श्री जनक दवे (गुजराती), श्री ज़मीर अंसारी (कश्मीरी), श्रीमती किरण भांब्रे (कोंकणी), श्री दयानंद आसोलकर (मराठी), श्रीमती कमलजीत बीलन (पंजाबी), श्री दीनदयाल शर्मा (राजस्थानी), श्री इंद्रमोहन सिंह (संस्कृत), श्री हूंदराज बलवाणी (सिंधी), श्री टी. वेदांत सूर्या (तेलुगु) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

युवा पुरस्कार अर्पण समारोह

18 नवंबर 2015, नई दिल्ली

त्रिवेणी कला संगम के सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2015, साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा 23 भारतीय भाषाओं के युवा रचनाकारों को प्रदान किए गए। इस अवसर पर अपना वक्तव्य देते हुए विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि कोई भी पुरस्कार या राशि तो वापस की जा सकती है, किंतु प्राप्त सम्मान कभी वापस नहीं किया जा सकता। यह स्वयं द्वारा अर्जित होता है

युवा पुरस्कार विजेताओं के साथ मुख्य अतिथि श्री विश्वास पाटिल तथा अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सचिव

संभाषण करते हुए श्री विश्वास पाटिल

और समाज यानी 'लोक' की इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका होता है। लेखक का दायित्व केवल बेहतर लिखना ही होना चाहिए। पुरस्कृत युवा रचनाकारों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि मैं उनके लेखन में प्रौढ़ता पाता हूँ जो कि बहुत अच्छी बात है लेकिन फिर भी मैं चाहूँगा कि उनके लेखन में उनका युवापन भी प्रतिबिंबित हो।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात मराठी लेखक श्री विश्वास पाटिल ने कहा कि लेखक केवल मानवता की आवाज़ को अपने शब्दों में पिरोते हैं और इस तरह वो शब्दों के नायक हैं। उन्होंने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि लेखक हमेशा अपने मन की आवाज़ सुनता है और वही उसकी बड़ी ताक़त है। उन्होंने युवा रचनाकारों के आगे आने वाली चुनौतियों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि ऐसे में उन्हें अपने मन की ही आवाज़ सुननी चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष प्रो. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि साहित्य अकादेमी द्वारा दिए जाने वाले युवा पुरस्कार देश की भाषायी विविधता को प्रोत्साहित करने के लिए हैं। उन्होंने युवा लेखकों से अनुरोध किया कि वे आधुनिकता के साथ-साथ परंपराओं और स्थानीयता से भी अपने को जोड़े रहें। उन्होंने इन युवा रचनाकारों का साहित्य अकादेमी परिवार में स्वागत करते हुए कहा कि यह संबंध आगे चलकर हमारे भविष्य की लेखकीय ताक़त बनेगी।

सभी पुरस्कृत रचनाकारों को 50,000 रुपए की राशि और फलक प्रदान किए गए। पुरस्कृत रचनाकारों को साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. कंबार ने पुष्प मालाएँ पहनाई और अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन और पुरस्कृत रचनाकारों का परिचय अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव द्वारा प्रस्तुत किया गया।

पुरस्कृत रचनाकारों की सूची

मृदुल हालै (असमिया)
सुदीप चक्रवर्ती (बाङ्ला)
लेबेन लाल मोसाहारि (बोडो)
संदीप सूफ़ी (डोगरी)
हांसदा सौभेंद्र शेखर (अंग्रेज़ी)
राजेश वाणकर (गुजराती)
इंदिरा दांगी (हिंदी)
मौनेश बडिगेर (कन्नड)
श्रीनिशा एकनाथ नायक (कोंकणी)
नारायण झा (मैथिली)
आर्याम्बिका (मलयाळम्)
अंगोम सरिता देवी (मणिपुरी)
'वीरा' राठोड (मराठी)
सपन प्रधान (नेपाली)
सुजित कुमार पंडा (ओड़िया)
सिमरन धालीवाल (पंजाबी)
ऋतु प्रिया (राजस्थानी)
ऋषिराज जानी (संस्कृत)
सुचित्रा हांसदा (संताली)
मनोज चावला 'तन्हा' (सिंधी)
वीर पांडियान एस. (तमिऴ)
पासुनूरी रवीन्द्र (तेलुगु)
अमीर इमाम (उर्दू)

लेखक सम्मिलन

19 नवंबर 2015, नई दिल्ली

23 भाषाओं के पुरस्कृत युवा रचनाकारों ने अपने रचनात्मक अनुभवों को पाठकों के साथ साझा किया। मराठी में पुरस्कृत श्री वीरा आर. राठोड ने कहा कि इस पुरस्कार के बहाने शायद पहली बार एक बंजारे को अपने मन की बात रखने का अवसर मिला है। वर्ना जन्म से गुनहगार ठहराया गया समुदाय जो आज़ादी के बाद आज तक अपने होंठों को सीकर, दुखभरी सिसकियों को सीने में दफनाए व्यवस्था की मार सहते आया है, जिसे वे बेचारे अपना देश कहते हैं, इसी देश में जिन्हें आम भारतीय नागरिकों की तुलना में 'पाँच साल सोलह दिन' के अंतराल बाद केवल नाम की आज़ादी मिली है।

बोडो में पुरस्कृत श्री लेबेन लाल मसाहारी ने अपने वक्तव्य में कहा कि बोडो भाषा में लेखक बनना बहुत मुश्किल है। बहुत सारे कारणों में एक मुख्य कारण है असम में जितने लोग बोडो हैं उन लोगों के बीच में ही बोडो भाषा चलती है। दुःख की बात है कि हमारी भाषा में प्रकाशकों की कमी है।

हिंदी में पुरस्कृत श्रीमती इंदिरा दांगी ने कहा कि रचना को काग़ज़ पर उतारना सरल होता है, वो कठिन नहीं है, असली यातना है उसे जीना और उससे भी आगे, साहित्य बोध को अपना जीवनबोध बना लेना। चीज़ों को देखने का नज़रिया बहुत महत्त्व रखता है और प्रतिभा, अध्ययन, अभ्यास के बाद जो बात लेखक को लेखक बनाती है वो वही है जो भवानी प्रसाद मिश्र कहते हैं, 'कविता मुझको लिखती है', तो मैं कहूँगी कि मेरा सृजन मेरे व्यक्तित्व का अविभाज्य हिस्सा है।

मैथिली में पुरस्कृत श्री नारायण झा ने कहा कि ''जब-जब मेरे अंतर्मन को प्रतिरोध ने संवेदित किया है तब-तब मैं उसे कविता के रूप में व्यक्त करता आया हूँ। मेरी कविता विश्व के मानव समुदाय तक अपने रिश्ते

डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से पुरस्कार प्राप्त करते हुए सिमरन धालीवाल

को मज़बूत बनाना चाहती है। इस सारी जद्दोजहद में मेरी लामण (बंजारा) संस्कृति ने मुझे जो भाषा (बंजारा बोली), लोकसाहित्य, कला, सभ्यता की विरासत सौंपी है, उसके प्रति मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगा। मेरी कविताओं पर हुए इस संस्कृति संस्कार हमेशा मानवहित की माँग करनेवाले हैं।''

पंजाबी में पुरस्कृत श्री सिमरन धालीवाल ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'मेरी कहानियाँ उसी संवेदना की बात करती हैं, जो मनुष्य को उसके मनुष्य होने की अनुभूति कराती हैं...और शायद हाँ ये मेरे अंतर की कोमलता, संवेदनशीलता ही थी, जिसने मेरा नाता इन शब्दों से जोड़ दिया।'

राजस्थानी में पुरस्कृत श्रीमती ऋतुप्रिया ने कहा कि 'मेरी किताब *सपनां संजोवती हीरां* की अधिकांश कविताएँ नारी मन की ही व्यथा-कथा हैं, जिसका संघर्ष माँ की कोख से ही शुरू हो जाता है और वहाँ से यदि वह बच जाती है तो फिर बचपन में माँ-बाप, भाई तथा जवानी में पति और बुढ़ापे में अपने बच्चों के अधीन रहती है।'

संस्कृत में पुरस्कृत श्री ऋषिराज जानी ने कहा कि 'समुद्रे बुद्धस्य नेत्रे' आधुनिक संवेदनाओं का संग्रह है। उनमें वन बंधुओं की व्यथा, दलित-चेतना, उत्तर-आधुनिकतायुक्त संवेदनाएँ, भूमण्डलीकरण आदि की

अनुभूतियाँ शब्दबद्ध हुई हैं। आधुनिक संस्कृत में अनुआधुनिकतावादी हैं ये रचनाएँ—जिनका परिचय सांप्रत विश्व के साथ है।

सिंधी में पुरस्कृत श्री मनोज चावला 'तन्हा' ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'किसी पर विश्वास जताने के लिए नहीं, खुद में विश्वास पाने के लिए लिखता हूँ, कभी सच की तलाश में तो कभी उसी का सामना करने के लिए लिखता हूँ। लिखना एक आदत, एक तमन्ना, एक ज़ज्बा, एक ज़रूरत है, उदासी का संदेश है तो विश्वास की प्रकृति है, प्रेम है आनंद है तो एक दंड भी है, पर अपराध तो बिलकुल नहीं है! उसी बेबाक निरपराध के लिए लिखता हूँ।'

कन्नड में पुरस्कृत श्री मौनेश बाडीगर ने अपनी रचनाप्रक्रिया के बारे में विचारों और जीवन के अतिव्यापन को महत्त्वपूर्ण बताया।

डोगरी में पुरस्कृत श्री संदीप सूफ़ी ने कहा कि घर में व्याप्त साहित्यिक परिवेश के कारण ही कविता के प्रति मेरा रुझान दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की।

आविष्कार : युवा लेखक उत्सव

19 नवंबर 2015, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के सभागार में सायं 4.00 बजे प्रख्यात कथा लेखिका श्रीमती चंद्रकांता द्वारा 'युवा लेखक उत्सव' का उद्घाटन किया गया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि लेखक आशा की संधियाँ पकड़ता है यानी निराशा में आशा की किरण। लेकिन कोई भी समस्या को इकहरी भाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता। प्रत्येक रचनाकार कुछ न कुछ नया खोजता है और उसे अपनी सरल और सहज भाषा में व्यक्त करता है, यही उसकी शैली है। मुझे उम्मीद है कि अपनी शैली को बनाने में युवा रचनाकार कथ्य को दबने नहीं देंगे। युवा पीढ़ी पर बाज़ार से लेकर हर क्षेत्र में अनेक तरह के दबाव हैं, लेकिन साहित्य के केंद्र में हमेशा मनुष्य ही महत्त्वपूर्ण रहा है और रहेगा। उन्होंने सभी युवा रचनाकारों को बधाई देते हुए कहा कि वे हम वरिष्ठों द्वारा लिखने से छूट गए विषयों को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करेंगे।

अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि युवा पीढ़ी हम अग्रेज़ों द्वारा छोड़ी गई उन्हीं चीज़ों को ग्रहण करे जो उनके काम की हैं, क्योंकि वरिष्ठ लेखकों ने बहुत सी ऐसी चीज़ें छोड़ी हैं, जो उन्हें गुमराह कर सकती हैं। उन्होंने रचनाओं में भाव की महत्ता को बताते हुए कहा कि आज हमने भाव की जगह विचार को मुख्य जगह दे दी है, जबकि कोई भी रचना बिना भाव के स्पंदित नहीं हो सकती। उन्होंने आगे कहा कि आज का युवा वर्ग संतुलित है और उसे अपने स्वभाव को ही प्राथमिकता देनी चाहिए।

कार्यक्रम में श्री अलकेश कलिता (असमिया), श्रीमती प्रोमिला मन्हास (डोगरी), श्री अच्युतानंद मिश्र (हिंदी), श्री हारिश राशिद (कश्मीरी), श्री चोङथाम दीपू सिंह (मणिपुरी), श्री आन्पा मरांडी (संताली), श्रीमती अरुणा नारदाभाटला (तेलुगु) और श्री जितेंद्र परवाज़ (उर्दू) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

पासुनूरी रवींद्र का अभिनंदन करते हुए डॉ. चंद्रशेखर कंबार

बाएँ से दाएँ : डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, डॉ. चंद्रकांता एवं डॉ. चंद्रशेखर कंबार

धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने दिया और कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने किया।

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह के अवसर पर विशेषरूप से आयोजित दो दिवसीय 'युवा लेखक उत्सव' का 20 नवंबर 2015 को समापन हुआ। उत्सव में 23 भारतीय भाषाओं के युवा रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

दूसरे दिन पहले सत्र में प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक श्री राहुल सैनी की अध्यक्षता में कहानियाँ प्रस्तुत की गईं। कहानी प्रस्तुति से पहले कथ्य या विचार में किसको प्रमुखता देनी चाहिए पर विचार विमर्श भी हुआ। सभी का मानना था कि विचार की प्रमुखता ही भाषा के प्रकार को निर्धारित करती है और विचारों की विविधता से ही भाषा अपना स्वरूप बदलती है। श्री सुंदर चंद्र ठाकुर ने 'मनुष्य कुत्ता नहीं है' शीर्षक से अपनी कहानी प्रस्तुत की। ओड़िया के श्री शुभ्रांशु पंडा ने भी अपनी कहानी पढ़ी।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि श्री अरुण कमल ने की और श्री बुद्धेश्वर बोरो (बोडो), श्री कुलदीप कारिया (गुजराती), श्रीमती ज्योति चावला (हिंदी), श्री पांडुरंग गाँवकर (कोंकणी), श्री दीप नारायण विद्यार्थी (मैथिली), श्री वासुदेव पुलामी (नेपाली), श्री गुरसेवक लांबी (पंजाबी), श्री ओम नागर (राजस्थानी), परांबा श्रीयोगमाया (संस्कृत) तथा श्रीमती सुनीता मोहिनाणी (सिंधी) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री अरुण कमल ने कहा कि आज इस मंच पर विविध भाषाओं, विविध शिल्पों और विविध विषयों पर लिखी गई कविताएँ सुनने को मिली। भारतीय भाषाओं की इन श्रेष्ठ कविताओं को सुनकर मुझे बिलकुल निराशा नहीं हुई, बल्कि मैं ईर्ष्याग्रस्त हो गया हूँ कि क्या मैं भी इसी तरह लिखता रह पाऊँगा। अंत में उन्होंने अपनी कुछ कविताएँ सुनाईं।

भाषा सम्मान अर्पण समारोह

16 अगस्त 2015, कोयंबटूर

साहित्य अकादेमी द्वारा एक भव्य समारोह में भारतीय विद्याभवन, कोयंबटूर में 16 अगस्त 2015 को नौ साहित्यकारों को भाषा सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ. मीनाक्षी सुंदरम, आचार्य मुनीश्वर झा, डॉ. सत्यवती गिरि एवं डॉ. जसपाल सिंह को कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य में योगदान के लिए श्री चारुचंद्र पांडे एवं श्री मथुरादत्त मठपाल (संयुक्त रूप से) कुमायूनी भाषा में बहुमूल्य योगदान के लिए, श्री तगांग तकी एवं श्री अरक मेगू (संयुक्त रूप से) आदिभाषा के बहुमूल्य विकास के लिए तथा श्री वसंत निर्गुणे को भीली भाषा में बहुमूल्य योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए 'भाषा सम्मान' के बारे में बताया तथा अकादेमी द्वारा मध्यकालीन भारतीय साहित्य तथा ग़ैर-मान्यता प्राप्त लघु भाषाओं के संवर्धन के लिए किए जा रहे प्रयासों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भाषाओं का इतिहास मानव जाति के जन्म से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार इतिहास की किसी भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मानव इतिहास बताता है और अपनी बारी आने पर इतिहास भी मनुष्य का पुनर्सृजन करता है तथा मनुष्य के विकास के साथ ही भाषा का विकास भी होता है। विभिन्न भाषाओं में विद्वानों के योगदान को रेखांकित करने के लिए ही अकादेमी द्वारा 1996 में भाषा सम्मान की शुरुआत की गई थी। इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित विद्वान राष्ट्रीय गौरव के पात्र हैं।

इस अवसर पर डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रशस्ति पत्रों का पाठ किया तथा डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने सभी विद्वानों को भाषा सम्मान प्रदान किए। इसके पहले डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम् पुष्प गुच्छ और शॉल देकर सभी विजेताओं का अभिनंदन किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने

डॉ. चंद्रशेखर कंबार तथा डॉ. के. श्रीनिवासराव के साथ भाषा सम्मान पुरस्कार विजेता

कहा कि प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य हमारे वर्त्तमान और अतीत के बीच पुल का काम करता है, जबकि लघु भाषाएँ और अलिखित बोलियाँ बहुत से अदृष्ट पक्षों का उद्‌घाटन करती हैं।

श्रीमती सत्यवती गिरि ने बताया कि पूर्व-आधुनिक बाङ्‌ला साहित्य की विरासत से उनका परिचय उनके बाल्यकाल में हुआ। बाद में यूनिवर्सिटी में शिक्षा के समय मध्यकालीन और वाचिक साहित्य के बारे में मैंने जाना। बहुभाषाविद् आचार्य मुनीश्वर झा ने कहा कि वे मानते हैं कि अपनी अनुभूतियों के संप्रेषण के लिए मातृभाषा मौलिक और व्यावहारिक है, तथापि दूसरी भाषाओं का ज्ञान वक्ता को अपने विचार प्रकट करने में समृद्ध और सशक्त बनाता है। श्री आराक मेगू ने बताया कि कॉलेज जीवन में उन्हें जानकारी मिली कि उनके पूर्वज तिब्बत से कुछ महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ ले आए थे। उन दस्तावेज़ों ने ही उन्हें सांस्कृतिक साहित्यिक विरासत के अध्ययन के लिए प्रेरणा दी। के. मीनाक्षीसुदंरम् ने कहा कि तमिळ भाषा का गौरव अधिक समय तक प्रशासनिक सीमांकन में बँधा नहीं रहेगा। इसे नई ऊँचाइयाँ मिलेंगी। अपनी महान विरासत के कारण ही इसे सर्वाधिक प्राचीन जीवित आधुनिक भाषा के रूप में मान्यता मिली है।

कार्यक्रम के अंत में अकादेमी के तमिळ भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नाचिमुथु ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह

डॉ. एस.एल. भैरप्पा

साहित्य अकादेमी द्वारा 5 जुलाई 2015 को बेंगळूरु विश्वविद्यालय के सेमिनार हॉल में महत्तर सदस्यता प्रदान करने का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया तथा अकादेमी द्वारा भारतीय लेखकों को प्रदान की गई महत्तर सदस्यताओं का संक्षेप में परिचय प्रस्तुत किया। महत्तर सदस्यता अकादेमी की सामान्य परिषद् द्वारा चयनित भारतीय साहित्यकार को दिया जानेवाला अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान है और एक समय में 21 महत्तर सदस्य हो सकते हैं। 9 मार्च 2015 को अकादेमी के सामान्य परिषद् की हुई बैठक में भारतीय साहित्य की दो विभूतियों डॉ. एस. एल. भैरप्पा एवं डॉ. सी. नारायण रेड्डी के नाम का चयन इस शिखर सम्मान के लिए किया गया। अब अकादेमी द्वारा भारतीय साहित्य में बहुचर्चित उपन्यासकार डॉ. एस. एल. भैरप्पा को सर्वोच्च सम्मान देते हुए बहुत गर्व हो रहा है। तत्पश्चात् डॉ. राव ने अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम से 'संवाद' सत्र की अध्यक्षता करने के लिए आग्रह किया तथा वक्ताओं डॉ. इंद्रनाथ चौधुरी, डॉ. आर. गणेश, डॉ. अजक्कल गिरीश भट्ट, डॉ. प्रधान गुरुदत्त एवं प्रो. एस. रामास्वामी का स्वागत किया। सत्र के प्रथम वक्ता संस्कृत एवं कन्नड भाषा के विद्वान डॉ. आर. गणेश ने भैरप्पा के उत्कृष्ट लेखन के बारे में बात की जो उनके उपन्यासों की पहचान है। उन्होंने भैरप्पा को एक हांटिंग लेखक के रूप में याद करते हुए कहा कि उनका हर पात्र 'अग्नि दिव्य' से होकर गुज़रता है। वास्तविकता यह है कि उनके अधिकतर उपन्यासों का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

युवा आलोचक डॉ. अजक्कल गिरीश भट्ट ने भैरप्पा

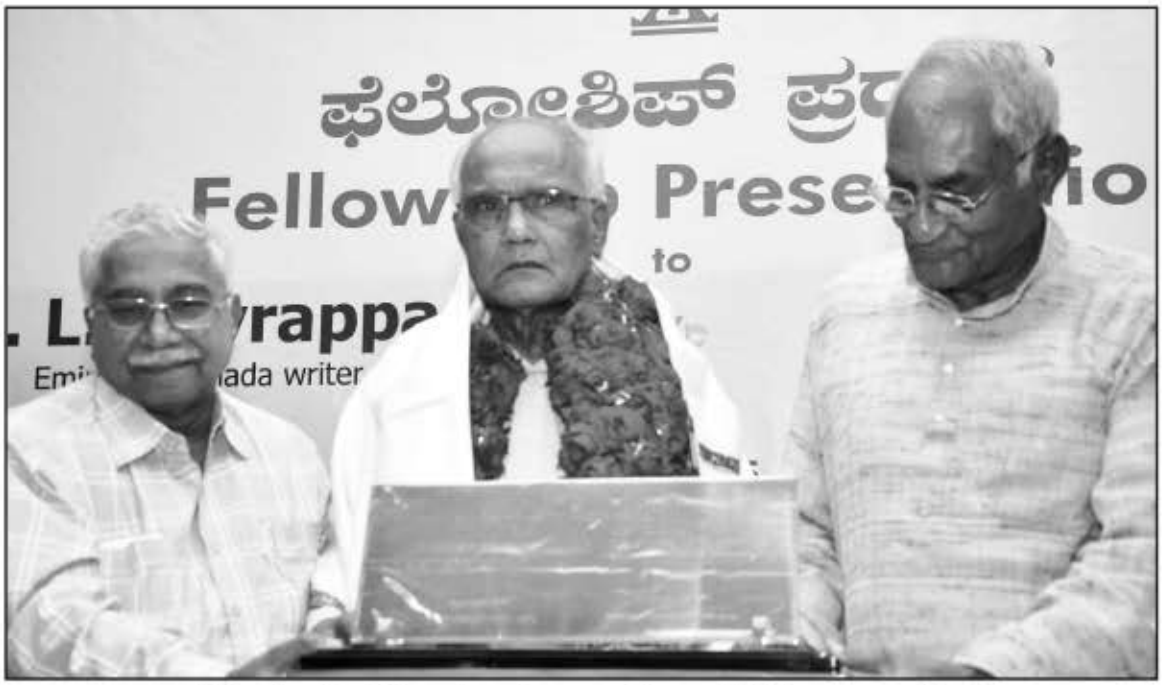

बाएँ से दाएँ : डॉ. चंद्रशेखर कंबार, डॉ. एस.एल. भैरप्पा एवं डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

को बहुप्रातिभ लेखक के रूप में रेखांकित किया और कहा कि उनकी मुलाक़ात बहुत से अकन्नड भाषी लेखकों से हुई है, जो भैरप्पा के लेखन से अनुवाद द्वारा परिचित थे।

अकादेमी के पूर्व सचिव एवं लब्धप्रतिष्ठ विद्वान प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने भैरप्पा को 'वर्तमान युग के लेजेंडरी लेखक' कहकर सम्मानित किया। उन्होंने भैरप्पा जी की तरफ़ देखते हुए कहा, "सर, कृपया हँसिए अन्यथा ख़ुशी के इस क्षण में आप बहुत गंभीर दिखते हैं।" प्रत्युत्तर में लेखक हल्का-सा मुस्कराए। प्रसिद्ध अनुवादक डॉ. प्रधान गुरुदत्त ने लेखक का उल्लेख अखिल भारतीय स्तर पर रवींद्रनाथ ठाकुर और बंकिमचंद्र चटर्जी के रूप में किया। उन्होंने भैरप्पा के यादगार उपन्यासों के बारे में बात की।

डॉ. एस. रामास्वामी, जिन्होंने भैरप्पा के विशाल उपन्यासों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है और जाने-माने अंग्रेज़ी शिक्षक हैं, ने पाँच दशक पहले लिखे उपन्यास वामस्वरिक्षा सहित लेखक के अन्य उपन्यासों के बारे में चर्चा की। उन्होंने आगे कहा कि ये गर्व की बात है कि अपने अनुवाद के द्वारा उनका नाम पूरे उत्तर भारत में भी जाना जाता है।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. नरहल्ली सुब्रह्मण्यम ने कहा कि कथा, भारतीय परंपरा की मुख्य विशेषता है और भैरप्पा उस परंपरा के सबसे अच्छे प्रतिनिधि हैं। उनके उपन्यासों ने हमारे जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाई है।

संवाद के बाद उनके शुभचिंतकों की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच श्री भैरप्पा को महत्तर सदस्यता प्रदान की गई।

अकादेमी के सचिव डॉ. श्रीनिवासराव ने प्रशस्ति पत्र पढ़ा, जिसमें श्री भैरप्पा को एक 'लिविंग लिटरेरी लेजेंड' कहा गया था। उन्होंने डॉ. भैरप्पा को भारत का सर्वश्रेष्ठ

बिकनेवाले लेखक का श्रेय दिया और कहा कि आपका कथासाहित्य, सौंदर्य, दर्शन और संगीत का एक उल्लेखनीय संयोजन है। तत्पश्चात् अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा महत्तर सदस्यता प्रदान की गई।

श्री तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भैरप्पा जी भली-भाँति इस सम्मान के योग्य हैं, जिसके लिए सारे भारत के पाठक एवं प्रशंसक यहाँ एकत्र हुए हैं। उन्होंने आगे विस्तार करते हुए उन्हें 'हिन्दी लेखक' बताया। उन्होंने अपने वक्तव्य को समाप्त करते हुए कहा कि भैरप्पा हमारे समय के विश्वस्तरीय उपन्यासकार हैं।

डॉ. भैरप्पा ने अपने स्वीकृति भाषण में अकादेमी, राष्ट्र की सर्वोच्च साहित्यिक संस्था और उसके अध्यक्ष के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने खुले दिल से अपने पाठकों एवं प्रशंसकों के प्रति आभार व्यक्त किया जो वहाँ एकत्र हुए थे। उन्होंने आगे कहा कि उनके भारतीय और पाश्चात्य दर्शन के अध्ययन ने भारतीय सांस्कृतिक, नैतिकता और मूल्यों की जड़ें खोजने में उनकी सहायता की है।

अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने समापन वक्तव्य में डॉ. एस. एल. भैरप्पा के साथ अपने लंबे जुड़ाव को साझा किया और बताया कि कैसे वे एक उत्कृष्ट लेखक के रूप में उभरने के लिए उनसे लाभान्वित हुए। उन्होंने आगे कहा कि यह वास्तव में कन्नड भाषियों के लिए एक गर्व का दिन है कि उनके पसंदीदा लेखक को साहित्य अकादेमी द्वारा बेंगळूरु में सम्मानित किया जा रहा है।

डॉ. सी. नारायण रेड्डी को महत्तर सदस्यता प्रदत्त

6 जुलाई 2015, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी द्वारा लब्धप्रतिष्ठ तेलुगु लेखक को महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह तथा संवाद कार्यक्रम का आयोजन 6 जुलाई 2015 को हैदराबाद के रवींद्र भारती के मुख्य सभागार में किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत करते हुए प्रशस्ति पत्र का पाठ किया। अकादेमी का प्रतिष्ठित महत्तर सदस्यता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने प्रदान किया तथा अध्यक्षीय वक्तव्य दिया।

डॉ. सी. नारायण रेड्डी ने महत्तर सदस्यता स्वीकार करते हुए अपने स्वीकृति भाषण का वाचन किया। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने संवाद कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रसिद्ध तेलुगु लेखक एवं आलोचक डॉ. एम. सुजाता रेड्डी, प्रो. आर. वसुनंदन एवं डॉ. वाई. नित्यानंद राव ने संवाद कार्यक्रम में भाग लिया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रतिभागियों का परिचय भी दिया। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा भारत के किसी उत्कृष्ट लेखक को प्रदान की जानेवाली महत्तर सदस्यता के उद्देश्य का संक्षिप्त परिचय दिया।

स्वागत भाषण के बाद सचिव महोदय ने प्रशस्ति पत्र का पाठ किया, जिसमें डॉ. सी. नारायण रेड्डी का जीवन परिचय तथा उनकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों का वर्णन था। उन्होंने डॉ. रेड्डी को वास्तव में एक बहुमुखी प्रतिभा का व्यक्ति बताया, जिनकी रचनात्मक प्रतिभा मानवीय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों तक फैली हुई है। उन्होंने एक शिक्षाविद्, एक प्रशासक, संगीतमय भाषा की दक्षता के साथ एक लोकप्रिय गीतकार, एक प्रभावशाली

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव तथा अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (बाएँ) से
महत्तर सदस्यता ग्रहण करते हुए डॉ. सी. नारायण रेड्डी

वक्ता और तेलुगु साहित्य के एक श्रेष्ठ लेखक के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। तत्पश्चात् डॉ. राव ने अकादेमी के अध्यक्ष से आग्रह किया कि वे डॉ. सी. नारायण रेड्डी को महत्तर सदस्यता प्रदान करें।

अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने डॉ. सी. नारायण रेड्डी को एक उत्कीर्ण ताँबे की पट्टिका का स्मृति चिह्न और शॉल पेश कर महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया तथा अध्यक्षीय व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि डॉ. रेड्डी एक महान कवि हैं, जिन्होंने तेलुगु साहित्य की दुनिया की परिणति के लिए प्रगतिशील मानवतावाद का सहारा लिया।

डॉ. सी. नारायण रेड्डी ने महत्तर सदस्यता प्राप्त करने के पश्चात् अकादेमी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा अपने स्वीकृति भाषण में उन्होंने कहा कि वास्तव में यहाँ मंच पर बिखरी हुई साहित्यिक ख़ुशबू के साथ यह एक आनंदमय अवसर है। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित हर कार्यक्रम अपनी धारणा और प्रदर्शन के लिए विशिष्ट होता है। मैं नियमित रूप से अकादेमी की संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और पुरस्कार समारोहों में सम्मिलित होता रहा हूँ। मैं उस दिन को याद करता हूँ जब मुझे मेरे कविता–संग्रह *मंतालू मानवुडु* के लिए अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। मैं जीवन भर की उपलब्धि की मान्यता के रूप में आज के महत्तर सदस्यता की प्रस्तुति का सम्मान करता हूँ। मैं हर एक को और अकादेमी से संबंधित हर व्यक्ति का ईमानदारी से धन्यवाद करने का अवसर लेना चाहूँगा। उन्होंने कहा कि कुछ शोधकर्ताओं ने मेरे लेखन में अठारह विधाओं की पहचान की है। मूलतः मैं एक कवि हूँ। मैं अपनी हर साँस में कविता कहता हूँ। उन्होंने अपनी कविता की चार पंक्तियों को उद्धृत कर अपने भाषण का समापन किया। महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह प्रस्तुति के पश्चात् 'संवाद' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 'संवाद' कार्यक्रम

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

की अध्यक्षता एन. गोपी ने की। श्री गोपी ने डॉ. सी. नारायण रेड्डी, डॉ. आर. वसुनंदन एवं डॉ. वाई. नित्यानंद राव लब्धप्रतिष्ठ तेलुगु लेखकों एवं आलोचकों ने डॉ. रेड्डी की लेखन की अनूठी शैली, बहुमुखी व्यक्तित्व, तेलुगु साहित्य में अमूल्य योगदान के लिए विशेषरूप से एवं भारतीय साहित्य के व्यापक संदर्भ में मूल्यांकन किया। कार्यक्रम का समापन सचिव, साहित्य अकादेमी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद तथा सम्मेलन

'पश्चिम-क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्यिक पत्रिकाओं का योगदान' पर परिसंवाद

20 अप्रैल 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा पश्चिम-क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्यिक पत्रिकाओं का योगदान विषय पर 20 अप्रैल 2015 को अकादेमी के सभागार में आयोजन किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि परिसंवाद के विषय को पश्चिम क्षेत्रीय बोर्ड द्वारा तय किया गया था। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय भाषाओं में साहित्यिक पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन 1960 के बाद किया जाने लगा। इन सभी साहित्यिक पत्रिकाओं की साहित्यिक परंपरा और विद्रोह के संदर्भ में अध्ययन की जरूरत है।

अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. भालचंद्र नेमाड़े ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि मराठी, बाङ्ला, तमिळ, असमिया और मलयाळम् में साहित्यिक पत्रिकाओं की उल्लेखनीय परंपरा है। आगे कहा कि हाल ही में वे इसी विषय पर प. बंगाल के गाँव में आयोजित एक संगोष्ठी में सम्मिलित हुए थे और उन्हें ज्ञात हुआ कि बाङ्ला में 400 से अधिक साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है। किसी विशेष भाषा में साहित्यिक पत्रिकाएँ साहित्यिक संस्कृति को स्थापित करने में बहुत ही सक्रिय हैं।

अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हलर्नकर ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि साहित्यिक पत्रिकाओं से उन्होंने अपना लेखन आरंभ किया। बहुत से लेखक अपने आलेख पत्रिकाओं में प्रकाशित कराते हैं, फिर उन आलेख का संग्रह पुस्तक के रूप में प्रकाशित होता है। हमारा विशेष ध्यान साहित्य की गुणवत्ता पर होना चाहिए। क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री गोकुल दास प्रभु ने की। गुजराती के श्री दीपक दोषी, कोंकणी के श्री संदेश प्रभुदेसाई, मराठी की सुश्री अरुणा दुभाषी एवं सिंधी के श्री बंसी खूबचंदाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री प्रभु ने कहा कि साहित्यिक पत्रिकाएँ एक लेखक के कैरियर में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। श्री दीपक दोषी ने कहा कि कुछ साहित्यिक पत्रिकाएँ उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं जितनी कि पुस्तक।

बाएँ से दाएँ : श्री तानाजी हलर्नकर, डॉ. के श्रीनिवासराव, प्रो. भालचंद्र नेमाड़े, डॉ. कृष्णा किंबहुने

महानगरी जीवन में साहित्यिक पत्रिकाओं की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। गुजराती के साहित्यिक आंदोलनों में साहित्यिक पत्रिकाओं ने बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संदेश प्रभुदेसाई ने कहा कि कोंकणी भाषा में साहित्यिक पत्रिकाओं की संख्या का निर्धारण करना बहुत मुश्किल है, क्योंकि कोंकणी भाषा और भौगोलिकता के अनुरूप पाँच विभिन्न लिपियों में लिखी जाती है।

सुश्री अरुणा दुभाषी ने कहा कि साहित्यिक पत्रिकाएँ दूसरी पत्रिकाओं से भिन्न होती हैं। उन्होंने साहित्यिक पत्रिकाओं के उदाहरण देते हुए कहा कि कुछ पत्रिकाएँ केवल साहित्य को बढ़ावा दे रही हैं। साहित्यिक पत्रिकाओं ने साहित्य में कई महत्त्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की हैं। उन्होंने *रंगभूमि* पत्रिका का उदाहरण देते हुए कहा कि इस पत्रिका ने रंगमंच की आलोचना का समावेश किया। 1960 के पूर्व की साहित्यिक पत्रिकाओं ने कहानियों के फघर्म को प्रोत्साहित किया, जिसे बाद में शोहरत मिली। इन सभी साहित्यिक पत्रिकाओं ने साहित्यिक गतिविधियों को जीवंत बना दिया और लेखन शैली को आगे ले आईं।

श्री बंसी ख़ूबचंदाणी ने कहा कि सिंधी की पहली साहित्यिक पत्रिका *सरस्वती* थी, जो 1890 में प्रकाशित हुई। अधिकतर साहित्यिक पत्रिकाएँ पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित होती थीं। *जोध* साहित्यिक पत्रिका ने अपने प्रकाशन के 50 वर्ष पूर्ण किए। सिंधी की साहित्यिक पत्रिकाओं ने पूरे भारत में सिंधी साहित्य को तथा साहित्य के द्वारा संस्कृति को बढ़ावा दिया। सिंधी की साहित्यिक पत्रिकाओं ने सिंधी भाषा के विकास में सहयोग दिया। इन पत्रिकाओं ने सिंधी पाठकों की वृद्धि की। उन्होंने साहित्य अकादेमी की सिंधी भाषा को मान्यता प्रदान करने के लिए सराहना की।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षत श्री दिलीप झावेरी ने की। गुजराती के किशोर व्यास, कोंकणी के श्री दिलीप बोरकर एवं मराठी के श्री राम जगताप ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री झावेरी ने कहा कि मराठी की साहित्यिक पत्रिकाओं ने हमारी ख़ुद की पहचान को प्रतिबिंबित किया है। इन पत्रिकाओं ने रचनात्मक साहित्य में विविधिता को बनाए रखने में मदद की है। इन पत्रिकाओं ने निरंतर साहित्य का भाषांतर प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

श्री किशोर व्यास ने कहा कि गुजराती भाषा में 80 से अधिक साहित्यिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं और उनमें लगभग साहित्य की सभी विधाओं का समावेश होता है जैसे, गद्य, कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास, नाटक एवं आलोचना। पत्रिकाओं के संपादकों ने लेखकों की भीड़ में नई प्रतिभाओं को पहचानने का प्रयास किया है। उन्होंने आगे कहा कि साहित्यिक पत्रिकाएँ लेखकों के बिना नहीं चल सकतीं तथा लेखक भी अपनी पहचान साहित्यिक पत्रिका के बिना नहीं बना सकता।

बिम्ब पत्रिका के संपादक श्री दिलीप बोरकर ने कहा कि एक छोटी सी साहित्यिक पत्रिका निकालने के लिए भी वित्तीय संघर्ष करना पड़ता है। श्री राम जगताप ने मराठी में साहित्यिक पत्रिका के इतिहास पर बात की और कहा कि लगभग हर काल में साहित्यिक पत्रिकाओं ने मराठी साहित्यिक गतिविधि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अंत में क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबहुने ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'बोडो कविता पर आलोचना' विषयक परिसंवाद

10 जुलाई 2015, करबी अंगलांग, असम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा 'बोडो कविता पर आलोचना' विषयक परिसंवाद तथा बोडो कवि सम्मेलन का आयोजन बोडो साहित्य सभा के सहयोग से आनंदराम मसाहारी भवन, करबी अंगलांग, असम में 10 जुलाई 2015 को किया गया।

साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेमानंद मसाहारी ने परिसंवाद का उद्घाटन किया और कहा कि हालाँकि बोडो के कई बड़े लेखक एवं प्रकाशक हैं इसके बावजूद बोडो के पाठक काफ़ी कम हैं।

बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री भूपेन नार्ज़ारी ने बीज वक्तव्य दिया। अपने वक्तव्य में श्री नार्ज़ारी ने बोडो के समस्त साहित्यकारों का आह्वान किया कि वे आगे आएँ और बोडो साहित्य व भाषा के विकास में अपना योगदान दें। उन्होंने कहा कि यदि हम लोग सामूहिक रूप से बोडो कविताओं, कहानियों, नाटक, बाल साहित्य आदि पर संगोष्ठियाँ करें तभी बोडो साहित्य विश्व की अन्य समृद्ध भाषाओं के साहित्य से मुक़ाबला कर सकेगी। उनके अनुसार कविता भीतर की अभिव्यक्ति है, जो उपयुक्त शब्द, लयबद्ध शैली, प्रतीकात्मक चिह्न आदि के साथ प्रकट होती है।

बोडो के प्रसिद्ध विद्वान श्री अनिल कुमार बोरो विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने एक सफल कविता की रचना प्रक्रिया के बारे में चर्चा की। उनके अनुसार एक कवि भी कविता का आलोचक हो सकता है। उन्होंने आगे कहा कि कविताओं की निष्पक्ष सशक्त आलोचना होनी चाहिए। बोडो कविता की आलोचना श्री ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म से शुरू होती है, जिसे कई आधुनिक कवियों ने आगे बढ़ाया है। आजकल 'गद्य कविता' जो कि अकविता की एक शैली है, अंतःअभिव्यक्ति का नया रुझान है। श्री बोरो ने अपनी कुछ नई कविताओं का भी पाठ किया।

श्री अनिल कुमार बोरो ने श्री लंकेश्वर हेनरी को एक बोडो कविता की आलोचना प्रस्तुत करने का आग्रह किया। श्री लंकेश्वर ने यू.जी. ब्रह्म की कविता पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि कविता मूलतः बोडो समाज की मानवीय समस्याओं को रेखांकित करती है। श्री ब्रह्म अपनी कविताओं में प्रतीकात्मक चिह्नों जैसे सूर्य, काला चाँद आदि का प्रयोग करते हैं। उन्होंने कुछ कविताएँ बाल साहित्य पर भी लिखी हैं। विदित हो कि श्री ब्रह्म को 2014 में अकादेमी द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है।

बोडो के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री विजय बगलरी ने कविता-संग्रह *अतैनी ओकाकर* (स्टोन मून) पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि कविता का महत्त्व कविताओं की नई खोज पर निर्भर करता है।

समकालीन बोडो कवि श्री ऋतुराज बसुमतारी ने श्री प्रफुल्ल बसुमतारी के कविता-संग्रह *मैदंगश्री* पर बात की। उन्होंने कहा कि बोडो रूमानियत का सार मनोरंजन लाहरी के काव्यगत लेखन में निहित है। उन्होंने इस बात को भी दोहराया कि श्री ईशान मुसहरी बोडो कविता के क्षेत्र में क्रांति लाए। उन्होंने कहा कि प्रफुल्ल बसुमतारी की कविताएँ किसी हद तक मोनोरंजन लाहरी की कविताओं के समान हैं। उन्होंने बताया कि गत 27 वर्षों में श्री प्रफुल्ल ने कोई कविता नहीं कही। यदि उनका कविता लेखन जारी रहता तो वे संभवतः बोडो के सर्वश्रेष्ठ कवि होते। अंत में श्री तोरण बोरो के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

'आज की बोडो कविता' पर परिसंवाद

11 जुलाई 2015, उदलगुड़ी, असम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा थुनलई बाथोन एवं बोडो विभाग, रावता कॉलेज के सहयोग से 11 जुलाई 2015 को 'आज की बोडो कविता' शीर्षक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. देबकांत रामचियारी ने की। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए बोडो साहित्य एवं भाषा के विकास के लिए साहित्य अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेमानंद मसाहारी ने अपने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी

द्वारा किए जा रहे बोडो भाषा के कार्यक्रमों की जानकारी दी।

गुवाहाटी विश्वविद्यालय के लोक साहित्य विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल बोरो ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने बोडो कविता के बारे में विस्तार से बात की। उन्होंने कुछ समकालीन कवियों की कविताओं की विस्तार से चर्चा की, जो आधुनिक बोडो कविता में नए 'वाद' का प्रयोग कर रहे हैं। श्री गोपीनाथ ब्रह्म ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता उदलगुड़ी कॉलेज के श्री नरेश्वर नार्ज़ारी ने की। डॉ. सुनील फुकन बसुमतारी ने 'बोडो कविता में आधुनिकता एवं उत्तर आधुनिकता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। बोडोलैंड यूनिवर्सिटी के अंग्रेज़ी विभाग के श्री रुस्तम ब्रह्म ने 'बोडो कविता में अस्तित्वाद' पर आलेख प्रस्तुत किया। के. बी. आर. कॉलेज ओरंग के डॉ. चीनन नार्ज़ारी ने 'आधुनिक बोडो कविता में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र का अंतिम आलेख उदलगुड़ी कॉलेज की श्रीमती रश्मि ब्रह्म द्वारा 'आधुनिक बोडो कविता में नारीवाद' विषय पर प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कहा कि किस प्रकार महिलाएँ अपने लेखन द्वारा महिलाओं को सशक्त कर रही हैं। समस्त आलेखों की प्रस्तुति के बाद अध्यक्ष ने समापन वक्तव्य दिया और पढ़े गए आलेखों की सराहना की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. सुनील फुकन बसुमतारी ने की। दूसरे सत्र का पहला आलेख श्री विजय बगलरी द्वारा 'आधुनिक बोडो कविता में भावनावाद' विषय पर प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कहा कि किस प्रकार बोडो लेखक अपने लेखन द्वारा पाठकों की भावनाओं को रेखांकित कर रहे हैं। पांडु कॉलेज के श्री प्रणव ज्योति नार्ज़ारी ने 'बोडो कविता में विरचनावाद' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. नरेश्वर नार्ज़ारी ने 'आधुनिक कविता में लोकतत्त्व' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। एल.ओ.के.डी. कॉलेज के डॉ. तुलन मसाहारी ने भी 'शुद्ध कविता' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. हेम बरुआ तथा एच. एस. स्कूल के प्राचार्य श्री गोपीनाथ ब्रह्म ने 'अकविता' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र के अध्यक्ष ने पढ़े गए आलेखों पर अपने विचार व्यक्त किए तथा वक्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

आदिवासी भाषा सम्मेलन

11-12 जुलाई 2015, बारिपदा (ओड़िशा)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा दो दिवसीय 'आदिवासी भाषा सम्मेलन' 11-12 जुलाई 2015 को बारिपदा (ओड़िशा) में आयोजित किया गया।

एकेडमी ऑफ़ ट्राइबल लैंग्वेज एंड कल्चर, ओड़िशा के पूर्व निदेशक प्रो. खगेश्वर महापात्र ने उद्घाटन वक्तव्य में संताली भाषा के विकास और प्रगति के बारे में बात करते हुए हो, मुंडारी, खड़िया, कुई एवं कुड़ुख आदि अन्य आदिवासी भाषाओं के वर्तमान परिदृश्य के बारे में बताया। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने सत्र की अध्यक्षता की और प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. विनोदचंद्र नायक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. नायक ने अपने वक्तव्य में संताली, हो एवं मुंडारी की पूर्व एवं वर्तमान स्थिति की चर्चा करते हुए खड़िया, कुइ एवं कुड़ुख के उत्थान की भी बात की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री गंगाधर हांसदा ने इस प्रकार के साहित्यिक आयोजनों की महत्ता पर प्रकाश डाला। अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के सदस्य श्री मदन मोहन सोरेन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री जदुमणि बेसरा ने की। संताली भाषा के मांगात मुर्मू ने अपनी कहानी 'बुदैयाह

बाएँ से दाएँ : श्री मदन मोहन सोरेन, श्री विनोद चंद्र नायक, श्री खगेश्वर महापात्र,
श्री गंगाधर हांसदा तथा डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश

गिरा' का पाठ किया, जबकि हो भाषा के श्री जयपाल सिंह नायक ने 'कंक गुरु' कहानी का पाठ किया। मुंडारी भाषा के श्री श्रीधर सिंह ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

रायरंगपुर कॉलेज के अंग्रेज़ी विभाग के श्री सुनील जेना ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की। हो भाषा के प्रसिद्ध कवि श्री दीनबंधु कंदंकेल ने अपनी कविताओं का पाठ किया जिसमें अपनी जाति, समुदाय और भाषाओं के उत्थान के लिए आमजन से अपील थी। मुंडारी भाषा के कहानीकार श्री बीरबल सिंह ने अपनी एक कहानी का पाठ किया। संताली भाषा के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री गोविंद च. माझी ने अपनी कविताओं का पाठ किया, जिसे श्रोताओं द्वारा सराहा गया।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता डी. डी. कॉलेज क्योंझर के डॉ. कृष्ण च. नायक ने की। प्रसिद्ध मुंडारी कहानीकार श्री नंदलाल सिंह ने अपनी कहानी का पाठ किया। कुड़ुख भाषा के प्रसिद्ध कवि श्री बासुदेव खालखो ने अपनी कविताओं का पाठ किया। उनकी कविताओं में मानवता का संदेश और अपनी मातृभाषा के प्रति स्नेह था।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता एम. पी. सी. कॉलेज के ओड़िया विभाग की डॉ. दमयंती बेसरा ने की। प्रसिद्ध कुड़ुख लेखक श्री मंगला खालखो ने अपनी कहानी तथा कुई भाषा के प्रसिद्ध कहानीकार श्री दीनबंधु कन्हार ने अपनी कहानी प्रस्तुत की। खड़िया भाषा के कवि एवं राँची विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के प्रो. मेरी एस. सोरेंग ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

पाँचवें सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध ओड़िया निबंधकार डॉ. राजकिशोर नायक ने की। संताली भाषा के प्रसिद्ध कवि श्री दाशरथि सोरेन ने अपनी कविताओं का पाठ किया। प्रसिद्ध कुई कवि श्री नीरदचंद्र कन्हार ने अपनी कविताओं का पाठ किया। प्रसिद्ध हो कहानीकार श्री रवींद्रनाथ कालुंदिया ने अपनी कहानी 'निमिर गपा कटेया कावाह सिंगार' प्रस्तुत की।

कुड़ुख भाषा के आलोचक श्री महादेव टोप्पो ने समापन वक्तव्य दिया। श्री माधब हांसदा एवं शरत च. नायक इस सत्र के वक्ता थे। श्री शरत च. नायक ने इस प्रकार के आयोजन के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया।

'बी. जयंत कुमार शर्मा के जीवन और कृतित्व' पर परिसंवाद

16 जुलाई 2015, इंफ़ाल

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा बी. जयंत कुमार शर्मा के जीवन और कृतित्व पर परिसंवाद का आयोजन मणिपुरी विभाग, एन. जी. कॉलेज के सहयोग से 16 जुलाई 2015 को कॉलेज परिसर में किया गया।

अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा बी. जयंत कुमार शर्मा की उपलब्धियों को संक्षेप में रेखांकित किया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह परिसंवाद में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। एन. जी. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. वाई. ममोन देवी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। डॉ. एन. अचोबा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. एन. खगेंद्र सिंह ने की। श्री जी. विजय कुमार शर्मा ने अपने आलेख में बी. जयंत कुमार शर्मा के जीवन के अहम पहलुओं को रेखांकित करते हुए कहा कि उनका पहला प्रेम संगीत था तथा किस प्रकार अपने समकालीन गायकों एन. पहाड़ी एवं तोम्बीसाना शर्मा के साथ संगीत के लिए जुनून पैदा किया। प्रोफ़ेसर रतन कुमार ने अपने आलेख में बी. जयंत कुमार के अनुवादों के बारे में बात करते हुए कहा कि बी. जयंत कुमार के अनुवाद कार्य का अपना सौंदर्य है जो मूल साहित्य के समानांतर होता है। डॉ. के. शांताबाला देवी ने अपने आलेख में बी. जयंत कुमार शर्मा के प्रकाशित एवं अप्रकाशित बाल साहित्य के बारे में बात की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री ख. प्रकाश सिंह ने की। श्री फ. इबोयमा शर्मा ने बी. जयंत कुमार शर्मा के गीतों में काव्य सौंदर्य के बारे में बात की। उन्होंने श्री शर्मा के साथ एक गायक के रूप में अपने जुड़ाव के बारे में भी बताया। श्रीमती के. रश्मि देवी ने अपने आलेख में कुछ राष्ट्रों के राष्ट्रगीत के बारे में बात करते हुए बी. जयंत कुमार के देशभक्ति गीतों के बारे में बात की। डॉ. एल. सी. मेमी ने कहा कि मुख्यरूप से एक गीतकार होने के बावजूद बी. जयंत कुमार शर्मा ने मणिपुर के वाचिक साहित्य के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया है।

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए श्री रमाकांत रथ

बामाचरण मित्र जन्मशती संगोष्ठी

19 जुलाई 2015, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा बामाचरण मित्र जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 19 जुलाई 2015 को स्टेट आर्काइव कॉन्फ्रेंस हॉल, भुवनेश्वर में किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया।

लब्धप्रतिष्ठ कवि एवं अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री रमाकांत रथ ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कहा कि बामाचरण मित्र अद्भुत शैली के लेखक थे। उनकी

कहानियाँ पाठकों के लिए रोचक होती हैं। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने बामाचरण मित्र का परिचय देते हुए कहा कि श्री मित्र शोहरत के प्रति संकोची स्वभाव के थे और उनकी कहानियों पर उतनी चर्चा नहीं हुई, जितनी होनी चाहिए थी। वे मानवतावादी थे, जिनके पास उच्च मानवीय मूल्य थे। उनके जीवन का यह पक्ष उनके लेखन में भी प्रतिबिंबित होता है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री रामचंद्र बेहरा ने की तथा कहा कि बामाचरण मित्र ने उपेक्षित लोगों के जीवन पर प्रचुर मात्रा में कहानियाँ लिखी हैं। डॉ. विजयानंद सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में फणींद्र भूषण नंदा ने 'कहानीकार एवं रचनाकार बामाचरण'; श्री खिरोदचंद्र बेहरा ने 'सामाजिक कथाकार एवं बामाचरण' तथा श्री पवित्र पाणिग्रही ने 'बामाचरण के साहित्य में भारतीय परंपरा और मूल्यबोध' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रोफ़ेसर दाशरथि दास ने सत्र की अध्यक्षता की।

दूसरे सत्र में श्री बाबाजी च. पटनायक ने 'बामाचरण के साहित्य में मानव चरित्र', श्री वांछानिधि दास ने 'बामाचरणनान का जीवन और उनका समय', श्रीमती भाग्यलिपि मल्ल ने 'चंद्र एवं चंपा की दार्शनिकता' एवं श्री प्रेमानंद महापात्र ने 'बामाचरण के साहित्य में समाज का चित्रण' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्राध्यक्ष डॉ. जतिन नायक ने कहा कि मित्र का लेखन एक खिड़की की तरह है, जिससे हम बारीकी से पूरी दुनिया को देख सकते हैं। समापन वक्तव्य देते हुए श्री प्रतिबास राउतराय ने बामाचरण के साथ बिताए अपने निजी अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम में डॉ. सीताकांत महापात्र, श्री राजेन्द्र किशोर पंडा, श्री प्रमोद महांति, श्री दाश बेनहूर, श्रीमती ममता दास, श्री सहदेव साहू, श्री अध्यापक बिश्वरंजन के अतिरिक्त और भी गणमान्य उपस्थित थे।

वंदाल साहित्य पर परिसंवाद

22 जुलाई 2015, तंजावुर

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा 'वंदाल साहित्य' पर 22 जुलाई 2015 को भरत आर्ट्स एवं साइंस कॉलेज, तंजावुर में परिसंवाद का आयोजन किया गया। अकादेमी के चेन्नै कार्यालय प्रभारी श्री के. पी. राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए वंदाल साहित्य एवं परिसंवाद की महत्ता पर प्रकाश डाला। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. के. नाचिमुथु ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में क्षेत्रीय साहित्य और बोलियों की प्रासंगिकता के बारे में बात की। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि वंदाल साहित्य आम लोगों का लेखन है तथा संगम काल की एनथिनई वर्गीकरण पर आधारित है। *कनैयाझी* के संपादक श्री एम. राजेंद्र ने भाषा की अवियोज्यता, क्षेत्र और तमिळ साहित्य के बारे में बात की।

भरत एजुकेशन ट्रस्ट की अध्यक्ष सुश्री पुनीता गणेशन ने कॉलेज परिसर में अकादेमी द्वारा इस आयोजन के प्रति आभार व्यक्त किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री व्याकुलन ने की तथा श्री सी. एम. मुथु के लेखन के बारे में बात की। श्री एम. गोविन्द राजू, के. जवाहर एवं ए. पी. भलैयां ने क्रमशः 'सा. सुभाषचंद्र बोस का सृजन' 'सोलाई सुन्दरपेरुमल की कृतियाँ' एवं 'वाइमइनाथन का सृजन' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता एन. ज्ञानधीरवियम ने की तथा सु. तमिलसेलवी की कृतियों के बारे में बात की। 'उत्तमचोलन का सृजन' विषय पर एस. माधवन ने आलेख प्रस्तुत किया तथा डॉ. एस. कल्पना का आलेख 'पवई चंद्रन की कृतियाँ' श्रीमती सुधा द्वारा प्रस्तुत किया गया।

समाहार वक्तव्य डॉ. के. नाचिमुथु ने दिया तथा श्री लेनिन ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'कन्नड साहित्य एवं देशीयता' पर संगोष्ठी

6-7 अगस्त 2015, कलबुर्गी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु एवं केंद्रीय विश्वविश्वविद्यालय, कर्नाटक के कन्नड अध्ययन विभाग के संयुक्त तत्त्वाधान में 'कन्नड साहित्य एवं देशीयता' पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 6-7 अगस्त 2015 को कर्नाटक विश्वविद्यालय परिसर, कलबुर्गी में किया गया।

उद्घाटन सत्र में बेंगळूरु कार्यालय के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों, अतिथियों एवं दर्शकों का स्वागत करते हुए कन्नड साहित्य के विकास के लिए साहित्य अकादेमी द्वारा की जा रही पहलक़दमियों की संक्षेप में चर्चा की। अपने आरंभिक वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. विक्रम वीसाजी ने साहित्य तथा संस्कृति में क्षेत्रवाद की पारस्परिकता पर बात की तथा संगोष्ठी की विषयवस्तु से सभी को अवगत कराया। उद्घाटन सत्र में प्रसिद्ध कन्नड लेखक प्रो. गिराड्डी गोविंदराज ने कन्नड साहित्य में क्षेत्रीय विशिष्टता की महत्ता एवं प्रासंगिकता के बारे में बात की, साथ ही इस बात का भी विश्लेषण किया कि अन्य साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा भाषाई रूढ़ियों को आत्मसात करने से देशीयता को प्रतिस्थापित करने की बजाय उसे और अधिक बढ़ावा मिलेगा, केंद्रीय विश्वविद्यालय, कर्नाटक के कुलपति प्रो. एच.एम. महेशवारिया ने सत्र की अध्यक्षता की तथा विद्वानों एवं सामान्य जन से समान रूप से स्थानीय समुदायों तथा देश के सुधार हेतु देशीय विज्ञान एवं साहित्य का पुनः अन्वेषण करने का आग्रह किया। साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. एन. नागराज, कन्नड अध्ययन विभाग के डीन एवं अध्यक्ष प्रो. शिवगंगा रूम्मा बतौर विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे।

प्रथम सत्र में कन्नड भाषा के तीन प्रतिष्ठित लेखकों तथा विद्वानों श्री एच.एस. राघवेंद्र राव, श्री नटराज हुलियार तथा प्रो. ओ.एल. नागभूषण स्वामी ने क्रमशः 'कन्नड साहित्य—संस्कृति एवं देशीय अनुभूति', 'क्षेत्रीय संवेदनशीलता एवं सार्वभौमिक संवेदनशीलता' तथा 'देशीयता की सीमाएँ एवं संभावनाएँ' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में, सुश्री बी.एन. सुमित्रा बाई ने क्षेत्रीय पहचान के पुनर्निर्माण पर चर्चा की, श्री रमजान दारा ने 'वाचन साहित्य एवं क्षेत्रीय चेतना' तथा श्री चंद्रशेखर नांगली ने रागले, शतपदी एवं संगत्या छंदों एवं क्षेत्रीय पहचान के विकास में इनकी भूमिका पर चर्चा की। तृतीय सत्र में, तीन विख्यात विद्वानों—श्री अप्पागेरे सोमशेखर, श्री स्वामी राव कुलकर्णी तथा प्रो. ओ.एल. नागभूषण स्वामी ने क्रमशः 'तत्त्वपद : क्षेत्रीय चेतना का विकास', 'कीरतानेगळु में देशीय धारणा' एवं 'नाटक एवं देशीय अनुभूतियाँ' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र में श्री वीरन्ना दांडी, श्री के.वाई. नारायण स्वामी तथा श्री कृष्णमूर्ति हानुर ने क्रमशः 'कन्नड लोक काव्यशास्त्र', 'लोक कथाओं में देशीयता' एवं 'कन्नड लोक महाकाव्यों में देशीय विश्व दृष्टि' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। पंचम सत्र में, श्री एस.नटराज बुदालु एवं श्री अमरेश नुगादोनी जैसे विख्यात विद्वानों ने क्रमशः 'आधुनिक कन्नड कविता : राष्ट्रीयता-अंतर्राष्ट्रीयता—देशीयता' तथा 'कन्नड कहानियों में देशीय अनुभूति की धारणाएँ एवं संकट' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने देशीयता का राजनीतिकरण करने के जोख़िमों के बारे में बात की, जबकि प्रो. राजेंद्र चेन्नी ने समापन वक्तव्य देते हुए कन्नड उपन्यासों के देशीय संसार पर चर्चा की।

उपेंद्र ठाकुर मोहन, गिरिधर झा एवं परमानंद शास्त्री जन्मशतवार्षिकी तथा ब्रजमोहन ठाकुर की 125वीं जयंती पर संगोष्ठी

8-9 अगस्त 2015, पूर्णिया

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं ब्रजमोहन ठाकुर विधि महाविद्यालय, पूर्णिया के संयुक्त तत्त्वावधान में 8 एवं 9 अगस्त 2015 को आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से मैथिली नवगीत के प्रतिष्ठापक एवं साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', उपन्यासकार-चित्रकार गिरिधर झा विकल, साहित्यकार-पत्रकार परमानन्द शास्त्री को उनकी जन्मशतवार्षिकी तथा मैथिली भाषा के उन्नायक ब्रजमोहन ठाकुर को उनकी 125 वीं जयंती के अवसर पर याद किया गया। संगोष्ठी में साहित्यकारों, साहित्य-समीक्षकों एवं साहित्य प्रेमी प्रबुद्धजनों की सहभागिता से आयोजन को संपूर्णता मिली तथा मैथिली भाषा-साहित्य से संबंधित कई नए तथ्यों को भी उपस्थापित किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए बिहार भूमि न्यायाधिकरण, पटना की अध्यक्ष श्रीमती मृदुला मिश्र ने भाषा को अपनत्व-भाव बढ़ाने का सशक्त और सफल माध्यम बताया। साथ ही इसके माध्यम से राष्ट्रीय एकता को पुष्ट करने के लिए भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में पिरोने हेतु साहित्य अकादेमी को साधुवाद दिया।

साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. वीणा ठाकुर ने विषय-प्रवर्त्तन करते हुए संस्कृत की पृष्ठभूमि से आनेवाले उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', गिरिधर झा 'विकल' एवं परमानन्द शास्त्री के साथ ही सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक, संवर्द्धन के लिए समर्पित ब्रजमोहन ठाकुर के अवदानों को रेखांकित करते हुए तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक, भाषिक चेतना आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए मैथिली के वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार श्री कमल आनन्द ने उपेन्द्र ठाकुर मोहन से अपनी निकटता रखते हुए पूर्णिया की साहित्यिक एवं विद्वत्-परंपरा को स्मरण किया। उन्होंने मीमांसक म.म. गोकुलनाथ झा, शिवानंद चौधरी, ब्रजमोहन ठाकुर, देवनाथ राय, मुरलीधर सिंह, मदनेश्वर मिश्र, कुमार गंगानंद सिंह आदि के अवदानों को रेखांकित करते हुए कहा कि संगोष्ठी के आयोजन से पूर्णिया के साहित्यिक वातावरण को जीवनी शक्ति मिली है।

उद्घाटन सत्र का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन करते हुए विधि महाविद्यालय के सचिव वीरेन्द्र मोहन ठाकुर ने आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति आभार जताया। महाकवि विद्यापति रचित 'गोसाउनिक गीत : जय-जय भैरवि' का गायन कर श्री भोले शंकर झा ने इस उद्घाटन सत्र का आग़ाज़ किया। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी की गतिविधियों को रेखांकित किया।

दाएँ से बाएँ : श्री आशुतोष ठाकुर, श्रीमती वीणा ठाकुर, श्रीमती मृदुला मिश्रा, डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश तथा श्री कमल आनंद

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में डॉ. रामनरेश सिंह ने 'उपेन्द्र ठाकुर मोहन के काव्य में करुण-रस का प्रयोग' विषय पर आलेख पाठ किया। इन्होंने काव्य में इस रस और रस में करुण रस की महत्ता रखते हुए कई उदाहरण देकर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' की कविताओं में करुणा के प्रवाह से अवगत कराया। वहीं श्री सुरेन्द्रनाथ ने 'उपेन्द्र ठाकुर मोहन का जीवन और साहित्य' विषयक आलेख में मोहन के काव्य-ग्रंथ 'फुलडाली', 'बाजि उठल मुरली' तथा 'इतिश्री' के विषय वस्तु का रेखांकन किया। उनके जीवन के विभिन्न पक्षों को श्रोताओं के समक्ष रखा। सत्राध्यक्ष श्री शिशिर कुमार झा ने पढ़े गये आलेखों पर विचार रखते हुए कहा कि साहित्य से ही संसार का वास्तविक रूप में निर्माण होता है।

संयुक्त रूप से आयोजित दूसरे एवं तीसरे सत्र में डॉ. गौरीकांत झा ने 'उपेन्द्र ठाकुर मोहन के काव्य में युगीन स्वर' विषय पर केंद्रित आलेख में कवि द्वारा वर्तमान के चित्रांकन को स्पष्ट किया। उन्होंने माना कि मोहन का काव्य तत्कालीन समाज और भारतीय समाज का अमूल्य दस्तावेज़ है। वहीं डॉ. कमल मोहन ठाकुर ने 'काव्यक प्रसंग मोहनक दृष्टिकोण : संदर्भ बाजि उठल मुरली' विषय पर कहा कि कवि ने जनसरोकार एवं जनसंवेदना को मुखर किया। सत्राध्यक्ष श्री साकेतानंद झा ने समाहार प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन के चौथे सत्र में डॉ. योगानन्द झा ने 'मोहन और उनके समकालीन गीतकार (ईशनाथ झा, मधुप, आरसी प्रसाद सिंह) : साम्य एवं वैषम्य' विषय पर समीक्षात्मक विचार रखे। उन्होंने लेखन शैली, विषय-वस्तु, छंद, अलंकार आदि शास्त्रीय तत्त्वों को समक्ष रखते हुए सरस कवि ईशनाथ झा, कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' एवं प्रखर-मुखर गीतकार आरसी प्रसाद सिंह की विभिन्न रचनाओं की तुलना उपेन्द्र ठाकुर मोहन की काव्य-रचनाओं से की। श्री अमलेन्दु शेखर पाठक ने 'मोहनक काव्य में दार्शनिक पृष्ठाधार' विषय पर आलेख पाठ किया। उन्होंने मोहन के काव्य में भारतीय जीवन-दर्शन के साथ ही कवि के मौलिक चिंतन को रेखांकित किया। डॉ. कुलानंद झा ने 'उपेन्द्र ठाकुर मोहन की सूक्ति-सम्पदा' विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस सत्र की अध्यक्षता श्री लक्ष्मीधर मिश्र ने की।

पाँचवें सत्र में डॉ. पंचानन मिश्र ने 'गिरिधर झा विकल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषयक आलेख में अनेक अनुद्घाटित तथ्यों का उद्घाटन किया। इस सत्र में डॉ. के. पी. यादव ने 'ब्रजमोहन ठाकुर की डायरी' तथा श्री फूलचन्द्र झा प्रवीण ने 'पत्रात्मक शैली के मैथिली उपन्यास और आँगनक रेखा' विषय पर आलेख-पाठ किया। श्रीमती शांति झा ने अध्यक्षीय अभिभाषण किया।

छठे एवं सातवें सत्र में डॉ. शिव कुमार मिश्र ने 'आचार्य परमानंद शास्त्री का व्यक्तित्व और कृतित्व' तथा डॉ. भैरव लाल दास ने 'मैथिली लिपि का अनुसंधान और आचार्य परमानन्द शास्त्री' विषय पर आलेख पाठ किया। इन दोनों ने दृश्य माध्यम उपयोग कर अपने विषय को प्रस्तुत किया। डॉ. कमलाकांत झा ने 'परमानंद शास्त्री की व्यंग्य रचना' पर सारगर्भित आलेख-पाठ किया। वहीं श्री विद्यानंद झा 'पंजीकार' ने 'ब्रजमोहन ठाकुर का व्यक्तित्व और कृतित्व' विषयक आलेख में आलोच्य विभूति का समग्र परिचय रखा। डॉ. वीरेन्द्र मोहन ठाकुर ने 'कलकत्ता विश्वविद्यालय में मैथिली शिक्षा और ब्रजमोहन ठाकुर' तथा डॉ. इन्द्रनाथ झा ने 'मिथिला की लोककला और विकल' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। अध्यक्षीय अभिभाषण करते हुए श्री विवेकानंद ठाकुर ने संगोष्ठी में पढ़े गए समस्त आलेखों की समीक्षा की। सभी सत्रों का संचालन डॉ॰ वीणा ठाकुर ने किया। उन्होंने समापन से पूर्व कहा कि संगोष्ठी उपलब्धियों से परिपूर्ण रही। इतिहास के पन्नों से वंचित साहित्य निर्माताओं पर खोजपरक आलेखों पर उन्होंने खुशी ज़ाहिर की।

भीष्म साहनी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

8-10 अगस्त 2015, नई दिल्ली

प्रतिष्ठित कहानीकार, उपन्यासकार, नाट्य लेखक और अनुवादक भीष्म साहनी के जन्म के एक सौ वर्ष पूरे होने पर संस्कृति मंत्रालय और साहित्य अकादेमी के संयुक्त तत्त्वावधान में 8-10 अगस्त 2015 को भीष्म साहनी जन्मशतवार्षिकी समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन भारत सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा ने किया।

देश के कोने-कोने से पधारे साहित्य एवं कला प्रेमियों को संबोधित करते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि भीष्म साहनी पर आयोजित यह कार्यक्रम तो बस एक शुरुआत है। पूरे वर्ष तक उनकी रचनाओं, उनकी यादों को संजोया जाएगा। देश के कोने-कोने में उनकी रचनाओं को कार्यक्रम के माध्यम से याद किया जाएगा। उन्होंने अपने जीवन के अतीत की कुछ घटनाओं को याद करते हुए कहा कि मैंने अपने जीवन में दो क़समें खाईं—एक तो कभी लॉटरी नहीं खरीदूँगा और दूसरी, महान लोगों की आत्मकथाएँ पढ़ूँगा। मैं जब भी किसी संकट या समस्याओं से घिरा रहता हूँ तो उसका समाधान भीष्म साहनी जैसे महान रचनाकारों की रचनाओं में मिलता है।

भीष्म साहनी के भतीजे एवं मशहूर फ़िल्म अभिनेता श्री परीक्षित साहनी ने अपने पिता बलराज साहनी एवं चाचा को याद करते हुए कहा कि भीष्म साहनी मेरे पिता के समान थे। उनके अंदर देश प्रेम का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ था। उन्होंने कहा कि कलाकार दिमाग़ी तौर पर कम काम करते हैं, दिल से ज़्यादा काम करते हैं। भीष्म जी भी उसी मिज़ाज के व्यक्ति थे। भीष्म जी ने मुझे पाला है। मेरा बचपन भीष्म जी के साथ ही गुज़रा है।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि मैं एक हिंदी का पाठक होने के नाते उनका उपकार मानता हूँ कि भीष्म जी ने हिंदी में लिखा। उनकी माँ पंजाबी भाषी थी। परिवार के सभी सदस्य उर्दू जानते थे। ख़ुद भीष्म साहनी जी अंग्रेज़ी के अध्यापक थे, लेकिन वे हिंदी में

बाएँ से दाएँ : श्री नरेंद्र कुमार सिन्हा, डॉ. रमेश उपाध्याय, डॉ. महेश शर्मा, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, श्री परीक्षित साहनी, श्री प्रमोद कुमार जैन एवं डॉ. के. श्रीनिवासराव

लिखते थे। उन्होंने कहा कि वे काफ़ी सक्रिय थे। वे शांत, सीधे, विनम्र ढंग से काम करते थे। उनका जीवन और लेखन कभी विवाद भरा नहीं रहा। वे बाहर से विनम्रता से काम करते थे और अंदर से दृढ़ता के परिचायक थे।

समारोह में आए अतिथियों का स्वागत साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने किया तथा संचालन अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया। मंच पर संस्कृति एवं पर्यटन राज्य मंत्री डॉ. महेश शर्मा के अलावा अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अभिनेता श्री परीक्षित साहनी, संस्कृति सचिव श्री नरेंद्र कुमार सिन्हा, संयुक्त सचिव श्री प्रमोद कुमार जैन, वरिष्ठ कथाकार श्री रमेश उपाध्याय उपस्थित थे।

इस अवसर पर भीष्म साहनी पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित विनिबंध का भी लोकार्पण किया गया।

जन्मशतवार्षिकी समारोह में रविवार को तीन सत्रों का आयोजन किया गया था। पहला सत्र भीष्म साहनी की स्मृतियों पर आधारित था, जिसमें श्री एम. के. रैना, श्री भीष्म साहनी की पुत्री श्रीमती कल्पना साहनी, श्री केवल गोस्वामी और सुश्री हर्षी आनंद ने हिस्सा लिया। सत्र में श्रीमती कल्पना साहनी ने उनके जीवन से जुड़े दुर्लभ चित्रों के साथ स्मृतियों को साझा किया। जबकि सुश्री हर्षी आनंद ने उनकी उस चिट्ठी को पढ़कर सुनाया था, जिसमें उन्होंने अपनी एक रचना का उनके द्वारा विरोध करने पर अपनी सफ़ाई पेश की थी, जो बहुत ही मार्मिक थी और साथ-साथ उनकी रचना प्रक्रिया को रेखांकित करती थी।

दूसरा सत्र 'नई कहानी आंदोलन और भीष्म साहनी' पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. नित्यानंद तिवारी ने की और डॉ. अब्दुल बिस्मिल्लाह, डॉ. रविभूषण और डॉ. अजय तिवारी ने अपने-अपने आलेख पढ़े। सत्र को संबोधित करते हुए प्रो. नित्यानंद तिवारी ने भीष्म जी की कई कहानियों का ज़िक्र किया। उन्होंने कहा कि उनकी कहानियों में इतिहास को देखते हुए वर्तमान में आगे जाने के रास्ते दिखते हैं।

तीसरा सत्र 'भीष्म साहनी के उपन्यास : सांप्रदायिकता, विभाजन और रूढ़ियों का प्रतिरोध' पर था, जिसमें डॉ. असग़र वज़ाहत, प्रो. गोपेश्वर सिंह और श्री रवींद्र त्रिपाठी ने अपने-अपने विचार रखे। डॉ. असग़र वज़ाहत ने भीष्म साहनी के लेखन की चर्चा करते हुए कहा कि प्रगतिशील लेखक संघ की चुनौतियों को उन्होंने स्वीकार किया और विचारधारा का प्रयोग लेखन में किया।

समारोह के अवसर पर शनिवार से चल रही पुस्तक एवं चित्र प्रदर्शनी को भीष्म साहनी के पाठकों द्वारा काफ़ी पसंद किया गया। रविवार को भीष्म साहनी के उपन्यास 'लीला नंदलाल' की और सोमवार को 'चीफ़ की दावत' एवं अन्य कहानियों का मंचन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सभागार में किया गया।

समारोह के अंतिम दिन नाटक, रंगमंच और फ़िल्म के संदर्भ विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए मशहूर फ़िल्म निर्देशक श्री गोविंद निहलानी ने कहा कि भीष्म साहनी किसी वैचारिक पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं थे। उन्होंने उपन्यास, नाटक या जो भी कहानियाँ लिखीं, उसे पूरी ईमानदारी से बिना किसी अलंकारिक भाषा का प्रयोग किए लिखा। इसीलिए उनकी रचनाओं में एक सादगी है, लकिन ये सादगी काफ़ी गहराई लिए हुए है।

इसी सत्र में मशहूर नाट्य निर्देशक डॉ. देवेंद्रराज अंकुर ने कहा कि भीष्म साहनी एक ऐसे अकेले रचनाकार हैं जो साधारण शैली में नाटक लिखते थे। उनके द्वारा लिखे गए सभी छह नाटक यथार्थवादी स्तर के हैं और उनके मंचन में काफ़ी कठिनाइयाँ होती हैं। लेकिन, सबसे मज़े की बात यह है कि इसके बाद भी बार-बार इनका मंचन किया जाता है।

प्रगतिशील आंदोलन और भीष्म साहनी विषय पर चर्चा करते हुए तमाम विद्वानों ने एक स्वर में कहा कि वे एक लेखक होने के साथ-साथ कुशल संगठनकर्ता भी थे। साहित्यकार प्रो. अरुण कमल ने कहा कि वे चाहते थे कि प्रगतिशील लेखक संघ में हर तरह के लेखकों का

समावेश हो। उनकी इच्छा यह भी थी कि विचारवाद व पंथवाद से ऊपर उठकर लेखक एक संगठन के अंदर रहें। इस सत्र में डॉ. राजेंद्र कुमार, डॉ. सत्यकाम और अध्यक्ष के रूप में डॉ. मुरली मनोहर प्रसाद सिंह ने भी उन्हें आला दर्जे का संगठनकर्ता और लेखक बताया।

भारतीय भाषाओं में भीष्म साहनी को लेकर कन्नड, मराठी, ओड़िया और तेलुगु के साहित्यकारों ने भीष्म साहनी की रचनाओं का दूसरी भाषाओं में अनुवाद किए जाने की कमी पर बात की। उनका मानना था कि जिस स्तर पर साहनी जी की रचनाओं का अनुवाद होना चाहिए, उस स्तर पर नहीं हुआ है।

भीष्म साहनी जन्मशतवार्षिकी समारोह के समापन सत्र को संबोधित करते हुए वरिष्ठ आलोचक डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल ने कहा कि भीष्म साहनी जितने बेहतर इंसान थे, उतने ही बेहतर लेखक थे और जितने बढ़िया लेखक थे, 'उतने ही बढ़िया' भी इंसान थे। वे असाधारण रूप से असाधारण रचना करते थे।

अयोति दास पंडितर पर परिसंवाद

11 अगस्त 2015, पुदुचेरी

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा पांडिचेरी इंस्टीट्यूट ऑफ़ लिंग्विस्टिक्स एंड कल्चर के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ दलित विचारक एवं साहित्यकार का. अयोति दास पंडितर पर 11 अगस्त 2015 को पुदुचेरी में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

चेन्नै कार्यालय प्रभारी श्री के. पी. राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा अकादेमी द्वारा भारतीय भाषाओं के साहित्य, विशेषकर दलित साहित्य के विकास के लिए किए जानेवाले प्रयासों के बारे में बताया। सत्राध्यक्ष तथा अकादेमी की सामान्य परिषद् की सदस्या प्रो. वामा ने अयोति दास पंडितर के विभिन्न पक्षों पर बात की तथा उन्हें एक विचारक एवं क्रांतिकारी पत्रकार बताया। इस अवसर पर पीआईएलसी

व्याख्यान देती हुई प्रो. अरंग मलिका

के निदेशक श्री अक्तवत्सल भारती ने अयोति दास पंडितर की प्रेरक जीवनी की चर्चा करते हुए बताया कि किस प्रकार उन्होंने दुर्गम स्थितियों को पार किया, दलित जन का उत्थान किया, तमिलनाडु में बौद्ध विश्वविद्यालय के लोक साहित्य विभाग के डॉ. धर्मराज ने अयोति दास के मूलभूत दर्शन के बारे में बताते हुए कहा कि वे विशुद्ध तर्कशील व्यक्ति थे और उन्होंने तमिलनाडु के बहुत-से रीति-रिवाजों की व्याख्या तार्किकता की कसौटी पर की। अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर. संबथ ने अयोति दास पंडितर द्वारा दलित लोगों के विकास के लिए उठाए गए क़दमों की चर्चा करते हुए उद्घाटन सत्र में अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के तमिळ् परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुंदर मुसगन द्वारा की गई। इस सत्र में डॉ. टी. प्रतिभान तथा डॉ. अरंग मलिका द्वारा क्रमशः 'अयोति दास पंडितर की संस्कृति के आंदोलन' एवं 'अयोति दास पंडितर और कुंडलकेशी' शीर्षक आलेक प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र श्री मनिक्को पन्नीर सेल्वम की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री मु. शक्तिवेल एवं श्री एस. अरिमावलन ने क्रमशः 'अयोति दास पंडितर की शैक्षिक अवधारणा' एवं 'अयोति दास पंडितर और अवैय्यर' शीर्षक आलेक प्रस्तुत किए।

अपने समापन भाषण में श्री मनिक्को पन्नीसेल्वम ने अयोतिदास पंडितर के बहुआयामी व्यक्तित्व को रेखांकित किया तथा उनकी दार्शनिक व्याख्याओं को दैनंदिन जीवन की घटनाओं से जोड़कर प्रस्तुत किया। अंत में श्री सुंदर मुसगन ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

एच.एल. नागेगौड़ा जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

14 अगस्त 2015, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने कर्नाटक जनपद परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में विख्यात कन्नड़ लेखक एवं लोककथाकार एच.एल. नागेगौड़ा की जन्मशती के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन 14 अगस्त, 2015 को नयना सभागार, बेंगळूरु में किया।

उद्घाटन सत्र में बेंगळूरु कार्यालय के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित संगोष्ठियों एवं जन्मशतवार्षिकी समारोहों की संक्षेप में चर्चा की। कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी के कुलपति डॉ. एच.सी. बोरलिंगय्या ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए देशी सांस्कृतिक शोध एवं लोक साहित्य में नागेगौड़ा के बहुमूल्य योगदान के बारे में बात की। विख्यात कन्नड कथा लेखक डॉ. करिगौड़ा बीचनहल्ली ने अपने बीज

डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम् एवं अन्य

भाषण में इस बात पर प्रकाश डाला कि नागेगौड़ा अपनी प्रत्येक रचना के लिए पूरा शोध करते थे तथा उन्होंने नागेगौड़ा के बहुमुखी जीवन पर भी बात की। कर्नाटक जनपद परिषद् के अध्यक्ष तथा सेवानिवृत्त आई.ए.एस. श्री टी. थिम्मेगौड़ा ने सत्र की अध्यक्षता की तथा जनपद लोक के योगदानों की चर्चा की। इस अवसर पर कर्नाटक जनपद परिषद् की मैनेजिंग ट्रस्टी एवं एच.एल. नागेगौड़ा की सुपुत्री श्रीमती इंदिरा बालकृष्णा तथा कर्नाटक संघ, मंड्या के अध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश गौड़ा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

प्रथम सत्र एच.एल. नागेगौड़ा के 'जीवन एवं कृतित्व' को समर्पित था, जिसमें तीन विद्वानों—डॉ. कुरुव बसवारा, डॉ. के.आर. संध्या रेड्डी एवं डॉ. कृष्णमूर्ति हानुर ने क्रमशः 'एच.एल. नागगौड़ा का जीवन', कन्नड लोकसाहित्य एवं एच.एल. नागेगौड़ा' तथा 'एच.एल. नागेगौड़ा का गद्य लेखन' पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिससे नागेगौड़ा से जुड़े अब तक अज्ञात कई तथ्य सामने आए। मध्याह्न में एच.एल. नागेगौड़ा पर आधारित वृत्तचित्र का भी प्रदर्शन किया गया।

साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रमण्यम ने समापन सत्र की अध्यक्षता की तथा एच.एल. नागेगौड़ा की रचनाओं का समीक्षात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत किया। विख्यात कन्नड लेखक तथा लोककथाकार श्री गो. रू. चेन्नावसप्पा ने समापन व्याख्यान प्रस्तुत किया। अंत में कर्नाटक जनपद परिषद् के माननीय सचिव श्री एच.आर. राजे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'मणिपुरी साहित्य पर अंग्रेज़ी साहित्य का प्रभाव' पर परिसंवाद

18 अगस्त 2015, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता तथा मणिपुर विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के लिटरेरी सर्किल के संयुक्त तत्त्वावधान में 'मणिपुर साहित्य पर

अंग्रेज़ी साहित्य का प्रभाव' विषयक परिसंवाद का आयोजन 18 अगस्त 2015 को विश्वविद्यालय परिसर, इंफ़ाल में किया गया।

उद्घाटन सत्र में कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं दर्शकों का स्वागत किया तथा परिसंवाद की विषयवस्तु की संक्षेप में चर्चा की। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित मणिपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एच. नंदकुमार शर्मा ने समाज के लिए साहित्य की महत्ता तथा प्रासंगिकता पर बात की। अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो. एन. खगेंद्र सिंह ने मैतेई जनजाति की संवेदनशील प्रकृति के बारे में बताया तथा उनकी प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में किए गए कार्यों का उल्लेख किया एवं यह महसूस किया कि उनकी संवेदनशील प्रकृति कई मणिपुरी लेखकों के लिए सहायक सिद्ध हो सकती है। अपने बीज भाषण में विख्यात विद्वान प्रो. रतनकुमार ने मणिपुरी साहित्य पर अंग्रेज़ी साहित्य के प्रभाव की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा कि जिस प्रकार संसार में हर बात से जुड़े सकारात्मक-नकारात्मक पक्ष होते हैं, उसी प्रकार इस तथ्य के भी कुछ अपने सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलू हैं। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने मणिपुरी साहित्य पर अंग्रेज़ी साहित्य के परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से पड़नेवाले प्रभावों के बारे में बात की। मणिपुरी विभाग की सुश्री कुमारी मालेन चानु ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. एन. खगेंद्र सिंह ने की तथा विख्यात विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. बिनता नोङ्मइथम ने एम.के. बिनोदिनी की कहानियों पर अंग्रेज़ी साहित्य एवं साहित्यिक प्रवृत्तियों के प्रभाव के बारे में बात की। मणिपुर महाविद्यालय की डॉ. रत्नावली ने डॉ. कमल की रचनाओं पर अंग्रेज़ी साहित्य के प्रभाव की चर्चा की तथा डॉ. पी. दिनेश मैतेई ने बीरेन के काव्य पर टी.एस. इलियट के प्रभाव की चर्चा की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. रतनकुमार सिंह ने की तथा तीन विख्यात विद्वानों ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. एल. जॉयचंद्र सिंह ने युद्ध-पूर्व एवं युद्धोत्तर मणिपुरी कविता पर अंग्रेज़ी के प्रभाव के बारे में बात की। उमावती चानू ने पाचा मैतेई के *इंफ़ाल अमासुन मागी इशिङ् नुंगसीतकी फीबामंद* पर चेतना की धारा एवं तकनीक के प्रभाव के बारे में बात की तथा ओ.एस. देवी ने जी.सी. तोंगरा के नाटकों पर जी.बी. शॉ के प्रभाव की चर्चा की।

कैफ़ी आज़मी पर परिसंवाद

19 अगस्त 2015, अलीगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सहयोग से उर्दू के लब्धप्रतिष्ठ कवि कैफ़ी आज़मी पर एक परिसंवाद का आयोजन 19 अगस्त 2015 को विश्वविद्यालय के केनेडी सभागार में किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन जाने-माने फ़िल्म लेखक, गीतकार और शायर जावेद अख़्तर ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि भारत में राजनीतिक एवं आर्थिक बदलाव के बावजूद कैफ़ी आज़मी ने अपने आदर्शवाद को बरक़रार रखा और भारत के समाजवादी भविष्य के लिए आशावान रहे। कैफ़ी का आशावाद उनकी कविताओं में समाजवादी समतावाद समाज के सपनों के साथ झलकता है, जिसमें एक और सभी इंसानी आवाज़ की गूँज सुनाई देती है।

जावेद अख़्तर ने यह भी कहा कि आज बाज़ारी ताक़तों और वैश्वीकरण ने समाज को और अधिक स्वार्थी एवं आत्मकेंद्रित बना दिया है, लेकिन कोई मानव समाज कामयाब नहीं हो सकता यदि वह समाज के हर वर्ग के साथ न्याय नहीं करता; विशेषतः हाशिये, ग़रीब और कुचले हुए लोगों के साथ।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति ले. जेनरल (सेवानिवृत्त) ज़मीरुद्दीन शाह ने की, जबकि

परिसंवाद का उद्घाटन सत्र

विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति ब्रिगेडियर (सेवानिवृत्त) सैयद अहमद अली विशिष्ट अतिथि थे एवं सिने तारिका एवं सामाजिक कार्यकर्ता शबाना आज़मी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित थीं।

श्रीमती शबाना आज़मी ने अपने पिता कैफ़ी आज़मी को याद करते हुए कहा कि हमारे पिता एक व्यक्ति के रूप में अन्य पिताओं से अलग थे। उन्होंने कहा कि वह एक अलग पिता की 'अलग' बेटी थीं। अपने बीज-वक्तव्य में उर्दू भाषा विकास परिषद् के निदेशक प्रो. इर्तिज़ा करीम ने कहा कि अन्य दूसरे कवियों की तरह कैफ़ी आज़मी ने भी अपनी शायरी का आग़ाज़ ग़ज़ल लेखन से किया। प्रगतिशील लेखक आंदोलन और कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ाव ने उन्हें सामाजिक प्रवचन की राह पर लगा दिया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुलपति ले. जेनरल (सेवानिवृत्त) ज़मीरुद्दीन शाह ने कैफ़ी आज़मी को 'अजीब आदमी था वो' नज़्म के द्वारा श्रद्धांजलि प्रस्तुत की। अपने व्याख्यान में प्रतिकुलपति ब्रिगेडियर (सेवानिवृत्त) एस. अहमद अली ने कहा कि समाज को दूसरे कैफ़ी आज़मी की ज़रूरत है।

परिसंवाद के समन्वयक एवं अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य प्रो. शाफ़े क़िदवई ने कहा कि कैफ़ी के गीत हमारे सामूहिक अंतरात्मा की आवाज़ हैं। उन्होंने आगे कहा कि कैफ़ी जनसमूह के कवि थे।

अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने भी कैफ़ी आज़मी के प्रति अपने विचार रखे। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मुश्ताक़ अहमद ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् कई सत्रों में विभाजित परिसंवाद संपन्न हुआ जिसमें उर्दू, हिंदी एवं अंग्रेज़ी में विद्वानों द्वारा कैफ़ी आज़मी के विभिन्न पहलुओं पर आलेख प्रस्तुत किए गए। आलेख प्रस्तुत करने वालों में प्रो. सैयद मुहम्मद हाशिम, प्रो. ख़ुर्शीद अहमद, प्रो. अली अहमद फ़ात्मी, प्रो. असीम सिद्दीक़ी, प्रो. समी रफ़ीक़, प्रो. शहाब अली, डॉ. अजय बिसारिया, डॉ. सरवत मेहदी, डॉ. सीमा सग़ीर एवं प्रो. सग़ीर अफ़्राहीम के नाम प्रमुख हैं।

अशंगबम मीनकेतन के जीवन एवं कृतित्व पर परिसंवाद

19 अगस्त 2015, काकचिंग, मणिपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता एवं खा मणिपुर महाविद्यालय के मणिपुरी विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में अंशगबम मीनकेतन के जीवन एवं कृतित्व पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन काकचिंग में 19 अगस्त 2015 को किया गया। अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने स्वागत भाषण किया। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह तथा परिसंवाद में खा मणिपुर कॉलेज के प्राचार्य शा. शामू सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन श्री पी. समरेन्द्र सिंह ने किया। प्रथम सत्र में प्रो. एन. खगेंद्र सिंह की अध्यक्षता में पी. नभचंद्र सिंह, था. रतनकुमार सिंह तथा राजेन तोईजांबा ने क्रमशः "निबंधकार के रूप में मीनकेतन", "आलोचक के रूप में मीनकेतन" तथा "नाटककार के रूप में मीनकेतन" विषयक अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में श्रीमती एन. अरुणा देवी की अध्यक्षता में एस. लानचेनबा मैतेई, च. राजकेतन सिंह तथा टी. कुंजेशोर सिंह ने क्रमशः "कवि के रूप में मीनकेतन", "मीनकेतन के साहित्य में लोकसाहित्यिक तत्त्व" एवं "मीनकेतन की शब्दयोजना" विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

समकालील भारतीय काव्य पर परिसंवाद

21-22 अगस्त, शिमला

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने हिमाचल प्रदेश सरकार के भाषा एवं संस्कृति विभाग के सहयोग से समकालीन भारतीय काव्य के वर्तमान परिदृश्य पर 21-22 अगस्त 2015 को गेयटी थिएटर, शिमला में द्विदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के कुलपति ने दीप प्रज्वलित कर परिसंवाद का उद्घाटन किया। पहले सत्र की अध्यक्षता हिंदी के प्रतिष्ठित कवि श्री मंगलेश डबराल ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में समकालीन भारतीय काव्य के बहु-आयामी पहलुओं पर प्रकाश डाला। श्री अनिल राकेशी, श्री ओम निश्चल, श्री राधेश्याम तिवारी तथा श्री जितेंद्र श्रीवास्तव ने अपनी कविताओं का पाठ किया तथा हिंदी काव्य के स्वरूप, भाषाशैली एवं शिल्प को उजागर किया। दूसरे सत्र में डॉ. सत्यनारायण ने श्रीनिवास श्रीकांत की कविता का पाठ किया। श्री सुरेश सेन निशांत ने अपनी कलात्मकता तथा रचनात्मक क्षमता का वर्णन किया। प्रो. कुमार कृष्ण ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि श्रीनिवास श्रीकांत की पहली कविता 'रेहड़ी वाले की बेटी' 1954 मुं लिखी गई थी तथा यह देखा गया कि यद्यपि यह विद्यालय स्तर की कविता थी, फिर भी उसकी वह शब्दशक्ति ही है, जो उन्हें अपने कॉलेज में हिंदी विभाग स्थापित करने की शक्ति मिली।

कविता पाठ सत्र के दूसरे दिन श्री द्विजेंद्र द्विज, श्री आत्मा रंजन, सुश्री रेखा वशिष्ठ, श्री ज्ञानप्रकाश विवेक, सुश्री आरती स्मित, श्री संजय कुंदन तथा श्री संजीव कौशल ने अपनी कविताओं का पाठ किया। श्री ज्ञान प्रकाश विवेक ने इस सत्र की अध्यक्षता की। श्री द्विजेंद्र द्विज ने ग़ज़लें पढ़ीं तथा श्री एम. एस. आत्मा राम ने अपनी कुछ कविताएँ 'पृथ्वी पर लेटना' तथा 'शक्ति पूजा' शीर्षक से प्रस्तुत किया। सुश्री रेखा वशिष्ठ ने 'नदियाँ रास्ता बदलती हैं' कविता का पाठ किया। श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने भी अपनी कविता पढ़ी, जिसमें उन्होंने दिल्ली एवं लोगों की जीवन शैली का वर्णन किया।

श्री ज्ञान प्रकाश विवेक ने 'मंदिर की सीढ़ियों पर दीपक जलाता रहा हूँ' नामके कविता का पाठ किया। श्री मोहन साहिल ने अपनी कविताओं में ग्रामीण परिवेश पर प्रकाश डाला तथा उसके जीवन शैली का विस्तारपूर्वक

वर्णन किया। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री विष्णु नागर ने की। इस सत्र में श्री अजय, श्री तेज राम शर्मा, सुश्री चंद्रलेखा ढढवाल, श्री प्रत्यूष गुलेरी, श्री आशुतोष दुबे, श्री हरीश चंद्र पांडे तथा श्रीमती लीना मल्होत्रा ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

'जम्मू कश्मीर की पंजाबी पोथोहारी कविता' पर परिसंवाद

22 अगस्त 2015, जम्मू

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा एक परिसंवाद का आयोजन 'जम्मू कश्मीर की पंजाबी पोथोहारी कविता' जम्मू एंड कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के के.एल. सहगल हॉल में 22 अगस्त 2015 को किया गया। अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल की सदस्या सुश्री सुरेन्द्र नीर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। विशेषरूप से अकादेमी द्वारा पंजाबी साहित्य के विकास के लिए किए जा रहे कार्यों को रेखांकित किया। परिसंवाद में बीज वक्तव्य पंजाबी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री ख़ालिद हुसैन ने दिया।

प्रथम सत्र में जम्मू विश्वविद्यालय के पंजाबी विभाग की सुश्री रणधीर कौर तथा श्री अनवर ख़ान ने 'ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य तथा पंजाबी पोथोहारी कविता का भविष्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता जम्मू एंड कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के अतिरिक्त सचिव डॉ. अरविंदर सिंह अमन ने की।

दूसरा सत्र काव्य गोष्ठी का था। काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता श्री दविन्दर विश्वनागरिक ने की तथा स्वामी अंतर नीरव, गुरशरण सिंह गुलशन, सलीम जावेद, क़ारी मोहम्मद अशरफ़, परवेज़ मलिक और शेख़ ज़हूर ने अपनी पोथोहारी कविता का पाठ किया।

'वर्तमान सिंधी नाट्य लेखन : राजस्थान चैप्टर' पर परिसंवाद

23 अगस्त 2015, बीकानेर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा सुजाग सिंधी (मासिक) एवं विशाल सिंधु समाज सांस्कृतिक मंच, बीकानेर के सहयोग से 'वर्तमान सिंधी नाट्य लेखन : राजस्थान चैप्टर' विषयक परिसंवाद का आयोजन 23 अगस्त 2015 को मरुधर हेरिटेज होटल, बीकानेर में किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा सिंधी भाषा-साहित्य के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया। श्री श्रीलाल मोहता ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। उन्होंने संक्षेप में सिन्धी साहित्य के विविध आयामों की चर्चा की। श्री एस. एल. हर्ष ने सत्र की अध्यक्षता की, उन्होंने साहित्य अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों की सराहना की। लब्धप्रतिष्ठ सिंधी लेखक-आलोचक श्री जेठो लालवाणी ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने सिंधी नाटक के इतिहास का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। सिंधी पत्रिका *सुजाग* के संपादक श्री देवीचंद खत्री ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री हरीश देवनानी ने की। इस सत्र में श्री भगवान अटलानी ने 'राजस्थान में

दाएँ से बाएँ : श्री एस.एल. हर्ष, श्री जेठो लालवाणी, श्रीलाल मोहता, श्री कृष्णा किंबहुने तथा श्री देवीचंद खत्री

प्रकाशित नाटकों का विकास (गत दो दशक)' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री सुरेश सिंधु ने नाटक 'वजूद' तथा श्री लक्ष्मण भंभाणी ने नाटक 'ममता जो मौत' का पाठ किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री लक्ष्मण भंभाणी ने की। श्री सुरेश बबलानी ने 'राजस्थान में सिंधी नाटकों के मंचन का विकास (गत दो दशक)' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। आलेख के पश्चात् श्री भगवान अटलानी ने अपना नाटक 'इंद्रधनुष' तथा श्री हरीश देवनानी ने 'मेहनत' नाटक का पाठ किया।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री भगवान अटलानी ने की। श्री जय किशन केशवानी ने अपने नाटक 'शिनाख़्त' और श्री सुरेश बबलानी ने 'गलीचे जो टुकडो' नाटक का पाठ किया। श्री भगवान अटलानी ने समापन वक्तव्य दिया।

'साहित्यिक इतिहास लेखन' विषयक परिसंवाद

23 अगस्त 2015, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा 'साहित्यिक इतिहास लेखन' विषयक परिसंवाद का आयोजन 23 अगस्त 2015 को ओड़िशा राज्य अभिलेखागार सभागार, भुवनेश्वर में किया गया। उद्घाटन सत्र में कोलकाता कार्यालय के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहु ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में प्रो. जतिन नायक ने महसूस किया कि केवल कहानियाँ, कविताएँ एवं उपन्यास ही साहित्य नहीं हैं, साहित्य के इतिहासकारों को आत्मकथा, यात्रावृत्त तथा जनजातीय एवं मौखिक साहित्य जैसी साहित्यिक शैलियों को भी पूर्ण साहित्य में सम्मिलित करना चाहिए। अपने बीज भाषण में श्री प्रसन्न कुमार महांति ने ओड़िया में साहित्यिक इतिहास लिखे जाने के प्रयासों पर प्रकाश डाला। ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने अपने व्याख्यान में स्पष्ट किया कि यद्यपि हमारे पास व्यापक क्षेत्रीय एवं भाषाई साहित्यिक इतिहास उपलब्ध है, परंतु भारतीय साहित्य का कोई व्यापक इतिहास नहीं है। प्रो. नीलाद्रि भूषण हरिचंदन ने सरल महाभारत पर चर्चा की तथा महसूस किया कि इस प्रकार की चर्चाएँ ओड़िया साहित्य के लिए कई नए आयामों को खोलेंगी करेंगी। पीतबास राउतराय ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. बाउरीबंधु कर ने की तथा तीन विख्यात विद्वानों सर्वश्री अनिमेष महापात्र, श्रीचरण महांति एवं सुरेंद्र महाराणा ने ओड़िया साहित्य के इतिहास लेखन के विभिन्न पहलुओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. गगेंद्रनाथ दाश ने की तथा सर्वश्री वेणुधर पधी, संतोष कुमार त्रिपाठी एवं कृष्ण चंद्र प्रधान ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में श्री बनोज त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

व्याख्यान देते हुए डॉ. गौरहरि दास

'अनुवाद' पर परिसंवाद

25 अगस्त 2015, संबलपुर विश्वविद्यालय, बुरला

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा संबलपुर विश्वविद्यालय के ओड़िया विभाग के सहयोग से 'अनुवाद' विषयक एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन 25 अगस्त 2015 सांख्यिकी सभागार, संबलपुर विश्वविद्यालय, बुरला में किया गया।

उद्घाटन सत्र में कोलकाता कार्यालय के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहु ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। अपने उद्घाटन व्याख्यान में संबलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. चित्तरंजन त्रिपाठी ने भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की महत्ता तथा प्रासंगिकता के बारे में बात की। प्रो. गोपाल कृष्ण रथ ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि उन्हें महसूस होता है कि शाब्दिक अनुवाद असंभव है और जब शाब्दिक अनुवाद किया जाता है तब वह अपना प्रयोजन खो देता है। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य प्रो. कृष्ण चंद्र प्रधान ने पिछले कई दशकों से ओड़िया में की जा रही अनुवाद संबंधी गतिविधियों पर प्रकाश डाला। सत्र के दौरान डॉ. पंचानन मिश्र द्वारा किए गए राईक के. ऐलिगीज़ के ओड़िया अनुवाद का लोकार्पण किया गया। सत्रांत में डॉ. मणींद्र मेहर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री जगन्नाथ दास ने की तथा दो विख्यात विद्वानों डॉ. पंचानन मिश्र एवं डॉ. देवी प्रसन्न पटनायक ने अनुवादकों के समक्ष आनेवाली चुनौतियों पर आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. कालिदास मिश्र ने की। इस सत्र में तीन विख्यात विद्वानों प्रो. देवेंद्र कुमार दाश, प्रो. मनोरंजन प्रधान तथा श्री असित महांति ने बदलते विश्व में अनुवाद के बदलते हुए पहलुओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'पूर्वोत्तर भारत में बाङ्ला साहित्य : इतिहास एवं समकालीन प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद

25 अगस्त 2015, कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता तथा कॉटन कॉलेज के सहयोग से 'पूर्वोत्तर भारत में बाङ्ला साहित्य : इतिहास एवं समकालीन प्रवृत्तियाँ' विषयक एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन 25 अगस्त 2015 को कॉलेज परिसर में किया गया।

उद्घाटन सत्र में कोलकाता कार्यालय के कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों, गणमान्यों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। अपने उद्घाटन व्याख्यान में कॉटन कॉलेज विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. धुव्रज्योति सैकिया ने साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया कि वह इस तरह का महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम कॉलेज में आयोजित कर रही है। कॉटन कॉलेज की प्राचार्या डॉ. नीरदा देवी ने देश के पूर्वोत्तर क्षेत्रों के अंतर्गत बाङ्ला साहित्य को रेखांकित किया। अपने बीज भाषण में डॉ. उपारंजन भट्टाचार्य ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में बाङ्ला साहित्य के प्रभाव का की चर्चा की। अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक तथा परिसंवाद के मुख्य अतिथि डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने कहा कि उन्हें महसूस होता है कि इस प्रकार के कार्यक्रम क्षेत्र को अवश्य लाभांवित करेंगे। कॉटन कॉलेज के बाङ्ला विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. मीता चक्रवर्ती ने सत्र की अध्यक्षता की। प्रशांत एवं देवाशीष दत्त ने क्रमशः क्षेत्र में बाङ्ला साहित्य अध्ययन की उत्पत्ति तथा दिमापुर में बंगाली समुदाय की सामाजिक-सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों के बारे में बात की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. तपोधीर भट्टाचार्य ने की तथा श्री रामेश्वर भट्टाचार्य एवं डॉ. ज्योतिर्मय सेनगुप्त ने पूर्वोत्तर भारत के बाङ्ला साहित्य के इतिहास एवं क्षेत्र के बाङ्ला साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियों की चर्चा की। तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री देवीप्रसाद सिन्हा ने की तथा दो विख्यात विद्वानों श्री मलयकांति दे तथा श्री पल्लव भट्टाचार्य ने पूर्वोत्तर भारत

के बाङ्ला साहित्य की विशिष्टताओं एवं परिभाषा पर चर्चा की। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने की तथा दो प्रतिष्ठित विद्वानों प्रो. बानीप्रसन्न मिश्र एवं प्रो. तपोधीर भट्टाचार्य ने क्षेत्र में बाङ्ला साहित्य के विकास एवं स्थिति को बेहतर तरीक़े से समझने के लिए पूर्वोत्तर भारत के सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं के बारे में बात की। श्री रामकुमार मुखोपाध्याय ने सत्र का समाहार करते हुए महसूस किया कि विखंडन मानवता को बुरी तरह से क्षतिग्रस्त कर रहा है, अतः उन्होंने सभी से मध्यकालीन बाङ्ला कवि चंडीदास की उक्ति 'कुछ नहीं परंतु मानव पूर्ण सत्य है' पर ध्यान देने का आग्रह किया। उन्होंने आशा जताई कि इस चर्चा का परिणाम सकारात्मक होगा, जो पूर्वोत्तर साहित्य को सही दिशा में लेकर जाएगा। कार्यक्रम के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रशांत चक्रवर्ती ने किया।

'संताली में बिनती साहित्य' पर संगोष्ठी

29-30 अगस्त 2015, भुवनेश्वर (ओड़िशा)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 'संताली भाषा में बिनती साहित्य' पर 29-30 अगस्त 2015 को भुवनेश्वर में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

श्री नित्यानंद हेम्ब्रम ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए संताली भाषा के साहित्यिक कार्यक्रम के आयोजन एवं नवोदित कवियों एवं लेखकों को अवसर प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना की। उन्होंने यह भी कहा कि संताली लोगों के जीवन में सामाजिक संस्कारों को पूर्ण करने में 'बिनती' एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मैंने कई सामाजिक और शाब्दिक मूल्य पाए हैं। उन्होंने जोमसिम बिनती, करम बिनती, छाटियार बिनती, बापला बिनती, एवं भांडान बिनती के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को भी वर्णित किया।

अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि 2005 में भारत सरकार द्वारा संताली भाषा को मान्यता मिलने के बाद साहित्य अकादेमी संताली भाषा के निरंतर कार्यक्रम आयोजित कर रही है। गुणवत्ता और समय की माँग के अनुसार साहित्य अकादेमी द्वारा संताली भाषा की ओलचिकी लिपि में कई पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। सत्र की अध्यक्षता करते हुए संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने बिनती के महत्त्व के बारे में बात की। उन्होंने संताली साहित्य के विकास के लिए साहित्य अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

प्रथम सत्र 'जोमसिम बिनती' को समर्पित था तथा सत्र की अध्यक्षता डॉ. दमयंती बेसरा ने की। श्री पूर्णचंद्र

बाएँ से दाएँ : श्री गोतीलाल हांसदा, एक कलाकार, डॉ. नाकू हांसदा, श्री गंगाधर हांसदा तथा श्री क्षेत्रमोहन टुडु

सोरेन ने 'धरती सृजन' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री क्षेत्र मोहन टुडु ने 'मानमी सृजन' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री लक्ष्मण मरांडी ने 'मान्मी बाड आर पारिस हार्टिज' शीर्षक अपना आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री गंगाधर हांसदा ने की। यह सत्र 'करम बिनती' पर आधारित था। श्री मोतीलाल हांसदा (कर्मू धर्मू किसाणेन हाबिजग) क्षेत्र मोहन टुडु एवं डॉ. नाकू हांसदा ने करम बिनती के विभिन्न पहलुओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री जदुमणि बेसरा ने की। यह सत्र छाटियार बिनती पर आधारित था। श्री प्रधान मुर्मू एवं श्री सुशील सोरेन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र बापला बिनती पर आधारित था तथा सत्र की अध्यक्षता श्री शोभानाथ बेसरा ने की। श्री सोमाई किस्कू, श्री कालीचरण हेम्ब्रम एवं श्री गोराचंद मुर्मू ने बापला बिनती के विभिन्न पहलुओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

पाँचवे सत्र की अध्यक्षता श्री नित्यानंद हेंब्रम ने की। यह सत्र भांडान बिनती को समर्पित था, जिसमें श्री रामेश्वर मुर्मू, श्री सोमाई किस्कू एवं श्री लक्ष्मण मरांडी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'कोंकणी में बाल साहित्य : वर्तमान स्थिति और भविष्य की चुनौतियाँ' पर संगोष्ठी

30 अगस्त 2015, पणजी, गोआ

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा गोवा सरकार के कला और संस्कृति निदेशालय के सहयोग से 'कोंकणी में बाल साहित्य : वर्तमान स्थिति और भविष्य की चुनौतियाँ' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 30 अगस्त 2015 को पणजी, गोआ में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबहुने ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि अकादेमी द्वारा बाल साहित्य पुरस्कार की स्थापना के बाद अकादेमी क्षेत्रीय भाषाओं के बाल साहित्य को प्रोत्साहित कर रही है तथा निरंतर बाल साहित्य को प्रकाशित भी कर रही है।

संगोष्ठी का उद्घाटन कोंकणी भाषा के लब्धप्रतिष्ठ लेखक, विचारक श्री गुरुनाथ केलेकर ने किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में श्री केलेकर ने कहा कि बच्चों में पढ़ने की संस्कृति को विकसित करने की ज़रूरत है और उन्हें यह बताने की आवश्कता है कि पढ़ने और सीखने का उद्देश्य नौकरी पाने से नहीं होना चाहिए। उनके अनुसार लेखकों को बाल साहित्य की रचना को एक चुनौती के रूप में लेना चाहिए।

अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हलर्नकर ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि बच्चों का साहित्य आकर्षक ज्ञान प्रदान करने वाला होना चाहिए। कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य श्री जॉन मेंडोसा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी दो सत्रों में विभाजित थी– 'कोंकणी बाल साहित्य : आयची स्थिति' तथा दूसरा, 'कोंकणी बाल साहित्यः फुद्रांची आहवाना'। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री दिनेश मानेरकर तथा दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री प्रसाद लोलयंकर ने की।

सुश्री रजनी भेंब्रे, सुश्री दीपा मुर्कंदे, श्री प्रभाकर भिड़े, श्री प्रकाश पर्येंकर, श्री गुरु बलिगा, श्री विन्सी क्वाद्रोस, सुश्री राजश्री बंदोदकर एवं श्रीरामनाथ गवड़े ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। आलेखों पर खुल कर चर्चा भी हुई।

'देशीयता और मराठी उपन्यास' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

1-2 सितंबर 2015, नागपुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा मराठी विभाग, राष्ट्रशांत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय और गिरीश गाँधी प्रतिष्ठान, नागपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'देशीयता और मराठी उपन्यास' विषयक दो दिवसीय

बाएँ से दाएँ : श्री कृष्णा किंबहुने, डॉ. गणेश देवी, श्री भालचंद्र नेमाड़े, डॉ. रंगनाथ पठारे तथा डॉ. अक्षय कुमार काले

राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 1-2 सितंबर 2015 को नागपुर में किया गया। अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. भालचंद्र नेमाड़े ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया तथा प्रतिष्ठित भाषाविद् एवं आलोचक डॉ. गणेश देवी ने सत्र की अध्यक्षता की।

क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबहुने ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि देशीयता का विचार 1980 में प्रो. भालचंद्र नेमाड़े द्वारा उनके एक लेख में आया था। जिसमें कहा गया है कि देशीयता का घनिष्ठ संबंध एक लेखक का उसकी भूमि, लोगों, संस्कृति और साहित्यिक परंपराओं से होता है। श्री किंबहुने ने प्रो. नेमाड़े को उद्धृत करते हुए कहा कि देशीयता का विश्वास है कि साहित्यिक आंदोलनों या लेखक की महानता अंतर्राष्ट्रीय मानदंड निर्धारित नहीं करते, अपितु इसका निर्धारण आध्यात्मिक मूल्यांकन से लेकर भाषायी प्रयोग में कितना काम हुआ है, से होता है।

प्रो. भालचंद्र नेमाड़े ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि किसी भी क्षेत्र की परंपरा को एक मानक के रूप में किसी भी रूप में लेबलिंग द्वारा उपेक्षित नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि पारंपरिक भाषा को अगली पीढ़ी द्वारा पुनर्जीवित किया जाना जारी रहेगा।

मराठी परामर्श मंडल के सदस्य श्री रंगनाथ पठारे ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि देशीयता से मतलब हमारे अपने देश से जुड़ाव से है। देशीयता की अवधारणा में स्वदेशी भाव अच्छी तरह से शामिल हैं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. गणेश देवी ने कहा कि देशीयता का अर्थ मानव जीवन की पिछले सत्तर हज़ार वर्षों की स्मृति है जिसके आधार पर इंसान जीवित रहने में सक्षम है। मराठी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अक्षय कुमार काले ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि किस प्रकार साहित्य पर उच्च जाति के लोगों का अधिकार है। उसके बाद ही साहित्य और भाषा एंग्लो इंडियन बनते हैं। सत्रांत में डॉ. शैलेंद्र लेंडे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र 'देशीवाद : संकल्पना और स्वरूप' विषय पर था तथा सत्र की अध्यक्षता श्री अशोक बाबर ने की। डॉ. शोभा नाइक एवं श्री रवींद्र इंग्ले चावरेकर ने इस

विषय पर आलेख प्रस्तुत किये। डॉ. नाइक ने अपने आलेख में इस बात की चर्चा की कि देशीवाद विशाल और बहुमुखी साहित्यिक सिद्धांत है तथा मानव संस्कृति का सिरमौर है। श्री रवींद्र इंग्ले चावरेकर ने कहा कि भूमंडलीकरण के इस दौर में देशीवाद की अवधारणा का सुझाव अपूर्ण है।

दूसरे सत्र का विषय था 'देशीयता तथा मराठी उपन्यास : अनुबंध' तथा सत्र के अध्यक्ष थे डॉ. अविनाश सप्रे। श्री संतोष कोटी और डॉ. अलका नाथरेकर कुलकर्णी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री कोटी ने कहा कि देशीवाद की जड़ें गौतम बुद्ध और महावीर के दर्शन में हैं। जहाँ तक उपन्यास का संबंध है देशीवाद पहली बार साने गुरुजी के उपन्यास में दिखता है। डॉ. नाथरेकर ने अपने आलेख में देशीवाद को राजन गवास के उपन्यास *भ-बलीचा* में रेखांकित किया।

तीसरा सत्र 'देशीवाद तथा साठोत्तरी मराठी उपन्यास' पर आधारित था तथा सत्र की अध्यक्षता श्री कौटिकराव थाले पाटील ने की। श्री रणधीर शिंदे और प्रवीण बांदेकर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री रणधीर शिंदे ने कहा कि देशीवाद की संवेदनशीलता मराठी उपन्यास में 1960 के बाद प्रमुख रूप से प्रतीत होता है। श्री प्रवीण बांदेकर ने कहा कि देशीवाद की संस्कृति को व्यंकटेश माडगुळकर, आनंद यादव तथा उसके आगे उद्धव शेळके, डी.बी. मोकाशी, भालचन्द्र नेमाड़े, भाऊ पाध्ये, मनोहर तलहर तथा अन्य के उपन्यासों में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।

'देशीवाद तथा मराठी उपन्यास 1990 के बाद' विषय चतुर्थ सत्र का था तथा इस सत्र के अध्यक्ष प्रो. वासुदेव सावंत थे। श्री नितिन रिंधे और नंद कुमार मोरे ने उक्त विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। 1990 के बाद मराठी उपन्यास ने आधुनिकता में परख के लिए एक वास्तविक दृष्टिकोण की स्थापना की। देशीवाद की विशेषताओं को कृष्णात खोत, रमेश इंगले, राजन गवास, गणेश अवटे तथा श्री नितिन रिंधे के उपन्यासों में देखा जा सकता है। श्री नंद कुमार मोरे ने श्याम मनोहर, विलास सारंग, अनिळ दामबने, मकरंद साठे तथा विश्राम गुप्ते के उपन्यासों में देशीवाद को रेखांकित किया।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता डॉ. केशव एम. सदरे ने की। डॉ. सुषमा कारोगळ एवं डॉ. प्राची गुर्जर पाध्ये ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. सुषमा कारोगळ ने देशीवाद और साहित्य पर गुजराती में अपने विचार रखे तथा डॉ. प्राची गुर्जर पाध्ये ने महाश्वेता देवी के उपन्यास में देशीवाद की पड़ताल की। श्री सुरेश द्वादशिवर ने समापन वक्तव्य दिया। मराठी विभाग के डॉ. प्रमोद मुंघटे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उरुब जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

3-4 सितंबर 2015, तिरुर, केरल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा श्री शंकराचार्य यूनिवर्सिटी ऑफ़ संस्कृत के क्षेत्रीय केंद्र, तिरुर के सहयोग से उरुब की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन 3-4 सितंबर 2015 को यूनिवर्सिटी के नीला सभागार में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महाळिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए उरुब के योगदान को रेखांकित किया। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य श्री के. एस. रविकुमार ने अपने आरंभिक वक्तव्य में उरुब के व्यक्तित्व एवं योगदान की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने पोन्नन कलारी के गठन पर उरुब के साथ संबंध पर प्रकाश डाला। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया और उरुब के साथ के अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने कहा कि उरुब ने मलयाळम् साहित्य के इतिहास में अपनी अद्वितीय गरिमा, दया और लालित्य से दिग्गज लेखकों को पीछे छोड़ दिया। मलयाळम्

बाएँ से दाएँ : श्री एलनकोडे लीलाकृष्णन, श्री सी. राधाकृष्णन् तथा अन्य

यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री के. जयकुमार ने अपने बीज वक्तव्य में उरुब के लेखन शैली, संगीत लेखन, सौंदर्य मूल्य और काव्य संवेदनाओं की अनूठी विशेषताओं के बारे में बात की। श्री शंकराचार्य यूनिवर्सिटी ऑफ़ संस्कृत के कुलपति श्री एम. सी. दिलीप कुमार ने सत्र की अध्यक्षता की और उरुब की सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक क्षेत्र में योगदान के बारे में बात की। उन्होंने यह भी कहा कि उरुब वास्तव में एक इंसान थे और उन्होंने इंसानियत को महत्त्व दिया। सत्रांत में मलयाळम् विभाग के श्री उन्नीकृष्ण पिल्लै ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता काळिकट विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र के श्री पी. के. पोक्कर ने की। श्री पोक्कर ने कहा कि उरुब का लेखन आधुनिकता और आधुनिक संवेदनशीलता को प्रतिबिंबित करता है। श्रीमती पी. पद्मिनी ने उरुब के लेखन में परिवार की अवधारणा विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि उरुब के उपन्यास और कहानियों में महिलाओं के चरित्र का सशक्त चित्रण किया गया है।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध आलोचक श्री के. पी. शंकरन ने की। श्री लिसी मैथ्यू, श्री प्रदीप पापिरीक्कुन्नू और श्री सी. पी. बीजू ने क्रमशः 'उरुब के लेखन में दूरस्थ अवधारणाएँ' 'उरुब की फ़िल्में' और 'उरुब की कहानियाँ' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री शंकरन ने कहा कि उरुब ने धारावाहिक लेखन की शुरुआत की।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध विद्वान, नाटककार एवं चित्रपट लेखक श्री एन. शशिधरण ने की। श्री सुनील पी. एवं श्री सुजा सुसन जॉर्ज ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री शशिधरण ने कहा कि उरुब ने समाज में हाशिये पर खड़े वर्ग को आवाज़ दी। श्री सुनील ने कहा कि उरुब के लेखन ने इतिहास के नए स्वरूप प्रस्तुत किए। श्री सुसान जॉर्ज ने कहा कि उरुब एक बहुत अच्छे इंसान थे और उनका लेखन उनके मानवीय दृष्टिकोण का प्रतिबिंब है।

लब्धप्रतिष्ठ मलयाळम् लेखक श्री अकबर कक्कत्तिल चौथे सत्र के अध्यक्ष थे। श्री पी. सुरेंद्रन तथा एल. सुषमा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री अकबर ने कहा कि उरुब ने अपने लेखन में धर्म और समुदायों की बाधाओं से परे मानवीय मूल्यों पर प्रकाश डाला है। एल. सुषमा की दलील थी कि साहित्यिक इतिहास उरुब की कभी उपेक्षा नहीं कर सकता और उनका अपना ही स्थान और समय है।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री उन्नीकृष्ण पिल्लै ने की। उन्होंने कहा कि उरुब एक महान व्यक्ति थे और कुछ लेखकों को अपने जीवन में ही बहुत कुछ मान्यताएँ मिल जाती हैं, लेकिन उनके बाद उन मान्यताओं पर समय की गर्द पड़ जाती है। श्री सी. वी. बालकृष्णन ने समापन वक्तव्य दिया। अंत में श्रीमती रुक्मणी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'तमिऴ एवं मलयाळम् साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद

7 सितंबर 2015, त्रिवेंद्रम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा त्रिवेंद्रम तमिऴ संगम के सहयोग से 'तमिऴ एवं मलयाळम् साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन 7 सितंबर 2015 को पी. आर. एस. हाल, तमिऴ संगम, त्रिवेंद्रम में किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. कृष्णस्वामी नाचिमुथु ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया तथा दोनों भाषाओं की वर्तमान प्रवृत्तियों का एक सर्वे प्रस्तुत किया। उन्होंने यह भी कहा कि तमिऴ के विपरीत मलयाळम् में पाठकों की संख्या अधिक है। क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। तमिऴ संगम के अध्यक्ष श्री एम. मुथुरामन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र रचनात्मक साहित्य पर आधारित था, जिसमें कवि श्री सुकुमारन ने तमिऴ कविता की प्रवृत्ति के बारे में बात की। उन्होंने महसूस किया कि आधुनिक तमिऴ कविता की भाषा ने एक मानक प्राप्त कर लिया है और नारीवाद, दलितवाद आदि अनगिनत विषयों से सरोकार कर रही है। डॉ. सी. आर. प्रसाद ने समकालीन मलयाळम् कविता के बारे में बात की। ऐसा लगता है मलयाळम् अभी भी तमिऴ की तुलना में परंपरागत रूपों के साथ अधिक व्यवहार करती है। डॉ. के. एस. रवि कुमार ने मलयाळम् कहानियों के बारे में बात की जबकि डॉ. नयनार ने तमिऴ कहानियों की बात की। मलयाळम् और तमिऴ कहानियाँ आम नागरिकों के नैतिक संकट को चित्रित कर रही हैं।

द्वितीय सत्र मलयाळम् उपन्यास की प्रवृत्तियों पर आधारित था तथा सत्र के अध्यक्ष डॉ. जॉर्ज ओनक्कूर थे। उन्होंने भूमंडलीकरण द्वारा पोषित किए जा रहे उपभोक्ता समाज के बारे में मलयाळम् उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक अधोपतन की प्रवृत्ति की आलोचना की।

डॉ. आनंद कुमार ने आधुनिक प्रवृत्तियों की समाजवादी यथार्थवाद से शुरू होने वाले उत्तर आधुनिकता के बारे में जानकारी दी। तमिऴ एवं मलयाळम् बाल साहित्य के बारे में डॉ. सेतुपथी एवं डॉ. एस. आर. लाल ने बात की।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. के. नाचिमुथु ने की तथा श्री नीळ पद्मनाभन ने समापन वक्तव्य दिया। *केरल तमिऴ* के संपादक श्री नेल्लई सु. मुथु ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'उत्तर कर्नाटक के साहित्य में पिछड़े तत्त्व' पर परिसंवाद

9 सितंबर 2015, बेल्लारी, कर्नाटक

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा विजयनगर श्री कृष्णदेवराय विश्वविद्यालय, बेल्लारी के सहयोग से 'उत्तर कर्नाटक के साहित्य में पिछड़े तत्त्व' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन 9 सितंबर 2015 को विश्वविद्यालय परिसर में किया गया।

प्रसिद्ध कन्नड लेखक श्री सिद्धरमैया ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री सिद्धरमैया ने आदिवासी समुदाय की संस्कृति के संरक्षण पर बल दिया। ऐसी बहुत-सी जनजातियाँ हैं, जिनकी अपनी पहचान और संस्कृति नहीं है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. टी. एम. भास्कर ने सत्र की अध्यक्षता की और कहा कि साहित्य में इन पिछड़े समूहों का चित्रण होता है, इसलिए जो लेखक आदिवासी समुदाय से आते हैं उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

श्री राजशेखर हालमन जिन्होंने उत्तरी कर्नाटक के साहित्य में जनजातीय विचार पर अपना आलेख प्रस्तुत

किया, कहा कि आदिवासी संस्कृति के विलुप्त होने का कारण है—आदिवासियों का एक समूह दूसरों की तरह जीना चाहते हैं। श्री वेंकटगिरी वी. दलवी ने भी इसी विषय पर बात करते हुए कहा कि कन्नड साहित्य में आदिवासी जीवन का चित्रण नहीं है। श्री विजय बोरट्टी ने भी आदिवासी धारणा पर अपना आलेख प्रस्तुत किया जिसमें लावणी लोकगीतों को रेखांकित किया गया था।

श्री वी. बी. तारकेश्वर ने अपना आलेख 'विविध पिछड़ा समूह' पर प्रस्तुत करते हुए कहा कि संस्कृति हर दिन और समय बदलता है और यह संस्कृति के विलुप्त होने की तरह नहीं है। श्री बसवराज नेल्लीसरी ने भी इसी विषय पर बोलते हुए लोगों से कहा कि जाएँ और आदिवासियों के साथ रहें, उनकी संस्कृति सीखें और उन्हें इसके संरक्षण में मदद करें।

प्रसिद्ध कन्नड लेखक श्री शिवराम शेट्टी जिन्होंने परिसंवाद की अध्यक्षता भी की, ने छात्रों से आग्रह किया कि आज के दिन की चर्चा को अपने जीवन और राष्ट्र में उतारें।

'मलयाळम् कविता का पाठ एवं प्रतिबिंब' विषयक परिसंवाद

12 सितंबर 2015, कालिकट

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु एवं अन्वेषी महिला काउंसलिंग सेंटर की पत्रिका *संघदिथा* के सहयोग से मलयाळम् कविता पाठ एवं प्रतिबिंब विषयक परिसंवाद का आयोजन शिक्षा सदन हॉल, कालिकट में 12 सितंबर 2015 को किया गया। विभिन्न कॉलेजों से चुनी हुई उभरती महिला कवयित्री-छात्राओं को इस कार्यक्रम हेतु आमंत्रित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु की सुश्री जयंती ने प्रतिभागियों अतिथियों का स्वागत किया। परिसंवाद की संयोजिका सुश्री चारुलता ने आरंभिक वक्तव्य में दिसंबर 2010 में अपनी स्थापना के बाद से हर महीने पत्रिका के निर्बाध प्रकाशन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

परिसंवाद का उद्घाटन प्रसिद्ध मलयाळम् कवयित्री एवं अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल की सदस्य श्रीमती सावित्री राजीवन ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में कविता के बारे में टिप्पणी करते हुए इतिहास के विभिन्न युगों में कविता की भूमिका को रेखांकित किया।

मलयाळम् लेखिका डॉ. टी. वी. सुनीता ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि केरल के इतिहास में इस प्रकार का परिसंवाद पहली बार महिलाओं द्वारा, महिलाओं के लिए आयोजित हो रहा है। उन्होंने हर किसी को याद दिलाया कि यह केवल महिलाओं की नारीवादी पत्रिका द्वारा आयोजित किया गया है।

संघदिथा की प्रबंध संपादक एवं अन्वेषी की अध्यक्ष सुश्री के. अजीता ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में इस बात पर संतोष व्यक्त किया कि इस परिसंवाद में उभरती लेखिकाओं को स्थान दिया गया है। सत्रांत में अन्वेषी की सचिव सुश्री सृजा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मलयाळम् के विद्वान श्री कलपेता नारायणन ने की तथा पुरुष-स्त्री संबंधों की बात की। उन्होंने कहा कि क्लासिकी कवि कुमारासन ने शक्तिहीनों की भाषा को समझा था। सुश्री वी. एम. गिरिजा ने क्लासिकी मलयाळम् कवि बालमणि अम्मा की कविताओं के बारे में बात करते हुए उन्हें सबसे साहसी लेखिका बताया। डॉ. पी. एम. गिरीश ने कविता की भाषा विज्ञान की बात करते हुए कहा कि कैसे एक कवि की भाषा में रूपक और लक्षणालंकार एक अलग चित्रमान प्रस्तुत करते हैं।

भोजनोपरांत सत्र में सुश्री उषा कुमारी ने 'नई कविताएँ नई कल्पनाएँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री गिरिजा पपेक्कर ने नारी होने के नाते प्रकाशन में होनेवाली कठिनाइयों को साझा किया। सुश्री शीबा दिवाकरण ने भी अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया।

'आधुनिक मैथिली साहित्य एवं पुनर्जागरण' विषयक संगोष्ठी

13-14 सितंबर 2015, इलाहाबाद (उ.प्र.)

साहित्य अकादेमी और मिथिला सांस्कृतिक संगम, इलाहाबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में 13-14 सितंबर 2015 को इलाहाबाद में 'आधुनिक मैथिली साहित्य एवं पुनर्जागरण' विषयक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीशचंद्र त्रिपाठी ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने मैथिली भाषा के माधुर्य एवं प्राचीनता के साथ-साथ इसकी समृद्ध साहित्यिक परंपरा का उल्लेख किया। संगोष्ठी का विषय-प्रवर्तन करते हुए साहित्य अकादेमी में मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. वीणा ठाकुर ने पुनर्जागरण और आधुनिकता को परिभाषित करते हुए इसकी पृष्ठभूमि में मैथिली साहित्य का संक्षिप्त आकलन प्रस्तुत किया। बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रख्यात मैथिली विद्वान प्रो. वासुकीनाथ झा ने आधुनिक भारतीय भाषा के साथ-साथ मैथिली भाषा एवं साहित्य पर पुनर्जागरण के प्रभाव एवं परिवर्तन को रेखांकित किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए मिथिला सांस्कृतिक परिषद् के अध्यक्ष श्री धरणीधर झा ने मातृभाषा के महत्त्व के साथ-साथ वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला। आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी के विस्तृत गतिविधियों का संक्षेप में उल्लेख किया। सत्रांत में परिषद् की तरफ से श्री अखिलेश झा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संपूर्ण संगोष्ठी चार सत्रों में विभाजित थी, क्रमशः जिनकी अध्यक्षता सर्वश्री रमानंद झा 'रमण', डॉ. प्रभाष कुमार झा, डॉ. योगानंद झा और डॉ. उमारमण झा द्वारा की गई। सत्रों में सर्वश्री अमलेंदुशेखर पाठक, पंकज पराशर, पंचानन मिश्र, योगानंद झा, शंकर देव झा, ताराकांत झा, नवीन चौधरी, जयशंकर मिश्र, मंजर सुलेमान, अशोक अविचल और श्रीमती रेवती मिश्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रस्तुत आलेखों में पुनर्जागरण कालीन विभिन्न मैथिली विद्वानों, यथा : गंगानाथ झा, अमरनाथ झा, जयकांत मिश्र, उमेश मिश्र, जीवन झा और सीताराम झा की साहित्यिक कृतियों को मूल्यांकित करते हुए उनके अवदान को रेखांकित किया गया। सत्रों का संचालन डॉ. वीणा ठाकुर ने किया तथा संगोष्ठी के अंत में सभी प्रतिभागियों और साहित्य-प्रेमियों के प्रति सफल आयोजन के लिए औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'कथेतर गद्य' पर संगोष्ठी

18-19 सितंबर 2015, उदयपुर

साहित्य अकादेमी और मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के हिंदी विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'कथेतर गद्य' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी 18-19 सितंबर 2015 को उदयपुर में संपन्न हुई।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी थे। आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने दिया। प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि कल्पना के बिना कुछ भी रचनात्मक नहीं होता, लेकिन कथेतर गद्य में कल्पना का न्यूनतम इस्तेमाल होता है। आधुनिक साहित्य का दौर ऐसा है, जहाँ समय का दबाव है, इसलिए साहित्यकारों ने लघु विधाओं का चयन किया। वर्तमान में प्रकाशन उद्योग से प्राप्त आँकड़ों से आश्चर्यजनक निष्कर्ष प्राप्त होता है। आँकड़े बताते हैं कि सबसे ज़्यादा पाठक कथेतर गद्य के ही हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि पाठकों की सच्ची घटनाओं के प्रति जिज्ञासा बढ़ी है। पाठक साहित्य में कल्पना और कथा के इतर जो लिखा

जा रहा है, उसके प्रति आकर्षित हुआ है। उन्होंने कहा कि कथेतर गद्य अपनी रचनात्मकता के कारण एक अलग क्षेत्र का निर्माण करता है। कथेतर गद्य में लेखक का स्वभाव और चुनाव दोनों ही महत्त्वपूर्ण है।

संगोष्ठी में आरंभिक वक्तव्य देते हुए प्रो. सूर्यप्रकाश दीक्षित ने कहा कि कथेतर गद्य आधुनिक युग की अनेक विधाओं का आधार है। उन्होंने बताया कि हमारे समय में शिक्षा, व्यापार-व्यवसाय, विज्ञापन-प्रचार, जनसंपर्क आदि में गद्य के विविध आयाम देखने को मिलते हैं। उन्होंने डायरी लेखन, पत्र लेखन, समीक्षा साहित्य, नाटक, लोक नाट्य आदि अनेक विधाओं के संदर्भ में रचनात्मक लेखन की प्रासंगिकता का उल्लेख किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. इंद्रवर्धन त्रिवेदी ने साहित्यकारों के इस सम्मेलन को नासिक के कुंभ के समान लघु कुंभ की संज्ञा दी। उन्होंने अकादेमी के इस आयोजन को दक्षिण राजस्थान के रचनाकारों, शोधार्थियों और साहित्यप्रेमियों के लिए अत्यंत लाभदायक बताया। उन्होंने कथेतर गद्य के विकास के लिए विस्तृत कार्ययोजना बनाए जाने की आवश्यकता जताई।

उद्घाटन सत्र की विशिष्ट अतिथि सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय की अधिष्ठाता प्रो. फरीदा शाह ने अपने उद्बोधन में विश्व अर्थव्यवस्था में रचनात्मकता के प्रभावी पक्षों पर चर्चा की।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में ललित निबंध को केंद्र में रखकर विचार-विमर्श किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार और आलोचक श्री नवल किशोर ने कहा कि समय के साथ विधाएँ रूपांतरित होती रहती हैं। आज के समाज में विमर्श और रचनात्मकता का स्थान कम होता जा रहा है। हमार समाज बहुत असहिष्णु हो गया है। असहिष्णुता की संस्कृति रचनात्मकता के लिए संकटपूर्ण स्थिति है। इस सत्र में श्री श्यामसुंदर दुबे और श्री अरुणेश नीरन ने भी अपने आलेखों का पाठ किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन का पहला सत्र श्री सतीश जायसवाल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में श्री अमृतलाल वेगड़ ने यात्रा वृतांत लेखन के साथ ही यात्रा के रोमांच और विविध अनुभवों के विषय में चर्चा की। उन्होंने कहा कि जो शब्दों से प्यार करता है वह भाषा की मिठास की रक्षा करता है। भाषा की मिठास के कारण ही प्रेमचंद जैसा लेखक और मैथिलीशरण गुप्त जैसा कवि आज भारत के जनमन में बसता है। उन्होंने अपनी नर्मदा परिक्रमा के दौरान मानवीय संघर्ष और साहस के अनेक संस्मरण सुनाए। उन्होंने साधारण आदिवासियों और ग्रामीणों के मध्य भी साहित्यकारों की लोकप्रिय छवि का भी स्मरण दिलाया। इस सत्र में आलेख पाठ करते हुए श्री दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने यात्रावृतांत के प्राचीन और आधुनिक सरोकारों का जिक्र किया। उन्होंने मानवीय जिजीविषा को ही साहसिक और रोमांचक यात्राओं का मुख्य कारण बताया।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री सतीश जायसवाल ने पत्रकार और साहित्यकार की रचनात्मक प्रतिबद्धता को अनेक उदाहरणों के माध्यम से व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यात्रा वृतांत ऐसी विधा है, जो हमें रचनाकार की आँखों से दुनिया के दर्शन कराती है।

संगोष्ठी के तृतीय सत्र में आत्मकथा, जीवनी और संस्मरण साहित्य पर विचार-विमर्श किया गया। श्री गजेंद्र पाठक ने मीरां की कविता की चर्चा करते हुए उसे हिंदी साहित्य में आत्मकथा का पहला संदर्भ बताया। उन्होंने कहा कि अपने मन की व्यथा का चित्रण कर मीरां ने आधुनिक स्त्री के समक्ष भी आत्मकथा लेखन का मार्ग प्रशस्त किया है। आज की स्त्री की व्यथा कहीं न कहीं मीरां के जीवन की व्यथा से मेल खाती है। उन्होंने दलित आत्मकथाओं को भी समय की जरुरत बताया। श्रीमती रंजना अरगड़े ने संस्मरण साहित्य की गरिमा की रक्षा करने की और ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा संस्मरण साहित्य के नाम पर व्यक्तिगत राग-विराग को स्वर देना अनुचित है। श्री राजकुमार ने महात्मा गाँधी की आत्मकथा *सत्य के साथ मेरे प्रयोग* को आदर्श आत्मकथा बताया। उन्होंने कहा की गाँधी के मानव से

महात्मा बनने की कथा है और यह मनुष्य मात्र के संघर्ष का आख्यान है।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रसिद्ध कथाकार श्री गोविंद मिश्र ने कहा कि साहित्य हाशिए पर चला गया है यह कह-कहकर परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। संवेदनशील पाठक की प्रश्नाकुलता कभी भी साहित्य को ख़त्म नहीं होने देगी। जब जब मनुष्य अपने समय और समाज के प्रति संवेदनशल होकर सवाल उठाएगा, उसे जवाब की तलाश में साहित्य तक आना ही होगा।

डायरी, साक्षात्कार, रेखाचित्र और पत्र साहित्य पर केंद्रित चतुर्थ सत्र में साक्षात्कार विधा पर श्री महावीर अग्रवाल ने प्रकाश डाला। उन्होंने साक्षात्कार लेने के अपने अनुभवों और साहित्यकारों के संस्मरणों के माध्यम से सवाल-जवाब की इस विधा के रोचक पक्षों को उजागर किया। श्री रमाशंकर द्विवेदी ने पत्र-साहित्य की प्रासंगिकता पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि विशिष्ट व्यक्तियों के पत्र देश के सम-सामयिक इतिहास की महत्त्वपूर्ण निधि हैं, इनकी रक्षा की जानी चाहिए। सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. हेतु भारद्वाज ने कहा कि हम अपने गद्य साहित्य के पिछड़ेपन के कारण ही विदेशी ताक़तों के ग़ुलाम हुए। उन्होंने मुस्लिम और फिर यूरोपीय ताक़तों का उदाहरण देते हुए बताया कि अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी का गद्य हिंदी से अधिक पुराना है और यही भारत के कमज़ोर और ग़ुलाम होने का एक प्रमुख कारण भी है।

संगोष्ठी का अंतिम सत्र 'मीडिया के गद्य' पर केंद्रित था। सत्र में उपन्यासकार श्री प्रदीप सौरभ ने कहा कि मीडिया की भाषा को कथेतर गद्य के दायरे में नहीं रखना चाहिए। मीडिया में जो भी लिखा जा रहा है, वह आखिरकार कहानी की शक्ल में ही लिखा जाता है। पत्रकार 'न्यूज़ स्टोरी' लिखते हैं, अतः मीडिया के लेखन को कथा लेखन से अलग नहीं किया जा सकता। भाषा के बदलाव पर उन्होंने कहा कि भाषा अपने परिवेश से जुड़कर ही जीवित रहती है। श्रीमती भारती गोरे ने मीडिया में अंग्रेज़ी शब्दों के बढ़ते प्रयोगों पर चिंता जताई। अध्यक्षता कर रहे श्री कृष्ण कुमार शर्मा ने कहा कि आम जनता साहित्य की अपेक्षा मीडिया और फ़िल्मों की भाषा से अधिक प्रभावित होती है। कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि हिन्दी को अंग्रेज़ी के वर्चस्व से कोई चुनौती नहीं मिल रही है। विगत कुछ वर्षों में हिंदी का प्रचार और प्रभाव बढ़ा है और हिंदीभाषी क्षेत्र के विशाल बाज़ार और उपभोक्ता संबंधों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संगोष्ठी के अंतिम सत्र में हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. माधव हाडा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'डोगरी साहित्य में अवचेतना' पर परिसंवाद

19 सितंबर 2015, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश

साहित्य अकादेमी द्वारा 19 सितंबर 2015 को डी.ए.वी. कन्या महाविद्यालय, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश में 'डोगरी साहित्य में अवचेतना' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताते हुए कहा कि अकादेमी का उद्देश्य विभिन्न भाषा क्षेत्रों के सुदूर स्थलों तक पहुँचने का भी है, ताकि उत्कृष्ट साहित्य को प्रचार-प्रसार मिले। डोगरी-हिंदी के प्रतिष्ठित लेखक तथा साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. प्रत्यूष गुलेरी की अध्यक्षता में संपन्न इस परिसंवाद में बीज भाषण प्रो. ललित मगोत्रा द्वारा प्रस्तुत किया गया, जो अकादेमी में डोगरी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक हैं। परिसंवाद में डॉ. बंसी लाल तथा डॉ. निर्मल विनोद ने क्रमशः 'डोगरी कविता एवं अवचेतना' तथा 'डोगरी उपन्यास एवं अवचेतना' विषयक आलेख प्रस्तुत किए। छत्रपाल की अनुपस्थिति में उनके द्वारा प्रेषित आलेख 'डोगरी कहानी एवं अवचेतना' का पाठ भी किया गया। कार्यक्रम के अंत में के.एल.बी.डी.ए.वी. कन्या महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. एन.डी. शर्मा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'राजभाषा कार्यान्वयन : चुनौतियाँ एवं समाधान' विषयक संगोष्ठी

21 सितंबर 2015, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 21 सितंबर 2015 को अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 'राजभाषा कार्यान्वयन : चुनौतियाँ एवं समाधान' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी को उद्घाटन सत्र सहित तीन सत्रों में विभाजित किया गया था।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। आरंभिक वक्तव्य संस्कृति मंत्रालय के राजभाषा निदेशक श्री वी.पी. गौड़ ने दिया। मुख्य अतिथि के रूप में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के सचिव श्री गिरीश शंकर उपस्थित थे। आरंभ में डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने स्वागत भाषण किया।

श्री गिरीश शंकर ने अपने भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी साहित्यिक भाषा से अलग है जिस भाषा का प्रयोग राजभाषा के रूप में करते हैं वह तकनीकी भाषा है, न बोलचाल की और न ही साहित्य की।

श्री वी. पी. गौड़ ने अपने आरंभिक भाषण में राजभाषा हिंदी की दशा-दिशा को रेखांकित करते हुए कहा कि हिंदी मानवीय एकता, सांस्कृतिक एकता की भाषा है; लेकिन हमें अनुवाद की भाषा से बचना होगा, सीधी-सरल हिंदी का प्रयोग आवश्यक है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो. तिवारी ने कहा कि हमारे भीतर राष्ट्रीय भावना की कमी है। हमारा देश वैविध्यपूर्ण है, पर भाषा तो एक होनी चाहिए। झंडा एक है तो भाषा भी एक होनी चाहिए। हमें हिंदी लिखने-बोलने का अभ्यास करना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम पखवाड़े मनाते हैं और आत्मतोष प्राप्त कर लेते हैं बस।

प्रथम सत्र 'राजभाषा कार्यान्वयन : दशा और दिशा' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रो. केसरीलाल वर्मा ने की। इस सत्र में भाषा विज्ञानी डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी, केंद्रीय

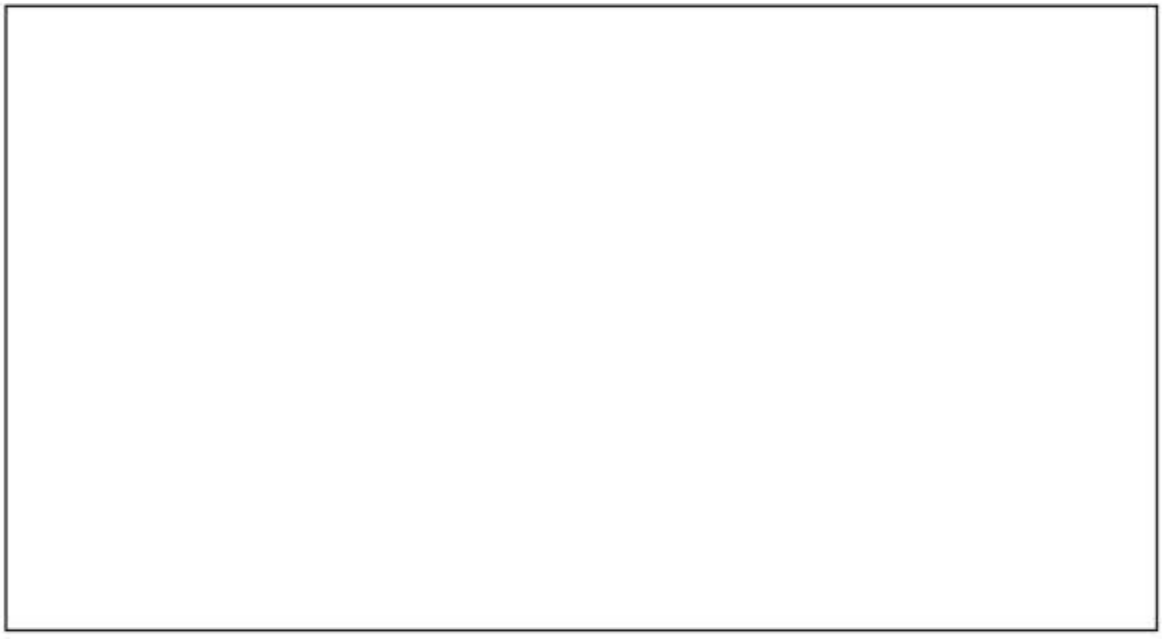

बाएँ से दाएँ : डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, डॉ. के. श्रीनिवासराव, श्री वेदप्रकाश गौड़ तथा डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश

हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक डॉ. जयप्रकाश कर्दम तथा ललित कला अकादेमी के संपादक एवं हिंदी आलोचक डॉ. ज्योतिष जोशी ने अपने विचार व्यक्त किए।

द्वितीय सत्र 'राजभाषा कार्यान्वयन : विविध आयाम' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी लेखक तथा केंद्रीय हिंदी निदेशाालय के पूर्व निदेशक डॉ. गंगा प्रसाद विमल ने की।

इस सत्र में डॉ. ए. अरविंदाक्षन, डॉ. रीता रानी पालीवाल तथा डॉ. चांदम इंगो सिंह ने क्रमशः दक्षिण भारत, उत्तर भारत तथा पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के नराकास (मध्य क्षेत्र) के सभी सदस्य कार्यालयों को आमंत्रित किया गया था। राजभाषा दिवस/सप्ताह के कार्यक्रमों के बावजूद अनेक कार्यालयों ने अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज कराई।

संगोष्ठी का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया, जो अकादेमी में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रभारी हैं।

'मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य' पर संगोष्ठी

22-23 सितंबर 2015, जोधपुर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं राम्मत के सहयोग से 'मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य' विषयक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 22-23 सितंबर 2015 को टॉउन हॉल आर्ट गैलरी, जोधपुर में किया गया। उद्घाटन सत्र में अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुन देव चारण ने अपने आरंभिक व्याख्यान में इस बात पर बल दिया कि सर्वप्रथम युवा शोधार्थियों को राजस्थान की हज़ारों वर्षों पुरानी परंपराओं से स्वयं का परिचय कराना चाहिए। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री देव कोठारी ने राजस्थान की विविधतापूर्ण मध्यकालीन साहित्यिक रचनाओं के बारे में बात की तथा उस काल के हज़ारों वर्ष पुराने दोहों एवं अन्य सामग्रियों की ओर भी संकेत किया। अपने बीज भाषण में प्रो. चंद्रप्रकाश देवल ने कहा कि जहाँ तक संरक्षण का संबंध है, उसमें अब तक राजस्थान सबसे आगे है तथा अब यही सही समय है कि इस उपलब्धि को सामने लाया जाए। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. गजसिंह राजपुरोहित ने की तथा सर्वश्री गजदान चारण, श्याम सुंदर भारती एवं श्रीमती मीनाक्षी बोराना ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री कुंदन माली ने की तथा डॉ. राजेंद्र बारहठ, डॉ. जगदीश गिरि एवं डॉ. प्रकाश अमरावत ने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. नरपटसिंह सोढ़ा ने की तथा सर्वश्री गजसिंह राजपुरोहित, गिरधरदान रत्न एवं राजेंद्र कुमार व्यास ने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री मंगत बादल ने की तथा कवि डॉ. इदान सिंह भाटी ने डिंगल कविता के पुनरुत्थान से संबंधित कई दृष्टांत प्रस्तुत किए। डॉ. धनंजय अमरावत ने मध्यकालीन चारणों की धार्मिक प्रवृत्ति पर आलेख प्रस्तुत किया तथा सर्वश्री शीन काफ़ निज़ाम, ज़हूर खान, सोहनदान चारण एवं फ़ारूक अफ़रीदी प्रतिभागी के रूप में उपस्थित थे। समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. किरण नाहटा ने की।

'नेपाली गीति साहित्य' पर परिसंवाद

24 सितंबर 2015, गेजिंग (पश्चिमी सिक्किम)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और पश्चिमी सिक्किम साहित्य प्रकाशन, गेजिंग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नेपाली गीति साहित्य' पर एक परिसंवाद का आयोजन 24 सितंबर 2015 को गेजिंग में किया गया।

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के नेपाली भाषा परामर्श मंडल के सदस्य श्री प्रद्युम्न श्रेष्ठ ने की, जबकि बीज भाषण साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्री थिरू प्रसाद नेपाल ने दिया। आरंभ में अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के

संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने स्वागत भाषण देते हुए नेपाली भाषा में अकादेमी द्वारा संचालित गतिविधियों के बारे में बताते हुए गीति साहित्य के परिदृश्य पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। श्री नेपाल ने नेपाली में गीति साहित्य सृजन की परंपरा को काफ़ी समृद्ध बताया और इसकी विकास-यात्रा को रेखांकित किया। श्री श्रेष्ठ ने कहा कि गीत हमारा जीवन है। गीत की अनुपस्थिति से मनुष्य क्रूर और निष्ठुर बन जाता है।

सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने बताया कि किस प्रकार अकादेमी इसके लिए प्रयत्नशील है कि सुदूर क्षेत्रों में भी पहुँचकर साहित्य प्रेमियों को श्रेष्ठ भारतीय साहित्य उपलब्ध कराया जाए।

परिसंवाद का विचार सत्र प्रख्यात नेपाली लेखक और नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य श्री भूपेंद्र अधिकारी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में श्री सचेन राई, श्री विजय कुमार सुब्बा और श्री कमल रेग्मी ने क्रमशः 'स्वतंत्रता पूर्व का भारतीय नेपाली गीति साहित्य', 'भारतीय नेपाली गीति साहित्य की वर्तमान स्थिति' तथा 'स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली गीति साहित्य' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए। विद्वानों ने अपने आलेखों में महत्त्वपूर्ण नेपाली गीतों को संदर्भित किया, जिनका उन्होंने सस्वर पाठ भी किया।

'बोडो का कथेतर गद्य : अतीत, वर्तमान एवं भविष्य' पर संगोष्ठी

25 सितंबर 2015, दुधनोई, असम

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 25 सितंबर 2015 को दुधनोई कॉलेज, दुधनोई में 'बोडो का कथेतर गद्य : अतीत, वर्तमान एवं भविष्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेमानंद मसाहारी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री कामेश्वर ब्रह्म ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। बोडो साहित्य सभा के उपाध्यक्ष श्री विशेश्वर बसुमतारी ने बीज वक्तव्य दिया। बोडो साहित्य सभा के सचिव श्री कमलाकांत मसाहारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में श्रीमती इंदिरा बोरो एवं श्रीमती स्वर्णप्रभा चैनारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री भूपेन नार्ज़ारी ने अध्यक्षता की। दूसरे सत्र में श्री जीवेश्वर कोच एवं श्री फुकन बसुमतारी ने आलेख प्रस्तुत किए, जबकि डॉ. अनिल बोरो ने सत्र की अध्यक्षता की।

'राजस्थान की लोक-गाथा' पर परिसंवाद

25 सितंबर 2015, श्रीडूंगरगढ़

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ के सहयोग से 'राजस्थान की लोक-गाथा' विषयक परिसंवाद का आयोजन 25 सितंबर 2015 को संस्कृति भवन सभागार, श्रीडूंगरगढ़ में किया गया। परिसंवाद में डॉ. सोहनदान चारण मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, जबकि वक्ताओं में सम्मिलित थे—पृथ्वीराज रतनू, भँवर सिंह सामौर, रामेश्वर गोदारा एवं अन्य।

'भारतीय नेपाली नाटक' पर परिसंवाद

26 सितंबर 2015, कालिम्पोङ

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, कालिम्पोङ के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय नेपाली नाटक' पर एक परिसंवाद का आयोजन 26 सितंबर 2015 को वर्शिप सेंटर, कालिम्पोङ में किया गया।

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता नेपाली साहित्य अध्ययन समिति के अध्यक्ष श्री ज्ञान सुतार ने की। आरंभ में स्वागत भाषण करते हुए साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने विषय की गंभीरता की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया। बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए सिक्किम विश्वविद्यालय के संकायाध्यक्ष (डीन) ने भारतीय नेपाली नाटक की विकास यात्रा को रेखांकित करते हुए इस बात पर बल दिया कि नेपाली नाट्यालोचकों को स्वयं का नाट्यशास्त्र विकसित करना चाहिए, क्योंकि वे इसके लिए अन्य भाषाओं पर आश्रित हैं। सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए, अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं, विशेषकर नेपाली भाषा एवं साहित्य के विकास के क्षेत्र में अकादेमी द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताया।

परिसंवाद के विचार सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ नेपाली नाट्यकार श्री नंद हाङ्खिम ने की। इस सत्र में श्री मुक्ति प्रसाद उपाध्याय, डॉ. कृष्णराज घतानी और डॉ. ममता लामा ने क्रमशः 'भारतीय नेपाली नाटक में पौराणिक संदर्भ', 'भारतीय आधुनिक नेपाली नाटक में प्रयोगात्मक पक्ष का चित्रावलोकन' तथा 'कालेबुङ के नेपाली नाट्यकार' विषयक अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्रों का संचालन नेपाली अध्ययन समिति के महासचिव श्री बलभद्र शर्मा ने किया।

'आधुनिक असमिया नाटक : समकालीन भारतीय नाटक के परिप्रेक्ष्य में' पर परिसंवाद

26 सितंबर 2015, कोकराझार, असम

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा बोडोलैंड विश्वविद्यालय के असमिया विभाग के सहयोग से 26 सितंबर 2015 को 'आधुनिक असमिया नाटक : समकालीन भारतीय नाटक के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

बोडोलैंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हेमंत कुमार बरुआ ने दीप प्रज्वलित कर परिसंवाद का उद्घाटन किया। अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. करबी डेका हज़ारिका ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. नवज्योति शर्मा ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा नॉर्थ ईस्ट हिल्स यूनिवर्सिटी के डॉ. हितेंद्र कुमार मिश्र ने बीज वक्तव्य दिया।

प्रथम सत्र में डॉ. जगदीश पातगिरी, डॉ. नरेन पातगिरी एवं डॉ. इस्माइल हुसैन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता सत्यकाम बरठाकुर ने की। द्वितीय सत्र में विनीता बोरा देवचौधुरी, डॉ. इंदिरा बोरो, डॉ. हेमंत कुमार दास और श्रीमती रेणु देवनाथ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा डॉ. भबेंद्र कलिता ने सत्र की अध्यक्षता की।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि बोडोलैंड विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ. शेखर ब्रह्म थे तथा सत्र के अध्यक्ष डॉ. हितेंद्र कुमार मिश्र थे। समापन वक्तव्य डॉ. जगदीश पातगिरी ने दिया।

'समकालीन मणिपुरी कविता' पर संगोष्ठी

26-27 सितंबर 2015, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी के पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय एवं मणिपुर सांस्कृतिक मंच के संयुक्त तत्त्वावधान में 'समकालीन मणिपुरी कविता' विषयक द्विवसीय संगोष्ठी का आयोजन 26-27 सितंबर 2015 को मणिपुर हिंदी परिषद सभागार, इंफ़ाल में किया गया। कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने उपस्थित सभी लोगों का स्वागत करते हुए उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. एच. बिहारी सिंह से सभी का परिचय कराया। श्री एन. खगेंद्र सिंह ने संगोष्ठी की विषयवस्तु से सभी को अवगत कराया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सलाम वीरेंद्र सिंह ने की। प्रो. एच. बिहारी सिंह ने अपने व्याख्यान में मणिपुरी साहित्य की विपुलता तथा युवा एवं भावी

साहित्यकारों को प्रेरित करने की महत्ता पर बात की। सांस्कृतिक मंच की महासचिव श्रीमती च. सेनिता देवी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. ख. कुंज सिंह ने की। इस सत्र में डॉ. शरतचंद्र लोङ्जोंबा, श्री के. राधाकुमार तथा डॉ. एन. एकाक्षिणी देवी ने क्रमशः 'समकालीन मणिपुरी कविता की प्रवृत्तियाँ', 'इलाङ्बम नीलकांत की कविताओं में आधुनिकतावादी तत्त्व', 'अंशगबाम मीनकेतन के बिदाई आशीर्वाद एवं अशईबागी नित्यपद की शैली एवं शब्द-योजना' पर आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. एन. खगेंद्र सिंह ने की। इस सत्र में श्री थ. तरुण कुमार, श्री नंद निंगोमबम तथा प्रो. एच. ननी कुमार ने क्रमशः 'लेशराम, समरेंद्र की कविताओं में व्यंग्य एवं सजीव भाषण का प्रयोग', 'वीरेन की कविताओं की विषयवस्तु एवं भाषा', तथा 'अरमबाम ओंगबी मेमचोबी की कविताओं पर लोकसाहित्य का प्रभाव' पर आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के दूसरे दिन, तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री ख. प्रकाश सिंह ने की। इस सत्र में डॉ. के. विजयलता, डॉ. एम. तुलेश्वरी, श्री ओ. कुंज तथा श्री ख. इनाओबी ने क्रमशः 'थङ्जाम इबोपिशाक की कविताओं में नवीन पहलू', 'आर.के. मधुबीर की कविताओं की विषयवस्तु एवं काव्यात्मकता', 'आर.के. भुवनसना की कविताओं की संरचना' एवं 'एस. लानचेनवा मैतेइ की कविताओं में पौराणिकता' पर आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता प्रो. राजेन तोईजोंबा ने की, इस सत्र में श्री फ. खेलेंद्र सिंह, श्री एम. राजेश, श्री बुद्धिचंद्र हेईसनाम तथा के. शांतिबाला ने क्रमशः 'वीरेंद्रजीत नाओरेम की कविताओं का आलोचनात्मक अध्ययन', 'रघु लेईशाङ्थेम की कविताओं में विषयवस्तु एवं भाषा', 'नाओरेम विद्यासागर की कविताओं में परंपरा एवं आधुनिकता' तथा 'समकालीन मणिपुरी साहित्य में कविता का महत्त्व' पर आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंत में सांस्कृतिक मंच, मणिपुर के सदस्य श्री नाओरेम अहानजो ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'बोडो कविता में स्वच्छंदतावाद' विषयक संगोष्ठी

27 सितंबर 2015, बीटीएडी, असम

साहित्य अकादेमी के पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय एवं ज्ञानपीठ डिग्री कॉलेज, असम के बोडो विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में इशान च. मसाहारी (1915-2015) की जन्मशतवार्षिकी तथा 'बोडो कविता में स्वच्छंदतावाद' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 27 सितंबर 2015 को किया गया। उद्घाटन सत्र में कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। आरंभिक व्याख्यान प्रो. अनिल बोरो ने दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. अदाराम बसुमतारी ने की। इस सत्र में डॉ. ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र का समाहार बोडो विभाग के शिक्षक संघ के सचिव प्रणव ज्योति नार्ज़ारी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. भूपेन नार्ज़ारी ने की। इस सत्र में डॉ. भौमिक च. बोरो, डॉ. सुनील फुकन बसुमतारी, श्री बिरूपाक्ष गिरि बसुमतारी, श्री नरेश्वर नार्ज़ारी तथा सुश्री रीरूब ब्रह्म ने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री जनिल कुमार ब्रह्म ने की। इस सत्र में डॉ. तुलन मसाहारी, डॉ. राजेंद्र कुमार बसुमतारी, श्री गोगम ब्रह्म कछारी, श्री मिहिर कुमार ब्रह्म तथा सुश्री दीपाली खेरकतरी ने आलेख पाठ किया।

स्वातंत्र्योत्तर नेपाली साहित्य की प्रवृत्तियाँ

27 सितंबर 2015, सिलिगुड़ी

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और नंदी तिवारी स्मृति प्रतिष्ठान, सिलिगुड़ी के संयुक्त तत्त्वावधान में 'स्वातंत्र्योत्तर नेपाली साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन 27 सितंबर 2015 को सिलिगुड़ी में किया गया।

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात नेपाली साहित्यकार श्री एम. बी. प्रधान ने की। आरंभ में स्वागत भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने विषय प्रवर्तन किया। बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रख्यात नेपाली कवि एवं आलोचक डॉ. जीवन नामदुंग ने स्वतंत्रतापूर्व और स्वातंत्र्योत्तर समालोचना की विशिष्टताओं को रेखांकित किया और बताया कि किस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर प्रवृत्तियों में उत्तर-आधुनिकता और उत्तर-संरचनावादी प्रवृत्ति तक का समावेश हो गया है। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री एम. बी. प्रधान ने कहा कि भूमंडलीकरण के इस युग में हमारी भाषा भी दूसरी भाषाओं के प्रभाव में है। सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं, विशेषकर नेपाली भाषा एवं साहित्य के विकास के क्षेत्र में अकादेमी द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताया।

परिसंवाद के विचार सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात नेपाली साहित्यकार और नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. जस योंजन 'प्यासी' ने की। इस सत्र में श्री नरेश चंद्र खाती, श्री जय क्याक्टस, श्री तेजमान बराइली और श्री मेघनाथ छेत्री ने क्रमशः 'कविता के संदर्भ में भारतीय नेपाली आलोचना की स्वातंत्र्योत्तर प्रवृत्तियाँ', 'कथासाहित्य के संदर्भ में भारतीय नेपाली आलोचना की स्वातंत्र्योत्तर प्रवृत्तियाँ', 'नाट्य साहित्य के संदर्भ में भारतीय नेपाली आलोचना की स्वातंत्र्योत्तर प्रवृत्तियाँ' तथा 'भारतीय नेपाली आलोचना की स्वातंत्र्योत्तर प्रवृत्तियाँ' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्रांत में विद्वानों ने श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

'आधुनिक राजस्थानी कहानी' पर परिसंवाद

27 सितंबर, 2015, बीकानेर

साहित्य अकादेमी तथा मुक्ति संस्था, बीकानेर के सहयोग से 'आधुनिक राजस्थानी कहानी' विषयक परिसंवाद का आयोजन 27 सितंबर 2015 को किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री भँवरलाल भ्रमर तथा वक्ताओं में डॉ. अर्जुन देव चारण, श्री मोहम्मद आलोक, श्री रामस्वरूप किशन एवं श्री मधु आचार्य आशावादी उपस्थित थे। दिग्गज रंगमंच कलाकार श्री सुरेश हिंदुस्तानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सर्वश्री हीरालाल हर्ष, सरदार अली कादिहर, आत्माराम भाटी, शमीम बीकानेरी तथा अन्य प्रतिभागियों के रूप में उपस्थित थे।

'तमिलनाडु में उर्दू शायरी' पर परिसंवाद

27 सितंबर 2015, चेन्नै

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा बुख़ारी हॉल, न्यू कॉलेज, चेन्नै में 27 सितंबर 2015 को 'तमिलनाडु में उर्दू शायरी' विषय पर एक-दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने की और उद्घाटन व्याख्यान प्रसिद्ध बुद्धिजीवी श्री मूसा रज़ा ने दिया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों, कवियों, लेखकों तथा श्रोताओं का स्वागत किया और डॉ. सैयद सज्जाद हुसैन ने बीजभाषण दिया। श्री मूसा रज़ा ने इस अवसर पर कहा कि तमिलनाडु में उर्दू शायरी की परंपरा बहुत मज़बूत और भविष्य उज्ज्वल है। उन्होंने कहा कि उत्तर भारत की तरह दक्षिण भारत में भी मेयारी साहित्य लिखा जा रहा है। श्री चंद्रभान ख़याल ने कहा कि चेन्नै में इस परिसंवाद के आयोजन का मक़सद उर्दू साहित्य को प्रोत्साहन देना है और यहाँ के कवियों की

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र का दृश्य

शायरी को दूर-दूर तक पहुँचाना है। सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और तमिलनाडु के साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। आख़िर में साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी ने तमाम श्रोताओं तथा प्रतिभागियों का धन्यवाद किया।

उद्घाटन सत्र के बाद प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री मूसा रज़ा ने की, जिसमें डॉ. के.एच. कलीमुल्लाह और डॉ. एम. सईदुद्दीन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. क़ाज़ी हबीब अहमद ने की, जिसमें डॉ. एम.बी.अमानुल्लाह, डॉ. तैयब ख़िरादी और डॉ. मुज़फ़्फ़रुद्दीन ने अपने आलेख पेश किए।

'मणिपुरी नाटक में जी.सी. तोङब्रा का स्थान' विषयक परिसंवाद

28 सितंबर 2015, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी के पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय एवं मणिपुरी साहित्यिक सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में 'मणिपुरी नाटक में जी.सी. तोङब्रा का स्थान' विषयक परिसंवाद का आयोजन 28 सितंबर 2015 को मणिपुर हिंदी परिषद सभागार, इंफ़ाल में किया गया। कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत करते हुए जी.सी. तोङब्रा के जीवन एवं लेखन पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने अपने व्याख्यान में परिसंवाद के औचित्य पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। अध्यक्षीय भाषण श्री प्रह्लाद शर्मा ने दिया तथा श्री एल. देवेन सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम तथा द्वितीय सत्र के अंतर्गत सर्वश्री ए. एल. गोजेन, रणबीर माउगंग, आई.एस. काङ्जम, आई. तिनकेन, बुद्ध चिङथम एवं एल. दोरेंद्र ने आलेख प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. ई. दीनामणि सिंह ने परिसंवाद का समाहार किया।

दिननाथ शर्मा जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

28 सितंबर 2015, गौहाटी विश्वविद्यालय

साहित्य अकादेमी के पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय एवं गौहाटी विश्वविद्यालय के असमिया विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में दिननाथ शर्मा जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 28 सितंबर 2015 को विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। उद्घाटन सत्र में गौहाटी विश्वविद्यालय के रेक्टर (कुलाधिसचिव) श्री हरिप्रसाद शर्मा ने दीप प्रज्वलित किया।

साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् की सदस्या श्रीमती अरूपा बरुआ ने उद्घाटन व्याख्यान दिया। असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. करबी डेका हज़ारिका ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। गौहाटी विश्वविद्यालय की प्रो. दीप्ति फुकन पातगिरि ने आरंभिक व्याख्यान दिया। प्रतिष्ठित लेखक प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा एवं गौहाटी विश्वविद्यालय की प्रो. तरणी डेका ने बीज भाषण दिया। उद्घाटन सत्र का समाहार गौहाटी विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. कमालुद्दीन अहमद के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। विचार सत्र की

अध्यक्षता उमेश डेका ने की, जिसमें प्रो. तरणी डेका, डॉ. जाह्नवी देवी, डॉ. रेखा रानी देवी, श्री प्रांजल शर्मा वशिष्ठ, श्रीमती सरला सीएल कलिता तथा श्री जयंत पाठक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'भारतीय साहित्यिक इतिहास-लेखन' पर संगोष्ठी

28-29 सितंबर 2015, तिरुपति

साहित्य अकादेमी एवं एस.वी. विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय साहित्यिक इतिहास-लेखन' विषयक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 28-29 सिंतबर 2015 को तिरुपति में किया गया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों, गणमान्यों तथा श्रोताओं का स्वागत करते हुए संगोष्ठी की महत्ता पर संक्षेप में चर्चा की। आरंभिक व्याख्यान में प्रो. हरीश त्रिवेदी ने इतिहास-लेखन के विविध प्रयासों के बारे में बात की तथा इसकी विफलता के कारणों को रेखांकित किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. राजगोपाल ने अकादेमी को एस.वी. विश्वविद्यालय में इस महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी का आयोजन करने के लिए आभार व्यक्त किया। विशिष्ट विद्वान डॉ. इंद्रनाथ चौधुरी ने अपने बीज भाषण में भारत में साहित्य के इतिहास-लेखन का ऐतिहासिक अवलोकन प्रस्तुत किया। प्रो. के. सच्चिदानंदन ने संगोष्ठी की विषयवस्तु से सभी को अवगत कराया। सत्रांत में प्रो. मधुरकांतम नरेंद्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. के. सच्चिदानंदन ने की तथा प्रो. पी. कुसुमा हरिनाथ ने सत्र का संचालन किया, तीन विख्यात विद्वानों प्रो. ई.वी. रामकृष्णन, प्रो. पी.पी. रवींद्रन तथा प्रो. इप्शिता चंदा ने क्रमशः दक्षिण भारत में साहित्यिक इतिहास-लेखन का अवलोकन, मलयाळम् साहित्य का इतिहास-लेखन एवं पूर्वी भारत के साहित्य का इतिहास-लेखन पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र का संचालन प्रो. के. सुमा किरण तथा सत्र की अध्यक्षता प्रो. एम.ए. के. सुकुमार ने की। इस सत्र में प्रो. गोपाल गुरु, प्रो. अवधेश कुमार सिंह तथा प्रो. जतिंद्र के. नायक ने क्रमशः साहित्यिक इतिहास-लेखन से जुड़े वाद-विवाद, हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन के विकास एवं ओड़िया साहित्य के इतिहास-लेखन पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. जी.एम. सुंदरावल्ली ने की, जिसमें चार जाने-माने विद्वानों प्रो. मालाश्री लाल, प्रो. अरिंदम चक्रवर्ती, प्रो. मधुरकांतम नरेंद्र एवं श्री तिरुपति राव ने क्रमशः अंग्रेज़ी साहित्य के इतिहास-लेखन, संस्कृत साहित्य के इतिहास-लेखन एवं तेलुगु साहित्य के इतिहास-लेखन पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र का संचालन प्रो. टी. शारदा ने किया तथा प्रो. ई.वी. रामकृष्णन ने सत्र की अध्यक्षता की, इस सत्र के अंतर्गत श्री ललित कुमार, सुश्री प्राची खांडेपारकर तथा श्री हेमंत दवे ने क्रमशः मैथिली, मराठी एवं गुजराती साहित्य के इतिहास-लेखन पर आलेख प्रस्तुत किए। पंचम सत्र का संचालन प्रो. पी. उषा रानी तथा अध्यक्षता प्रो. मालाश्री लाल ने की। इस सत्र में प्रो. एच.एस. शिवप्रकाश, डॉ. एस्थर सिएम एवं श्री जुधजित सरकार ने क्रमशः उत्तरपूर्वी, कन्नड एवं बाङ्ला भाषाओं में साहित्य का इतिहास-लेखन पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र का संचालन प्रो. हरीश त्रिवेदी ने किया तथा एस. वी. विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार प्रो. एम. देवराजुलु इस सत्र में सम्मानीय अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रो. के. सच्चिदानंदन, प्रो. मालाश्री लाल, प्रो. इप्शिता चंदा तथा प्रो. ई.वी. रामाकृष्णन के मध्य हुई परिचर्चा में संगोष्ठी का विश्लेषण तथा उपसंहार किया गया। अंत में साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'तमिऴ में युवा लेखन' विषयक संगोष्ठी

30 सितंबर–1 अक्तूबर 2015, मदुरै

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा लेडी डोक कॉलेज, मदुरै के तमिऴ विभाग के सहयोग से तमिऴ में युवा लेखन विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 30 सितंबर तथा 1 अक्तूबर 2015 को कॉलेज के प्रेक्षागृह में किया गया।

कार्यालय प्रभारी श्री के. पी. राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा युवा लेखकों, कवियों के प्रोत्साहन के लिए अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया। अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नाचिमुथु ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि युवा किसी भी सभ्य समाज की रीढ़ होते हैं, इसलिए साहित्य के विकास के लिए युवाओं को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। उन्होंने इस संदर्भ में अकादेमी के प्रयासों की सराहना की। *कनैयाझी* के संपादक श्री एम. राजेंद्रन ने बीज वक्तव्य में तमिऴ साहित्य में युवा लेखन का एक विस्तृत परिचय दिया तथा वर्तमान परिदृश्य में कुछ युवा तमिऴ लेखकों पर प्रकाश डाला। तमिऴ विभाग के डॉ. मनिमेगलई ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र का विषय 'मैं और मेरा लेखन' था तथा सत्र की अध्यक्षता सुश्री अंदाल प्रियदर्शिनी ने की। तीन युवा लेखक श्री आर. अभिलाष, श्री की. वीरप्पंडियन एवं सुश्री लक्ष्मी श्रवण कुमार ने अपने रचना संसार के बारे में बात करते हुए अपनी रचना प्रक्रिया को साझा किया।

द्वितीय सत्र 'तमिऴ में आज का युवा लेखन' पर आधारित था तथा सत्र की अध्यक्षता सुश्री तमिऴ सेल्वी ने की। श्री सुरेश कुमार इंद्रजीत तथा सुश्री चंद्रा ने 'तमिऴ में आज का युवा लेखन' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तीसरा सत्र रचना पाठ को समर्पित था तथा सत्र की अध्यक्षता प्रो. पी. शिवकामी ने की। लेडी डोक कॉलेज के युवा रचनाकारों ने अपनी कहानियाँ एवं कविताएँ प्रस्तुत कीं।

चतुर्थ सत्र का विषय था 'होनहार युवा लेखन' तथा सत्र की अध्यक्षता श्री एन. शिवसुब्रह्मण्यम ने की। श्री वी. आनंद कुमार, श्री के. प्रतिभा राजा एवं श्री स्टालिन राजंगम ने विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

पंचम सत्र 'तमिऴ में युवा लेखन का भविष्य' को समर्पित था। सत्र की अध्यक्षता श्री डी. सीनिचामी ने की। श्री एन. जय भास्करण, सुश्री मुबीन सादिक़ा एवं सुश्री विद्या ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर. कामरसु ने की। प्रसिद्ध तमिऴ लेखक श्री वन्नदासन ने समापन वक्तव्य दिया तथा डॉ. नाचिमुथु ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पल्ल दुर्गेय जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

4 अक्तूबर 2015, हैदराबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा आंध्र सारस्वत परिषद्, हैदराबाद के सहयोग से 4 अक्तूबर 2015 को पल्ल दुर्गेय जन्मशतवार्षिकी पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महाळिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। श्री महाळिंगेश्वर ने यह भी बताया कि पल्ल दुर्गेय उस्मानिया यूनिवर्सिटी में 1942 में एम. ए. तेलुगु के प्रथम छात्र थे।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. एन. गोपी ने कहा कि पल्ल दुर्गेय का लेखन बहुत अधिक संख्या में नहीं है, लेकिन जो है वह उत्कृष्ट है। फिर उन्होंने दुर्गेय की कुछ कविताओं का वाचन किया।

सत्र के मुख्य अतिथि श्री के. वी. रमनधारी ने अपने वक्तव्य में कहा कि पल्ल दुर्गेय ख़ामोशी और विश्वास के एक अवतार थे। इस तरह के व्यक्तित्व तेलंगाना के

बाएँ से दाएँ : श्री ए. रामानुजाचारी, श्री एस. पी. महालिंगेश्वर, डॉ. एन. गोपी, श्री अमंगी वेणुगोपाल तथा अन्य

साहित्य का गौरव हैं। डॉ. अमंगी वेणुगोपाल ने अपने बीज वक्तव्य में पल्ल दुर्गेय की सादगी और चरित्र जैसे गुणों पर प्रकाश डाला। श्री वेणुगोपाल ने पल्ल दुर्गेय द्वारा तेलुगु कवियों के बारे में की गई टिप्पणी के बारे में बताया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री मसान चेनप्पा ने की। अध्यक्षता के अतिरिक्त श्री चेनप्पा ने तेलंगाना ग्रामीण जीवन के चित्रण पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र में श्री गणमराजू गिरिजा मनोहर बाबू एवं श्री जी. चेना केशव रेड्डी ने क्रमशः 'पल्ल दुर्गेय का पालवेल : काव्य उत्कृष्टता का एक अध्ययन' तथा 'पल्ल दुर्गेय की गेय कविता का आलोचनात्मक अध्ययन' विषय पर आलेख प्रस्तुत किए। श्री रेड्डी ने पल्ल दुर्गेय के ग्रामीण जीवन का वर्णन करते हुए उन दिनों के किसानों की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डाला।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि वरिष्ठ कवि डॉ. सी. नारायण रेड्डी ने परिसंवाद के इस आयोजन पर हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने पल्ल की पुस्तकों के संशोधित संस्करण को प्रकाशित करने का सुझाव दिया। समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. एन. गोपी ने की।

'नवां पंजाबी उपन्यास' विषयक परिसंवाद

9 अक्तूबर 2015, मोगा (पंजाब)

साहित्य अकादेमी द्वारा 'नवां पंजाबी उपन्यास' विषयक परिसंवाद का आयोजन 9 अक्तूबर 2015 को जगत सेवक खालसा महिला कॉलेज, मोगा, पंजाब में किया गया। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के डॉ. सुरिंदर कुमार दवेश्वर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा के डॉ. हरसिमरण सिंह रणधावा कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। परिसंवाद के अंतर्गत सर्वश्री सुरजीत सिंह, सुरजीत बरार तथा रमन शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य श्री बलदेव सिंह सड़कनामा ने अकादेमी की ओर से कार्यक्रम को संचालित करते हुए उपस्थित सभी लोगों का स्वागत किया।

'लेखन से परे : लेखकों एवं प्रकाशकों का संगम' विषयक संगोष्ठी

9-10 अक्तूबर 2015, गांतोक

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने विशिष्ट लेखकों, प्रकाशकों एवं मीडिया शख़्सियतों की उपस्थिति में 'लेखन से परे : लेखकों एवं प्रकाशकों का संगम' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 9-10 अक्तूबर 2015 को तारा पैलेस, गांतोक में किया।

उद्घाटन सत्र में, अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया तथा संगोष्ठी की पृष्ठभूमि-डिज़िटल प्रकाशन, मोबाइल प्रकाशन इत्यादि के उद्भव एवं इनके समक्ष विशेषतः स्थानीय भाषा के प्रकाशन के समक्ष आनेवाली कठिनाइयों पर बात की। अपने आरंभिक व्याख्यान में, सामान्य परिषद के सदस्य श्री अरुण महेश्वरी ने डिजिटल प्रकाशन से जुड़े प्रकाशकों के समक्ष आनेवाली समस्याओं एवं चुनौतियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। उन्होंने प्रकाशकों के समक्ष विक्रय से जुड़ी समस्याओं एवं देशभर में, विशेषतः देश के युवा वर्ग के पाठकगणों में आई गिरावट के आधारभूत कारणों पर भी प्रकाश डाला। नेशनल बुक ट्रस्ट के चेयरमैन श्री बल्देव भाई शर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में संकट की इस घड़ी में प्रकाशकों एवं लेखकों को साथ लाने तथा भविष्य में भारत में इस प्रकार की संगोष्ठियाँ आयोजित करने पर सहमति जताने के लिए अकादेमी की सराहना की। उन्होंने कहा कि डिज़िटल तकनीक तथा लिखने एवं पढ़ने के लिए आधुनिक उपकरणों में तेज़ी से हुई प्रगति के बावजूद पारंपरिक रूप से मुद्रित पुस्तकों के विविध लाभ हैं तथा उन्होंने प्रकाशकों, साहित्य अकादेमी जैसी संस्थाओं, भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों से आग्रह किया कि वे बच्चों तथा देश के युवा वर्ग के मध्य पढ़ने की स्वस्थ आदतों को मन-मस्तिष्क में बैठाने के लिए पहल करें न कि हर समय यह बात करें कि देश में लोगों में पढ़ने की आदतों में गिरावट आ रही है। उन्होंने डॉ. के. श्रीनिवासराव की इस बात पर सहमति जताई कि लेखन एवं प्रकाशन बंधुत्व को गंभीरतापूर्वक रिचर्ड डॉकिन्स के इस अभिकथन पर विचार करना चाहिए कि विज्ञान को भी साहित्य का ही एक हिस्सा माना जाना चाहिए। उन्होंने आशा जताई कि साहित्य अकादेमी द्वारा किए जा रहे इस प्रकार के प्रयासों का परिणाम अच्छा ही होगा।

बाएँ से दाएँ : श्री लीलाधर जगूड़ी, श्री बल्देव भाई शर्मा, श्री अरुण महेश्वरी एवं डॉ. के. श्रीनिवासराव

संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित प्रख्यात हिंदी कवि श्री लीलाधर जगूड़ी ने अपने व्याख्यान में उत्पादन की प्रक्रिया तथा अन्य माध्यमों से लेखन समुदाय के लिए प्रकाशकों द्वारा अधिक सहायक भूमिका निभाए जाने की आवश्यकता पर बात की। चूँकि मुद्रण अथवा डिज़िटल दोनों

ही उत्पादन के माध्यम हैं, इसलिए ऐसा किया जाना आवश्यक है तथा यह भी आवश्यक है कि लेखकों के हितों को सुरक्षित, संरक्षित एवं प्रचारित किया जाए। साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र 'भारतीय भाषाओं में प्रकाशन का प्रारंभिक चरण' को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता श्री अरुणेश नीरन ने की तथा तीन प्रख्यात संपादकों एवं प्रकाशकों सर्वश्री हर्ष दत्ता, दीपचंद शंखला तथा रामगोपाल शर्मा ने क्रमशः 'बंगाल में पुस्तक प्रकाशन का इतिहास', 'हिंदीभाषी क्षेत्रों में पुस्तक प्रकाशन का इतिहास' तथा 'भारत में पुस्तक प्रकाशन का इतिहास एवं उसका देश पर प्रभाव' विषयों पर केंद्रित आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र '21वीं सदी में भारतीय भाषाओं में प्रकाशन : चुनौतियाँ एवं नई दिशाएँ' को समर्पित था तथा इस सत्र की अध्यक्षता श्री प्रकाश दुबे ने की, दो विख्यात संपादकों एवं प्रकाशकों श्रीमती नीता गुप्ता तथा श्री ए. कृष्णा राव ने क्रमशः लेखकों के समक्ष आनेवाले मुद्दों एवं चुनौतियों पर प्रकाशकों के दृष्टिकोण तथा लेखकों के परिप्रेक्ष्य पर बात की। तृतीय सत्र 'पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने में आनेवाली चुनौतियों एवं मीडिया की भूमिका' को समर्पित था तथा इस सत्र की अध्यक्षता प्रकाश दुबे ने की। सत्र में प्रतिष्ठित मीडिया कर्मियों श्री राजीव रंजन नाग एवं श्री अनंत विजय ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री राजीव रंजन नाग ने 'भारत में पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने में डिज़िटल मीडिया की भूमिका' पर ध्यान केंद्रित किया तथा इस संबंध में आवश्यकताओं एवं चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने विशेषतः देश के युवा वर्ग की पढ़ने की आदतों पर नवीनतम तकनीकों के प्रभाव तथा अच्छे साहित्य को प्रचारित करने में मीडिया की भूमिका पर भी बात की। श्री अनंत विजय ने अपने प्रभावशाली भाषण में, लेखन समुदाय की समस्याओं तथा चुनौतियों पर चर्चा की, साथ ही उन्होंने साहित्यिक संस्थाओं एवं साहित्यिक समुदायों की नई तकनीकों को अंतर्निहित तथा अपनाने की अनिच्छा के कारण साहित्यिक कार्यक्रमों को आयोजित करने के लिए स्थान समर्पित करने में मीडिया हाउसों के समक्ष आनेवाली समस्याओं पर भी बात की। डॉ. के श्रीनिवासराव ने दिनभर की कार्रवाई का समाहार करते हुए धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने दूसरे दिन की कार्रवाई शुरू करते हुए सत्र के प्रतिभागियों से सभी का परिचय कराया। चतुर्थ सत्र 'प्रकाशक एवं लेखक के मध्य संबंध : कॉपीराइट की समस्या' को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. शाफ़े किदवई ने की तथा तीन विद्वानों प्रो. अरुण कमल, श्री अरुण जाखड़े तथा श्री अखिलेश ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. किदवई ने लेखकों एवं प्रकाशकों तथा लेखकों एवं पाठकों के मध्य बदलते संबंधों को रेखांकित किया। उन्होंने लेखकों तथा प्रकाशकों के समक्ष आनेवाली समस्याओं विशेषरूप से कॉपीराइट से संबंधित समस्याओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि कॉपीराइट अधिनियम ने कॉपीराइट की अवधि तय की है, परंतु ऑनलाइन पुस्तकें हमेशा के लिए हैं, उनकी कोई अवधि तय नहीं है अर्थात् इसका अर्थ है कि कॉपीराइट भी हमेशा के लिए है। प्रो. अरुण कमल ने अपने व्याख्यान में कॉपीराइट संबंधित मुद्दों, भारतीय भाषाओं में प्रकाशन क्षेत्र में रॉयल्टी से संबंधित मुद्दों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि लेखकों के हितों एवं आर्थिक लाभों को सुरक्षित तथा प्रचारित किया जाना चाहिए। उन्होंने महसूस करते हुए कहा कि इंग्लैंड तथा अन्य देशों की ही तरह भारत में भी लेखक मंच अथवा ट्रस्ट अथवा संस्था का निर्माण किया जाना चाहिए तथा साहित्य अकादेमी जैसी संस्थाओं को इस प्रकार के उद्देश्य की पूर्ति के लिए आगे आना चाहिए। श्री अरुण कमल ने कहा कि सभी विधाओं के लेखकों के कल्याण हेतु तथा उत्तम पुस्तकों के उत्पादन को सुनिश्चित करने हेतु लेखकों एवं प्रकाशकों के मध्य

अच्छे संबंध होना अत्यंत आवश्यक है। श्री अरुण जाखड़े ने अपने व्याख्यान में लेखकों तथा प्रकाशकों के बीच के संबंधों को सुधारने हेतु विभिन्न माध्यमों को रेखांकित किया तथा यह भी कहा कि लेखकों से संबंधित कॉपीराइट एवं रॉयल्टी जैसे मुद्दों पर प्रकाशकों को अधिक विचारशील होना चाहिए। उन्होंने लेखकों के व्यावसायिक हितों के बदलते स्वरूप पर प्रकाश डाला तथा कहा कि यह भूमिका बदलने के सदृश एक चिंताजनक प्रवृत्ति है। उन्होंने कॉपीराइट मुद्दे पर प्रकाशकों के परिप्रेक्ष्य पर भी प्रकाश डाला। श्री अखिलेश ने अपने व्याख्यान में उन समस्याओं पर प्रकाश डाला जिसका सामना आज लेखक कर रहे हैं। प्रस्तुत आलेखों द्वारा एक संक्षिप्त परंतु जीवंत परस्पर संवादात्मक सत्र का समाहार हुआ। पंचम तथा अंतिम सत्र 'प्रकाशन के नए आयाम : ई-बुक्स एवं सोशल मीडिया' को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता श्री मालन ने की तथा तीन विद्वानों डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण, श्रीमती देवप्रिया राय एवं श्री थिरू प्रसाद नेपाल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री मालन ने अपने व्याख्यान में इलैक्ट्रॉनिक प्रकाशन के फ़ायदों एवं नुक़सानों को रेखांकित किया तथा यह भी कहा कि प्रकाशन संसार में प्रिंट पुस्तकें अपना स्थान बनाए रखेंगी। श्री मालन ने कहा कि प्रिंट एवं इलैक्ट्रॉनिक संस्करण उत्पादन के माध्यम हैं तथा इसके अंतर्गत सबसे महत्त्वपूर्ण है सामग्री की गुणवत्ता।

प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण ने अपने व्याख्यान में कहा कि लेखकों एवं प्रकाशकों के बीच तनाव हमेशा बना ही रहेगा एवं दोनों के बीच का सामंजस्यपूर्ण संबंध ही सुनिश्चित करेगा कि उत्पादन गुणवत्तापूर्ण हो। उन्होंने कहा कि तकनीक बदल रही है, परंतु सभी प्रकार के लाभों के बावजूद प्रकाशन के लिए प्रयोग की जा रही तकनीक मृतप्राय हो चुकी प्रिंट पुस्तकों को पुनर्जीवित करने के लिए अत्यधिक असामयिक है। उन्होंने कहा कि तथापि तकनीक ने प्रकाशन से जुड़े परिप्रेक्ष्यों को बदला है तथा प्रकाशकों एवं लेखकों दोनों की बुद्धिमानी इसी में है कि वह इस तकनीक का प्रभावी ढंग से प्रयोग करें। आगे उन्होंने कहा कि केंद्र में केवल मनुष्य है तथा वही महत्त्वपूर्ण है एवं सभी प्रकार की तकनीकों का उद्देश्य मानवता की सेवा करना है अन्यथा कुछ नहीं तथा यह भी आवश्यक है कि मानव प्रभावी ढंग से तकनीक का प्रयोग केवल मानवता की उन्नति हेतु करे। श्रीमती देवप्रिया राय ने अपने व्याख्यान में नवीनतम तकनीकों के प्रति लेखकों एवं प्रकाशकों की अनुकूलनशीलता के बारे में बात की। उन्होंने उदाहरण देकर स्पष्ट किया कि किस प्रकार तकनीक एवं सोशल मीडिया ने उन्हें अपनी रचना लिखने में सहायता की है—एक भौतिक, प्रिंट पुस्तक। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया एवं ई-बुक्स ने भारत में लेखकों, पाठकों तथा प्रकाशकों को कई लाभ भी पहुँचाए हैं। श्री थिरू प्रसाद नेपाल ने अपने व्याख्यान में कहा कि प्रिंट पुस्तकें ही वास्तविक होती हैं, डिज़िटल तरीक़े से उत्पादित पुस्तकों को पढ़ने में पुस्तक पढ़ने जैसा अनुभव नहीं होता। उन्होंने भारतीय-नेपाली लेखन के क्षेत्र में प्रिंट प्रकाशन एवं डिज़िटल प्रकाशन दोनों ही प्रकार के प्रकाशनों के अंतर्गत लेखकों तथा प्रकाशकों के सरल संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सामाजिक उपकरण के रूप में केवल सोशल मीडिया ही समाज को प्रतिबिंबित करने तथा लेखकों को यह स्मरण कराने में सक्षम है कि एक पुस्तक की गुणवत्ता प्रिंट अथवा डिज़िटल उत्पादन में नहीं बल्कि लेखक में निहित होती है। प्रस्तुत आलेखों द्वारा एक संक्षिप्त परंतु जीवंत, परस्पर संवादात्मक सत्र का समाहार हुआ। अंत में श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पंडित एन. खेलचंद्र सिंह : जीवन एवं कृतित्व' विषयक संगोष्ठी

10 अक्तूबर 2015, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी द्वारा मणिपुरी साहित्य परिषद्, इंफ़ाल के सहयोग से पंडित एन. खेलचंद्र सिंह : जीवन एवं कृतित्व विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 10

अक्तूबर 2015 को राजकीय डांस कॉलेज, इंफ़ाल में किया गया।

अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए पंडित एन. खेलचंद्र सिंह के मणिपुरी भाषा एवं साहित्य में योगदान को रेखांकित किया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने अपने आरंभिक वक्तव्य में बहुमुखी प्रतिभा के धनी पंडित खेलचंद्र सिंह की उपलब्धियों की चर्चा की। श्री सिंह ने यह भी बताया कि पंडित खेलचंद्र सिंह मार्शल आर्ट्स, मंत्रों, ज्योतिष आदि के भी ज्ञाता थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रोफ़ेसर थ. तोंबी सिंह ने पंडित खेलचंद्र सिंह को सम्मानजनक शब्दों के द्वारा याद किया। प्रोफ़ेसर तोंबी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि मणिपुर के समकालीन समाज के लिए पंडित जी की प्रासंगिकता के कारण महत्त्व दिया जाता है। मणिपुरी साहित्य परिषद् के सदस्य श्री एल. सदानंद सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। श्री बी. कुलचंद्र शर्मा ने अपने आलेख में खेलचंद्र सिंह के जीवन और लेखन कर्म के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला। मणिपुरी संस्कृति और साहित्य में श्री पंडित का बड़ा योगदान है। श्री एन. इंद्रमणि ने अपने आलेख में पुराने मणिपुरी भाषा के साथ पंडित खेलचंद्र सिंह के व्यावहारिक योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया। डॉ. इबोहंबी सिंह ने भी अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र के अध्यक्ष श्री आर. के. झालाजीत सिंह ने पंडित खेलचंद्र सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि पंडित जी ने भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए पुराने मणिपुरी संस्कृति भाषा और साहित्य के कई पहलुओं को छोड़ा है।

श्री एल. शरतचंद्र सिंह ने अपने आलेख में श्री पंडित के मणिपुर के मार्शल आर्ट के सिद्धांतों, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रतीकात्मक अर्थ आदि के योगदान को इंगित किया। श्री बीरचंद्र ने अपने आलेख में पंडित खेलचंद्र के ऐतिहासिक आलेख, औपनिवेशिक और उत्तर औपनिवेशिक दस्तावेज़ों के संरक्षण का उल्लेख किया। डॉ. वाय. कुंजबिहारी सिंह ने अपने आलेख में खेलचंद्र के मणिपुरी सभ्यता के संस्थापक के रूप में जीवनपर्यन्त काम करते रहने को रेखांकित किया। प्रोफ़ेसर एन. तोंबी सिंह ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि इस सत्र में पंडित खेलचंद्र के जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं को उजागर किया गया। अंत में श्री ई. प्रियब्रत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'डोगरी साहित्य में हास्य-व्यंग्य' विषयक संगोष्ठी

10-11 अक्तूबर 2015, जम्मू

साहित्य अकादेमी द्वारा डोगरी संस्था, जम्मू के सहयोग से 'डोगरी साहित्य में हास्य-व्यंग्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन 10-11 अक्तूबर 2015 को के. एल. सहगल हॉल, जम्मू में किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रोफ़ेसर अशोक ऐमा, कुलपति, केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू द्वारा किया गया। उन्होंने इतने महत्त्वपूर्ण विषय पर संगोष्ठी आयोजित करने के लिए आयोजकों को बधाई दी। साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया।

अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा ने संगोष्ठी की रूपरेखा के बारे में विस्तार से बात की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डोगरी संस्था के अध्यक्ष श्री छत्रपाल ने की तथा संस्था के महासचिव डॉ. निर्मल विनोद ने संचालन किया। संगोष्ठी के प्रथम

बाएँ से दाएँ : प्रो. वीणा गुप्ता, प्रो. ललित मगोत्रा, प्रो. अशोक ऐमा, श्री छत्रपाल, डॉ. निर्मल विनोद एवं डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश

पनुगंती लक्ष्मी नरसिंह राव की 150 वीं जयंती पर परिसंवाद

11 अक्तूबर 2015, गुंतूर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु तथा अन्नामाचया कलावेदिका के सहयोग से 'कविशेखर' पनुगंती लक्ष्मी नरसिंह राव की 150 वीं जयंती पर 11 अक्तूबर 2015 को पद्मावती कल्याण वेदिका, श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर, गुंतूर में एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने स्वागत भाषण दिया। तेलुगु भाषा के संयोजक डॉ. एन. गोपी. ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री पनुगंती राव की बहुआयामी प्रतिभा को रेखांकित किया। तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. पापीनेमी शिवशंकर ने अपने भाषण में कहा कि पनुगंती राव सभी उम्र के लेखकों की प्रेरणा स्रोत थीं। आंध्र प्रदेश विधान सभा के उपसभापति तथा मुख्य अतिथि मंडली श्री बुद्ध प्रसाद ने पनुगंती राव के चित्र पर माल्यार्पण कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अपने संबोधन में उन्होंने पनुगंती राव को आधुनिक तेलुगु साहित्य का पथ प्रदर्शक बताया। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि पनुगंती अपनी साहित्य प्रतिभा का उपयोग समाज सुधार के लिए करते थे। श्री मोदुगुल रविकृष्ण ने धन्यवाद ज्ञापन किया। पहले सत्र की अध्यक्षता श्री मोदुगुल रविकृष्ण ने की। श्री रवेल सांबशिवाय राव ने 'साक्षी निबंध' में हास्य-परिहास का वर्णन किया तथा डॉ. एस. रघु ने पनुगंती को एक सामाजिक पर्यवेक्षक के रूप में प्रस्तुत करते हुए अपना आलेख पढ़ा। दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर चंपा शर्मा ने की। सत्र में कविता पर तीन आलेख श्री प्रकाश प्रेमी, श्री सुरजीत होश एवं डॉ. वंशी लाल ने प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र में श्री सुशील बेगाना एवं श्री सुनील शर्मा ने डोगरी ग़ज़लों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र में डॉ. राजेश मन्हास का आलेख उनकी अनुपस्थिति में प्रो. ललित मगोत्रा ने प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि श्री ध्यान सिंह ने की।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के पुरस्कृत लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री दर्शन दर्शी ने की। लब्धप्रतिष्ठ कहानीकार श्री शिव मेहता ने 'डोगरी कहानियों में हास्य-व्यंग्य के तत्त्व' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। दूसरे आलेख में डॉ. चंचल भसीन ने डोगरी उपन्यासों के आधार पर हास्य-व्यंग्य की बात की।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री एन. डी. जम्वाल ने की। इस सत्र में श्री संदीप दुबे, श्री राजकुमार बहरूपिया एवं डॉ. रतन बसोतरा ने डोगरी नाटकों एवं एकांकी पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के अंत में प्रो. ललित मगोत्रा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद का एक सत्र

अध्यक्षता श्री पेनुगोंडा लक्ष्मीनारायण ने की। इस सत्र में डॉ. नरीसेट्टी वेंकट कृष्ण राव ने पनुगंती के नाट्य 'कथा ब्रह्म' का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। श्रीमती कोगंती उमा रानी ने 'साक्षी निबंध' में महिलाओं के जीवन पर उनके कार्यों का उल्लेख अपने आलेख में किया। श्री तल्लुरी लेबोन बाबू ने 'साक्षी निबंध' की भाषा की बहुरूपता के महत्त्व की व्याख्या की। डॉ. एन. गोपी समापन सत्र के मुख्य अतिथि थे। डॉ. पापीनेमी शिवशंकर ने इस पूरे दिन के कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। अंत में श्री मोदुगुल रविकृष्ण ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'कीरत बाबाणी : व्यक्ति एवं साहित्य' विषयक परिसंवाद

11 अक्तूबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा प्रसिद्ध सिंधी लेखक, अनुवादक श्री कीरत बाबाणी पर एक परिसंवाद का आयोजन 11 अक्तूबर 2015 को अकादेमी के ऑडिटोरियम में किया गया।

अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री बाबाणी को एक विशिष्ट सिंधी साहित्यकार अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित एवं सिंधी साहित्य का एक स्तंभ बताया।

सुश्री कला प्रकाश ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए बाबाणी के साथ बिताए गए अपने साहित्यिक यादों को साझा किया। अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रकाश ने बीज वक्तव्य दिया। अपने बीज वक्तव्य में उन्होंने बाबाणी को नदी की बहती लहरों के समान बताया, जो रुकावटों के बाद भी बहती रहती है। उन्हें सिंधी साहित्य के स्तंभों में से एक माना जाता है।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री लक्ष्मण दुबे ने की तथा श्री मोहन गेहाणी ने कीरत बाबाणी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। वे कीरत बाबाणी के साथ बहुत निकट से 60 वर्षों तक जुड़े रहे थे। श्री जेठो लालवाणी ने कीरत बाबाणी की कहानियों एवं नाटकों के संदर्भ में बात करते हुए उनके अकादेमी पुरस्कृत नाटक 'धरती जो साड' के बारे में चर्चा की। सुश्री संध्या कुंदनानी ने बाबाणी के आत्मकथात्मक लेखन के बारे में बात की।

दूसरे सत्र में श्री लक्ष्मण दुबे ने बाबाणी के काव्यात्मक लेखन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री हुंदराज बलवानी का आलेख 'बाबाणी के लेखन में सिंधियत' विषय पर था। उनका कहना था कि बाबाणी का लेखन सचमुच सिंधी का जीवंत रेखाचित्र है। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री मीना रूपचंदानी ने की।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री मोहन गेहाणी ने की। इस सत्र में 'सिंधी आलोचना में बाबाणी का योगदान' तथा 'बाबाणी का यात्रावृत्तांत' विषय पर क्रमशः सुश्री मीना रूपचंदाणी एवं सुश्री शोभा लालचंदाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वास्तव में यह परिसंवाद कीरत बाबाणी को सच्ची श्रद्धांजलि थी।

'उत्तर आधुनिक भारतीय नेपाली साहित्य' विषयक संगोष्ठी

17-18 अक्तूबर 2015, दार्जिलिंग

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जीलिङ के सहयोग से 17-18 अक्तूबर 2015 को 'उत्तर आधुनिक नेपाली साहित्य' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात नेपाली लेखक श्री नंद हाङ्खिम ने किया। अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने आरंभिक वक्तव्य दिया। नेपाली साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री कर्ण थामी ने सत्र की अध्यक्षता की। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया एवं अकादेमी की गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताया। सत्र का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन नेपाली साहित्य सम्मेलन के महासचिव श्री बी. राज सुनुवार ने किया। इस सत्र में अकादेमी के प्रकाशन *मुर्झाए वृक्ष, पर्यवेक्षण, यो प्राचीन वीणा* (ओ. एन. वी. कुरुप की मलयाळम् कविताओं का नेपाली अनुवाद), *चौरंग* (कोंकणी नाटकों का नेपाली अनुवाद) तथा *भारतीय नेपाली एकांकी संचयन* का लोकार्पण किया गया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध नेपाली कवि एवं आलोचक डॉ. जीवन नामदुंग ने की। श्री अर्जुन प्रधान, सुश्री मणिका मुखिया एवं डॉ. राजकुमार छेत्री ने क्रमशः 'भारतीय नेपाली साहित्य में उत्तर आधुनिकता के प्रभाव एवं परिणाम', 'भारतीय नेपाली साहित्य में उत्तर आधुनिकता के सैद्धांतिक पहलू' तथा 'समकालीन भारतीय नेपाली साहित्य के संदर्भ में उत्तर आधुनिक लेखन' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र में डॉ. बीना हाङ्खिम ने 'भारतीय नेपाली कविताओं में उत्तर आधुनिकता' विषय पर तथा डॉ. नवीन पौद्याल ने 'भारतीय नेपाली नाटकों में उत्तर आधुनिकता' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध नेपाली लेखक श्री लक्ष्मण श्रीमल ने की।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. गोकुल सिन्हा ने की तथा डॉ. बीनेश प्रधान ने 'भारतीय नेपाली उपन्यासों में उत्तर आधुनिकता' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री ज्ञानबहादुर छेत्री ने 'पूर्वोत्तर भारत में उत्तर आधुनिक नेपाली साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य श्री सी. के. राय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बाएँ से दाएँ : श्री मणिका मुखिया, श्री जीवन नामदुंग, श्री भानु छेत्री, श्री प्रेम प्रधान, नंद हाङ्खिम, कर्ण थामी तथा डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश

'समकालीन काव्य शैली एवं संस्कृत कविता' पर परिसंवाद

18 अक्तूबर 2015, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली तथा गुजरात कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, अहमदाबाद के सहयोग से 'समकालीन काव्य शैली एवं संस्कृत कविता' विषयक एकदिवसीय

परिसंवाद का आयोजन 18 अक्तूबर 2015 को अहमदाबाद में किया गया। संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में श्री गौतम पटेल ने 'गुजरात का आधुनिक संस्कृत साहित्य', श्री अभिराज राजेंद्र मिश्र ने 'आधुनिक संस्कृत महाकाव्य', श्री रमाकांत शुक्ल ने 'आधुनिक संस्कृत गीतिकाव्य' तथा श्रीमती मंजुलता शर्मा ने 'हार्दिक टंक एवं सीजो काव्य' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. अरुणेंद्र सिंह राठौर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री विजय पंड्या ने की, जबकि श्री हर्षदेव माधव ने 'संस्कृत में मोनोईमेज़ कविता' एवं श्री मणिभाई प्रजापति ने 'आधुनिक संस्कृत साहित्य और विधाएँ' पर आलेख प्रस्तुत किए।

फतुरानंद जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

18 अक्तूबर 2015, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी द्वारा फतुरानंद जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 18 अक्तूबर 2015 को स्टेट आर्काइव ऑडिटोरियम, भुवनेश्वर में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए *संवाद* के संपादक श्री सौम्यरंजन पटनायक ने कहा कि फतुरानंद को एक साहित्यकार के रूप में उनके जीवन में वह मान्यता नहीं मिली, जिसके वे योग्य थे। वे एक हास्य एवं व्यंग्यकार थे। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. विजयानंद सिंह ने बीज वक्तव्य दिया तथा फतुरानंद के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने अतिथियों का स्वागत करते हुए फतुरानंद का परिचय दिया। फतुरानंद का मूल नाम रामचंद्र मिश्र था, लेकिन साहित्य में उनकी पहचान फतुरानंद के नाम से है।

ओड़िशा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष सतकड़ी होता ने सत्र की अध्यक्षता की तथा अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया।

प्रथम सत्र में डॉ. लक्ष्मीकांत त्रिपाठी ने फतुरानंद की कविताओं के बारे में बात की तथा कहा कि फतुरानंद जितना दूसरे लोगों से प्रभावित हुए, उससे ज़्यादा उन्होंने दूसरों को अपने लेखन से प्रभावित किया। श्रीमती राधू मिश्र ने फतुरानंद की आत्मकथा के बारे में बात की। इस सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर श्रीनिवास मिश्र ने की।

दूसरे सत्र में प्रोफ़ेसर अजय कुमार पटनायक ने फतुरानंद के अनुवाद और फतुरानंद के साहित्य की प्रासंगिकता पर विचार-विमर्श किया। श्री मृणाल चटर्जी ने फतुरानंद का कथा एवं शिशु साहित्य पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री चटर्जी ने यह भी कहा कि फतुरानंद को बाल साहित्य के रूप में ब्रांडेड नहीं किया जा सकता, यद्यपि उन्होंने बच्चों के लिए बहुत लिखा है। इस सत्र की अध्यक्षता श्री विभूति पटनायक ने की। श्री पटनायक ने उन दिनों की याद को साझा किया, जब उन्होंने पत्रिका गल्प के लिए फतुरानंद का साक्षात्कार किया। प्रो. निखिलानंद पाणिग्रही ने समापन वक्तव्य दिया। श्री पीतबास राउतराय ने समापन सत्र की अध्यक्षता की।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का दृश्य

आचार्य क्षेमचंद्र 'सुमन' जन्मशती परिसंवाद

21 अक्तूबर 2015, नई दिल्ली

प्रख्यात लेखक, संपादक और 'दिवंगत हिंदी सेवी' जैसे विशाल ग्रंथ के प्रणेता आचार्य क्षेमचंद्र सुमन की जन्मशतवार्षिकी पर एक परिसंवाद का आयोजन साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली में किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार प्रो. वरयाम सिंह ने की और आरंभिक वक्तव्य श्री इंद्र सेंगर ने दिया। कार्यक्रम में डॉ. परमानंद पांचाल, श्री सुधेश, श्री हरी सिंह पाल और श्री धर्मपाल आर्य ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए।

श्री इंद्र सेंगर ने अपने आरंभिक वक्तव्य में क्षेमचंद्र सुमन के व्यक्तित्व के कई पहलुओं पर सबका ध्यान आकृष्ट कराया। उन्होंने कहा कि सुमन जी के कृतित्व के आधार पर हम उन्हें राष्ट्रीय संचेतना के कवि, उत्कृष्ट समीक्षक, जीवनी साहित्य के अग्रणी लेखक और एक जागरूक निबंधकार के रूप में याद कर सकते हैं। डॉ. परमानंद पांचाल ने उनके 'दिवंगत हिंदी सेवी' जैसे महान विचार और ग्रंथ को याद करते हुए इसे एक ऐतिहासिक कार्य बताया। उन्होंने उपस्थित श्रोताओं से कहा कि यह कार्य अभी अधूरा है और इसे पूरा किया जाना चाहिए।

अपने अध्यक्षीय वक्तवय में प्रो. वरयाम सिंह ने साहित्य अकादेमी को इस आयोजन के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि क्षेमचंद्र सुमन ने अकेले जितना कार्य किया उतना तो कई बड़ी-बड़ी संस्थाएँ भी नहीं कर पाती हैं। उनका विशाल लेखन इसकी गवाही देता है। हिंदी साहित्य के लिए उनकी सच्ची सेवा सदा स्मरणीय रहेगी।

कार्यक्रम के आरंभ में सभी प्रतिभागियों का स्वागत अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया और अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन हिंदी संपादक श्री कुमार अनुपम ने किया।

राष्ट्रीय चेतना और असमिया साहित्य

28 अक्तूबर 2015, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी द्वारा सिनमारा कॉलेज, गुवाहाटी के सहयोग से 28 अक्तूबर 2015 को 'राष्ट्रीय चेतना एवं असमिया साहित्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सिनमारा कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अंजन सैकिया ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कॉलेज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को रेखांकित किया। अकादेमी के प्रभारी श्री गौतम पॉल ने अकादेमी की गतिविधियों के बारे में चर्चा करते हुए कॉलेज के प्रति आभार व्यक्त किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. आनंद सैकिया ने की।

संगोष्ठी का उद्घाटन असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा ने किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में श्री बोरा ने स्वतंत्रता पूर्व से 21वीं शताब्दी तक राष्ट्रीय चेतना पर असमिया साहित्य के प्रभाव की विस्तार से चर्चा की। बीज वक्तव्य तेजपुर विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी एवं विदेशी विभाग के प्रोफ़ेसर डॉ. मदन शर्मा ने दिया। डॉ. शर्मा के अनुसार राष्ट्रीय चेतना भावना की समझ है और यह कभी-कभी एक विशेष क्षेत्र से संबंधित होता है। संगोष्ठी के समन्वयक श्री दीपेन नाथ ने आभार व्यक्त किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा ने की। इस सत्र में 'असमिया के रचनात्मक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का प्रतिबिंब' विषय पर डॉ. कुसमबर बरुआ ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। 'असमिया संगीत साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना' विषय पर लक्ष्मीकांत बेज़बरुआ, ज्योतिप्रसाद अग्रवाल, विष्णु प्रसाद रामा के गीतों एवं कविताओं में राष्ट्रीय चेतना की परख़ की गई थी।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता गुवाहाटी उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री दुर्लभ चंद्र महंत ने की। सत्र में श्री राजीव बोरा ने 'आधुनिक असमिया कविता में राष्ट्रीय चेतना का प्रतिबिंब' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री पद्मालोसन नाथ ने 'असम में समाजवादी

सोच का अध्ययन और असमिया साहित्य में उनका बिंब' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता श्री आनंद सैकिया ने की। डॉ. प्रदीप कुमार बरुआ ने समापन वक्तव्य दिया तथा कॉलेज के डॉ. बर्णाली बरठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'संस्कृत साहित्य में स्त्री-विमर्श' विषयक संगोष्ठी

29-30 अक्तूबर 2015, सागर (म.प्र.)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29-30 अक्तूबर 2015 को 'संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण एवं बीज भाषण प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, संयोजक, संस्कृत परामर्श मंडल ने किया। विषय प्रवर्तन प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय ने किया। मुख्य अतिथि प्रो. शशिप्रभा कुमार, कुलपति, साँची बौद्ध भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची रहीं। अध्यक्षता प्रो. एस.पी.व्यास, प्रभारी कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय ने की।

संस्कृत साहित्य में लगभग 100 स्मृतियाँ हैं, जिनमें स्त्री की दशा, उसके पुरुष के प्रति कर्तव्यों का विस्तार से विमोचन प्राप्त होता है। मनु स्मृति स्त्री के विवाह विच्छेद, संतानोत्पत्ति, परिवार के मुख्य कर्तव्यों का विवेचन करती है, परंतु मनु स्मृति के प्रति समाज का जो नज़रिया है, उसे समझने की आवश्यकता है, यह बात राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम, नई दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं डॉ. हरीसिंह गौर विवि के संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन पर बीज वक्तव्य में कही।

मुख्य अतिथि साँची विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शशिप्रभा कुमार ने कहा कि वैदिक संहिताओं में स्त्री विमर्श प्रत्येक दृष्टि से प्राप्त होता है। सत्र के अध्यक्ष प्रो. एस.पी. व्यास ने कहा कि संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श के साथ समस्त विश्व की प्राच्यनव्य समस्याओं पर बहुत पहले विमर्श किया जा चुका है। स्वागत भाषण विभागाध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने दिया। उद्घाटन सत्र में धर्मेंद्र कुमार सिंह देव की पत्रिका *पद्यबंधा* और डॉ. किरण आर्या की पुस्तक *राजतरंगिणी* के विविध आयाम का विमोचन हुआ। पहले सत्र में डॉ. नौनिहाल गौतम, डॉ. सुखदेव वाजपेयी ने शोध पत्र पढ़े। अध्यक्षता डॉ. रामरतन पांडे ने की। दूसरे सत्र में प्रो. उमारानी त्रिपाठी, डॉ. रामहेत गौतामे, डॉ. पूर्णचंद्र, डॉ. संजय कुमार, डॉ. शशि कुमार सिंह ने आलेख पढ़े।

नारियों को भारतीय समाज में विश्व में सर्वाधिक महत्व मिलता रहा है। कुछ अपवादों के कारण नारियों को समस्याओं का सामना करना पड़ा है, यह बात डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.पी. तिवारी ने संगोष्ठी के अंतिम दिन कही।

समापन सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने कहा कि नारी शक्ति की प्रतीक है। नारी ही पुरुष का निर्माण करती है, जिस प्रकार गंगा की पवित्रता में आज भी विश्वास बना हुआ है उसी प्रकार नारी के साथ लगातार अनुचित व्यवहार होता रहने पर भी उसके माता के रूप में, बहन के रूप में, पुत्री के रूप में श्रद्धा बनी हुई है, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि हमें ऐसे समाज की आवश्यकता है, जिसमें स्त्री-पुरुष दोनों समान रूप से स्वतंत्र रहें। समाज के हित में किया गया चिंतन, मनन, लेखन कभी व्यर्थ नहीं जाता है। प्रो. रमाकांत शुक्ल ने कहा कि लिंग के आधार पर मानवों के बीच भेद-भाव की सुरक्षा मिले। नारी शक्ति स्वरूप है, वह सर्वदा सम्मान की पात्र होती है।

प्रो. कुसुम भूरिया दत्त ने चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता की। इसमें प्रो. सरोज कौशल, प्रो. मंजुलता शर्मा, डॉ. अर्चना चौधरी, डॉ. धर्मेंद्र कुमार सिंह देव ने शोधपत्र

पढ़े। विभागाध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने आभार व्यक्त किया। संचालन डॉ. शशिकुमार सिंह ने किया।

'उन्नीसवीं सदी के उर्दू अख़बार एवं पत्रिकाएँ' विषयक परिसंवाद

31 अक्तूबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के सभागार में 31 अक्तूबर 2015 को 'उन्नीसवीं सदी के उर्दू अख़बार एवं पत्रिकाएँ' विषय पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसके उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बेगम आबिदा इनामदार, अध्यक्ष दकन मुस्लिम इंस्टीट्यूट, पुणे ने की।

बीज भाषण उर्दू के प्रसिद्ध विद्वान एवं आलोचक डॉ. शमीम तारिक़ ने दिया। उन्होंने उन्नीसवीं सदी की उर्दू पत्र-पत्रिकाओं के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि उर्दू पत्रकारिता ने अमन और शांति का दामन कभी नहीं छोड़ा और स्वतंत्रता संग्राम में भरपूर हिस्सा लिया। इस सत्र में सईद यहया नशीत ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मुश्ताक़ सदफ़ ने सभी प्रतिभागियों तथा

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का दृश्य

श्रोताओं का स्वागत किया। बेगम आबिदा इनामदार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के कार्यक्रमों की सराहना करते हुए कहा कि उन्नीसवीं सदी की उर्दू पत्र-पत्रिकाओं के विषय पर इस परिसंवाद का आयोजन करके अकादेमी ने हमें बीते दिनों की पत्रकारिता पर विचार-विमर्श करने का अवसर प्रदान किया है।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता उर्दू दैनिक *इंक़लाब*, मुंबई के संपादक श्री शाहिद लतीफ़ ने की और इस सत्र में सर्वश्री सलीम शहज़ाद, अतहर अज़ीज़ और शकील रशीद ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

हल्बी भाषा सम्मेलन

31 अक्तूबर 2015, जगदलपुर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर, छत्तीसगढ़ के संयुक्त तत्त्वावधान में जगदलपुर में हल्बी भाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उद्घाटन भाषण दिया, जबकि बस्तर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एन.डी.आर. चंद्रा ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। विख्यात हल्बी कवि डॉ. रामसिंह ठाकुर उद्घाटन सत्र में सम्मानीय अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र की निदेशिका प्रो. अन्विता अब्बी ने की। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित हरिहर वैष्णव द्वारा हल्बी से हिंदी में अनूदित पुस्तक *लक्ष्मी जागर* तथा सोनसिंह पुजारी द्वारा हल्बी से हिंदी में अनूदित पुस्तक *अंधकार का देश* का लोकार्पण भी किया गया। उद्घाटन सत्र के अतिरिक्त चार सत्रों में कई लेखकों/विद्वानों ने भाग लिया तथा हल्बी भाषा एवं साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर आधारित आलेखों के साथ-साथ अपनी कविताओं एवं कहानियों का भी पाठ किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. हरिहर वैष्णव ने की। इस सत्र में पाँच विद्वानों सर्वश्री यशवंत गौतम,

विक्रम सोनी, शिवकुमार पांडे, बलदेव पतरा एवं खेम वैष्णव ने क्रमशः 'लिखित हल्बी साहित्य', 'हल्बी भाषा एवं लिपि का विकास', 'हल्बी एवं छत्तीसगढ़ी के मध्य संबंध', 'हल्बी एवं हल्बा संस्कृति' तथा 'हल्बी समाज का विश्व दृष्टिकोण' पर केंद्रित आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. महेंद्र कुमार मिश्र ने की। इस सत्र में पाँच विद्वानों सर्वश्री सुभाष पांडे, बलबीर सिंह कच्छ, नारायण सिंह बाघेल, रूदनारायण पाणिग्रही तथा रूपेंद्र कवि ने क्रमशः 'हल्बी संस्कृति का अतीत, वर्तमान एवं भविष्य', 'हल्बी लोक संगीत', 'हल्बी परिवेश के लोक नृत्य', 'हल्बी परिवेश के त्योहार एवं उत्सव' तथा 'हल्बी समुदाय की समाजशास्त्रीय समझ' पर केंद्रित आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय तथा चतुर्थ सत्र कहानी एवं कविता पाठ को समर्पित था। इस सत्र में दो कथाकारों ने अपनी कहानियों का पाठ किया एवं 12 कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया। अकादेमी ने 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का भी आयोजन किया, जिसके अंतर्गत चार विभिन्न स्थानीय लोक समूहों ने छत्तीसगढ़ के पारंपरिक लोक गीतों एवं नृत्य का प्रदर्शन किया।

'गुरजादा की साहित्यिक आलोचना' पर परिसंवाद

1 नवंबर 2015, श्रीकाकुलम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा तेलुगु विभाग, गुरजादा एजुकेशनल सोसायटी, श्री काकुलम के सहयोग से 1 नवंबर 2015 को 'गुरजादा की साहित्यिक आलोचना' विषय पर श्रीकाकुलम में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

अकादेमी के कार्यक्रम सहायक श्री सुरेश कुमार ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए गुरजादा एजुकेशनल सोसायटी के प्रति आभार व्यक्त किया। साहित्य अकादेमी के तेळुगु परामर्श मंडल के संयोजक श्री एन. गोपी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि गुरजादा सामाजिक, साहित्यिक एवं व्यक्तिगत क्षेत्र में सुधार के चिह्न हैं। गुरजादा ने अद्भुत ढंग से चीज़ों को प्रस्तुत किया तथा विभिन्न पुस्तकों के रूप में विभिन्न पहलुओं पर 1396 पृष्ठों का लेखन किया, किंतु आलोचना से संबंधित कार्य 25000 पृष्ठों पर आधारित है और आज तक जारी है।

गुरजादा एजुकेशनल सोसायटी के अध्यक्ष श्री जी. बी. स्वामी ने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि तेळुगु साहित्य के लेजेंड्री लेखक के सम्मान में अकादेमी 'परिसंवाद' का आयोजन हमारे परिसर में कर रही है। गुरजादा समाज के लिए एक आदर्श एवं मॉडल हैं।

अकादेमी के तेळुगु परामर्श मंडल के सदस्य एवं अकादेमी के पुरस्कृत तेळुगु आलोचक श्री आर. चंद्रशेखर रेड्डी ने बीज वक्तव्य दिया तथा कहा कि गुरजादा का साहित्य 120 वर्षों पर फैला इतिहास है। उन्होंने सहमत और असहमत आलोचना की थी।

परिसंवाद का उद्घाटन सत्र

गायत्री कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड मैनेजमेंट, श्रीकाकुलम के उप प्रधानाचार्य श्री अपलक श्रीनिवास बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र में श्री बी. वी. ए. रामाराव नायडु ने गुरजादा के जीवन एवं साहित्यिक व्यक्तित्व पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री कालिदासु पुरषोत्तम ने कन्यासुलभ के साहित्यिक आलोचना की समीक्षा पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री अत्तादा अप्पला नायडु ने 'गुरजादा की कहानी पर साहित्यिक आलोचना की समीक्षा' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा सत्र की अध्यक्षता भी की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री गंतेदा गवरी नायडु ने की। श्री ए. गोपाल राव ने 'गुरजादा के साहित्य पर नकारात्मक आलोचन की समीक्षा' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री के. संजीव राव ने 'गुरजादा की साहित्यिक आलोचना का विकास' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र के समापन के बाद 'कमलिनी' (गुरजादा का दिछूबातू) फ़िल्म का प्रदर्शन किया गया।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री एन. गोपी ने की तथा उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि मुझे खुशी है कि इस परिसंवाद में भारी संख्या में छात्र भी श्रोता के रूप में उपस्थित हैं।

विशिष्ठ अतिथि श्री जी. वी. स्वामी नायडु ने इस परिसंवाद के आयोजन एवं आलेख प्रस्तुति पर अपने विचार व्यक्त किए। गायत्री कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड मैनेजमेंट के तेलुगु विभाग के श्री बी. गौरीशंकर राव ने परिसंवाद में पढ़े गए आलेखों की संक्षेप में समीक्षा की। गायत्री कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड मैनेजमेंट के प्राचार्य श्री पी. श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रभु छुगानी वफ़ा जन्मशतवार्षिकी

1-2 नवंबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा सिंधी ग़ज़ल के अग्रणी प्रभु छुगानी 'वफ़ा' की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में 1-2 नवंबर 2015 को एक संगोष्ठी का आयोजन अकादेमी के सभागार में किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रभु 'वफ़ा' का संक्षिप्त परिचय दिया। सिंधी के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री वासदेव मोही ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में 'वफ़ा' को रोमांस का शायर बताते हुए उन्हें एक सुर-ताल की तरह बताया। उन्होंने कभी अपने शब्दों के साथ धोखा नहीं किया। उन्होंने ग़ज़ल को एक गीत में तब्दील किया। उनकी कविता सिंधी कवियों के लिए एक विरासत है। अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रकाश ने अपने बीज वक्तव्य में संगोष्ठी की रूपरेखा के बारे में बताया। उन्होंने 'वफ़ा' को एक ईमानदार कवि बताया। उन्होंने आगे कहा कि उनकी कविताएँ संवेदनाओं की यात्रा है। उनकी कविताओं को फ़िल्मों में शामिल किया गया है।

बाएँ से दाएँ : श्री खीमण मूलाणी, श्रीमती माया राही, श्रीमती कमला गोकलाणी तथा सुश्री बिम्मी सदारंगाणी

उद्घाटन सत्र में श्री मोहन गेहाणी द्वारा लिखित प्रभु 'वफ़ा' पर विनिबंध का लोकार्पण किया गया। सत्र में सुश्री कमला गोकलाणी एवं सुश्री विम्मी सदारंगाणी ने 'वफ़ा' की कविताओं का पाठ किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री अर्जन चावला ने की। श्री मोहन गेहाणी, श्रीमती वीना शृंगी एवं श्री हुंदराज बलवाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री मोहन गेहाणी ने 'वफ़ा : जीवन और कविता' विषय पर, श्रीमती वीना शृंगी ने 'वफ़ा की पुस्तक झंकार' पर तथा श्री हूंदराज बलवाणी ने 'वफ़ा' के काव्य संग्रह 'परवाज़' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री गोवर्धन शर्मा 'घायल' ने की तथा श्री जेठो लालवाणी, संध्या कुंदनानी एवं श्रीमती सरिता शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री जेठो लालवाणी ने 'वफ़ा' के काव्य संग्रह 'सुर्ख गुलाब' पर, श्रीमती सरिता शर्मा ने 'वफ़ा' के काव्य संग्रह 'तूं सागर माँ लहर आगें' पर तथा श्रीमती संध्या कुंदनानी 'वफ़ा' के काव्य संग्रह 'अचतुपी ॐ' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री मोहन गेहाणी ने की तथा श्रीमती माया राही, मीना रूपचंदाणी एवं विनोद आसुदाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्रीमती माया राही ने वफ़ा के काव्य संग्रह *सीजा लहां ते आहे* पर, सुश्री मीना रूपचंदानी ने 'वफ़ा' के काव्य संग्रह *लुच्चे पये चकतारे जी तार* पर तथा विनोद आसुदाणी ने 'वफ़ा' की ग़ज़लों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्रीमती माया राही ने की तथा श्रीमती कमला गोकलाणी, श्रीमती विम्मी सदारंगाणी एवं श्री खीमण मूलाणी ने प्रभु वफ़ा की ग़ज़लों एवं नज़्मों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

पाँचवें सत्र में सर्वश्री लक्ष्मण दुबे, अर्जन चावला, गोवर्धन शर्मा 'घायल', नंद छुगानी ने आलेख प्रस्तुत किए, जबकि विनोद आसुदाणी ने सत्र की अध्यक्षता की। श्री प्रेम प्रकाश के धन्यवाद ज्ञापन से संगोष्ठी का समापन हुआ।

'भारतीय साहित्य में दलित स्त्री का चित्रण और चिंताएँ' विषय पर संगोष्ठी

2-3 नवंबर 2015 नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी और कमला नेहरू कॉलेज, दिल्ली के सहयोग से 2-3 नवंबर 2015 को भारतीय साहित्य में दलित स्त्री का चित्रण और चिंताएँ' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

हाइकू शतवार्षिकी

3 नवंबर 2015, करैकल

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा अवैयार गवर्नमेंट कॉलेज के सहयोग से 3 नवंबर 2015 को कॉलेज परिसर में 'परिसंवाद' का आयोजन किया गया।

अकादेमी के कार्यालय प्रभारी श्री के. पी. राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर. संबथ ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए हाइकू और प्राचीन तमिळ कविता विशेषतः संगम युग के दौरान रची गई रचनाओं के बीच समानता को रेखांकित किया। उन्होंने आधुनिक भारत के महान तमिळ कवि सुब्रमण्यम भारती रचित हाइकू के उदाहरण प्रस्तुत किए। अवैयार कॉलेज के प्राचार्य प्रो. वी. आनंदन ने अकादेमी द्वारा इस परिसंवाद के आयोजन पर बधाई दी। प्रो. आनंदन ने अकादेमी द्वारा प्रकाशित *कंबतासन* विनिबंध का लोकार्पण किया, जिसके लेखक श्री सायुबु मरिचेकर को प्रथम प्रति प्रस्तुत की गई। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुंदर मुरुगन ने आभार व्यक्त किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. एन. इलंगो ने की तथा 'हाइकू में सामाजिक विचार' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री तमिझ नेंजान एवं सुश्री जी. तेनमोझी ने क्रमशः 'हाइकू की पुदुचेरी में उत्पत्ति' एवं 'हाइकू में चीख' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध हाइकू कवि श्री सीनू तमिझमनी ने की तथा 'हाइकू विधा' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री ओवियम तमिझशेलवी एवं श्री पा. थिरुनवुकससु ने क्रमशः 'हाइकू : एक नारीवादी दृष्टिकोण' तथा 'हाइकू : एक सौंदर्यात्मक दृष्टिकोण' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद में भारी संख्या में लेखक, कवि, स्थानीय मीडिया के लोग उपस्थित थे।

'ओड़िया उपन्यास' पर संगोष्ठी

8 नवंबर 2015, कटक

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा सरला साहित्य संसद के सहयोग से 8 नवंबर 2015 को सारला भवन, कटक में 'ओड़िया उपन्यास' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा प्रतिभागियों का परिचय दिया। विश्वभारती के ओड़िया विभाग की प्रोफ़ेसर सबिता प्रधान ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने ओड़िया उपन्यासों की प्रवृतियों एवं रुझान के बारे में ऐतिहासिक तथ्यों के साथ विस्तार से चर्चा की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सारला साहित्य संसद के अध्यक्ष श्री प्रभाकर स्वाइन ने की तथा ओड़िया की लब्धप्रतिष्ठ कथाकार श्रीमती प्रतिभा राय मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुईं। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री मिहिर कुमार साहू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री रवि नारायण सेनापति ने की तथा श्री हेमंत कुमार दास, श्री प्रेमानंद महापात्र एवं श्रीमती सुलोचना दास ने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र में श्री प्रसन्न कुमार, श्रीमती सुनामणि राउत ने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री बिपिन बिहारी मिश्र ने सत्र की अध्यक्षता की। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री बैरागी चरण जेना ने की तथा श्री वैष्णव चरण सामल ने समापन वक्तव्य दिया तथा श्री संजय कुमार पटनायक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'मणिपुर के बाहर मणिपुरी लेखन, त्रिपुरा के विशेष संदर्भ में' विषयक परिसंवाद

9 नवंबर 2015, अगरतला, त्रिपुरा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा मणिपुरी साहित्य परिषद् के सहयोग से 'मणिपुर के बाहर मणिपुरी लेखन, त्रिपुरा के विशेष संदर्भ में' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन 9 नवंबर 2015 को अगरतला प्रेस क्लब, अगरतला में किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए मणिपुर से बाहर रहनेवाले मणिपुरी लेखकों के साहित्यिक योगदान को रेखांकित किया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे तथा मणिपुरी साहित्य परिषद्, त्रिपुरा के अध्यक्ष श्री एस. सुरेश सिन्हा ने अध्यक्षता की। श्री एम. अभिराम सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रथम सत्र में श्रीमती सरिता सिन्हा, श्री प्रेमचंद्र एवं श्री दिलीप कुमार सिन्हा ने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता श्री एल. कुमार सिन्हा ने की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री आर. के. जितेंद्रजीत सिंह ने की तथा श्री एच. करमजीत सिन्हा, श्री एल. बीर मंगल सिन्हा एवं श्री रतींद्र सिन्हा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'क़िस्सागोई एवं महिला लेखन' पर परिसंवाद

9-10 नवंबर, 2015, शिलांग

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं उत्तर-पूर्वी हिल विश्वविद्यालय (एनईएचयू) के अंग्रेज़ी विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'क़िस्सागोई एवं महिला लेखन' विषय पर द्वि-दिवसीय परिसंवाद का आयोजन 9-10 नवंबर 2015 को पुराने एनईएचयू गेस्ट हाऊस, शिलांग में किया गया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक श्री शांतनु गंगोपाध्याय ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। डॉ. एस्थर सिएम ने अपने आरंभिक व्याख्यान में आधुनिक संसार में क़िस्सागोई एवं महिला लेखन के महत्त्व तथा दोनों के आपसी संबंध पर बात की। एनईएचयू विश्वविद्यालय के मानविकी विभाग के डीन प्रो. बदाप्लिन वॉर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. सुकल्प भट्टाचार्जी ने सत्र की अध्यक्षता की तथा प्रो. सुरंजना चौधुरी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम दो सत्र कथापाठ को समर्पित थे, जिसकी अध्यक्षता मुनमुन मजुमदार एवं एस्थर सिएम ने की। इस सत्र में विभाष चौधुरी, अरूपकुमार दत्त, दीपा बलस्वर, रूपांजलि बरुआ, राधिका मेनन एवं दीयाली नायर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। महिला लेखन को समर्पित तीसरे एवं चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता माला रंगनाथन तथा ज्योतिर्मय प्रोधानी ने की। इस सत्र में नंदन दत्त, तेमसुला आओ, अनुपमा बसुमतारी, लानोसंगला, जाह्नवी बरुआ एवं उद्दीपना गोस्वामी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'ओड़िशा की लोक संस्कृति' पर संगोष्ठी

13-14 नवंबर 2015, बरहामपुर, गंजाम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा बरहामपुर यूनिवर्सिटी के ओड़िया विभाग के सहयोग से 'ओड़िशा की लोक संस्कृति' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 13-14 नवंबर 2015 को किया गया। प्रभारी कुलपति प्रो. प्रशांत कुमार पाध्ये ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि विदेशी कहानियों की तुलना में भारत की लोक कहानियों में लोक रूपांकन की क़िस्में अधिक मौजूद हैं। बरहामपुर यूनिवर्सिटी के ओड़िया विभाग के प्रो. देवी प्रसन्ना पटनायक ने आधार विषय का सार प्रस्तुत करते हुए यूनिवर्सिटी द्वारा दक्षिण ओड़िशा में लोक संस्कृति के लिए उठाए जा रहे क़दमों के बारे में बताया। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि डॉ. प्रतिभा राय ने कहा कि लोक संस्कृति लोगों को सपने देखने और नई दुनिया की खोज करने के लिए प्रेरित करती है। यह उज्ज्वल भविष्य को बनाने में सहायता करती है। उन्होंने अपील की कि लोग लोक कहानियों के महत्त्व को समझें और समाज को अंधविश्वासों से मुक्त रखें। सत्रांत में प्रो. प्रसन्न कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र का विषय था 'लोक नाटक'। डॉ. अशोक कुमार त्रिपाठी, डॉ. मनोरंजन बिसोई, श्री सिद्धार्थ शंकर पाढ़ी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा प्रो. कृष्ण चंद्र प्रधान ने सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. प्रधान ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में लोक नृत्य में नैतिकता और विश्वसनीयता पर प्रकाश डालते हुए कुछ नृत्यों के उदाहरण प्रस्तुत किए, जो लोक शैली के अंतर्गत आते हैं। दूसरे सत्र में डॉ. द्वारिकानाथ नायक, श्री प्रदीप कुमार मिश्र, डॉ. समीर भोई, श्री रंजन प्रधान ने 'ओड़िया लोकगीत' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा विश्वभारती के डॉ. मनोरंजन प्रधान ने सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. द्वारिकानाथ नायक ने पश्चिम ओड़िशा के लोक गीतों के बारे में बात की। श्री प्रदीप कुमार मिश्र ने उमरकोट क्षेत्र के कोरापुट में वाड्रा जनजाति के बीच प्रचलित लोक गीतों के बारे में बात की। डॉ. मनोरंजन प्रधान ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य

में लोक संस्कृति, लोक साहित्य, लोक कथा, लोक कहानी तथा अन्य के बारे में बात की।

तीसरा सत्र 'ओड़िया लोकाचार' पर आधारित था। श्री अशोक कुमार पटनायक, श्री कृष्णचंद्र निशंक, डॉ. शरत कुमार जेना, डॉ. सीमांचल प्रधान ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा डॉ. प्रसन्न कुमार स्वाइन ने अध्यक्षता की। डॉ. कृष्णचंद्र प्रधान ने लोक परंपरा और उसकी अमरता के बारे में बात की। विश्वभारती के डॉ. शरत जेना ने याद दिलाया कि जीवन में जो कुछ भी घटित हो रहा है, तथा मृत्यु के बाद भी, इंसान के सारे मानव कर्म लोक परंपरा में शामिल हैं। डॉ. सिमल प्रधान ने कहा कि लोक परंपरा के विभिन्न त्योहार अब भी गंजम में प्रचलित हैं।

चौथे सत्र में श्री आलोक बराल, डॉ. दिलीप कुमार स्वाइन, डॉ. संग्राम केसरी राउत एवं श्री संजय कुमार बाग ने 'ओड़िया लोक कहानी' पर आलेख प्रस्तुत किए तथा डॉ. अश्विनि कुमार पांग ने सत्र की अध्यक्षता की।

समापन वक्तव्य बरहामपुर यूनिवर्सिटी के कुलसचिव डॉ. अशोक कुमार महांती ने दिया तथा ओड़िया विभाग के डॉ. देवी प्रसन्न पटनायक ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

पलगुम्मी पद्मराजू जन्मशती परिसंवाद

14 नवंबर 2015, वेस्ट गोदावरी, आंध्र प्रदेश

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा रुद्रराजू फ़ाउंडेशन के सहयोग से तेलुगु साहित्य के महान कथाकार पलगुम्मी पद्मराजू जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन 14 नवंबर 2015 को किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने की तथा अपने उद्घाटन वक्तव्य में पलगुम्मी की एक कथाकार के रूप में उपलब्धियों, स्वतंत्रता आंदोलन में एवं सिने क्षेत्र में उनकी भूमिका तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कृत *गलिवाना* के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

रुद्रराजू फ़ाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष श्री आर. वी. एस. राजू ने आरंभिक वक्तव्य में अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया कि सम्मानित लेखक के जन्मशतवार्षिकी का आयोजन यहाँ किया जा रहा है।

डॉ. सी. मृणालिनी ने 'पद्मराजू राजनीतिक लेखक के रूप में' विषय पर विस्तृत आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. वेदगिरि रामबाबू ने पालगुम्मी द्वारा अपनाई गई कहानियों की तकनीक के बारे में बात की।

दूसरे सत्र में डॉ. रासा राजू, श्री च. क. वीरालक्ष्मी देवी, श्री आर. एस. वेंकटेश्वर राव एवं प्रो. येनदलुरी सुधाकर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

क्षेत्रीय सचिव एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

'संताली बाल साहित्य' पर परिसंवाद

14 नवंबर 2015, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा 'संताली बाल साहित्य' विषय पर 14 नवंबर 2015 को अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सभागार में परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद के प्रतिभागी

कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। संताली भाषा के प्रसिद्ध लेखक श्री बादल हेम्ब्रम ने अपने बीज वक्तव्य में संताली साहित्य के विकास में बाल साहित्य की भूमिका को रेखांकित किया। श्री पूर्ण चंद्र किस्कू एवं श्री विपिन चंद्र मुर्मू ने बाल गीत का पाठ किया, जबकि श्री पाँचू गोपाल हेंब्रम ने बाल कहानी का पाठ किया। श्री प्रधान मुर्मू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री शोभानाथ बेसरा ने की। श्री विश्वनाथ टुडू एवं श्री सारिधरम हांसदा ने क्रमशः 'प्राथमिक शिक्षा में बाल साहित्य' तथा 'बाल साहित्य में आधुनिक रुझान' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री बेसरा ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए 'समकालीन संताली बाल साहित्य' की चर्चा की।

बुच्ची बाबू जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

15 नवंबर 2015, बेंगळूरु

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा साहिती मित्रुलु इलुरु के सहयोग से प्रसिद्ध तेलुगु कथाकार बुच्ची बाबू की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर दिनांक 15 नवंबर 2015 को बेंगळूरु में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि एक कथाकार के रूप में बुच्ची बाबू ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों से लेखकों की कई पीढ़ियों को प्रभावित किया है। बीज वक्तव्य प्रसिद्ध तेलुगु लेखिका डॉ. कात्यायनी विद्महे वारंगल ने दिया। उन्होंने तेलुगु कथा में बुच्ची बाबू द्वारा रचित बहुमुखी प्रतिभा की कला के अनुमानों को रेखांकित किया। साहिती मित्रुलु के अध्यक्ष श्री लंका वेंकटेश्वरलू ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। श्रीमती सिवराजू सुब्बालक्ष्मी सत्र की मुख्य अतिथि थीं।

श्री ए. राममोहन रामाराव, श्री के. एन. मल्लेश्वरी, श्री वाय. रामकृष्ण राव, श्री टी. पतंजलि शास्त्री, श्री आर. सीतारामराव एवं श्रीमती पुतला हेमलता ने क्रमशः 'बुच्ची बाबू के लेखन का सौंदर्यशास्त्र', 'बुच्ची बाबू की कहानियाँ और पारिवारिक संबंध', 'चिवराकु भिजिलेडी–चेतना की धारा', 'बुच्ची बाबू की कहानियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण', 'बुच्ची बाबू का लेखन और अस्तित्ववाद' तथा 'बुच्ची बाबू के निबंध' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. एन. गोपी ने की तथा डॉ. वाय. सुधाकर ने समापन वक्तव्य दिया।

'तमिऴ और मलयाळम् के आधुनिक कवियों की तुलना' पर परिसंवाद

20 नवंबर 2015, माहे

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा श्री नारायण कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, माहे के सहयोग से 'तमिऴ और मलयाळम् के आधुनिक कवियों की तुलना' विषयक परिसंवाद का आयोजन 20 नवंबर 2015 को कॉलेज परिसर में किया गया।

उपक्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै के कार्यालय प्रभारी श्री के. पी. राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर संबथ ने तमिऴ और मलयाळम् के आधुनिक कवियों द्वारा रचित काव्य में शिल्प की समानता, सृजन एवं प्रकृति के अंतर की बात की। श्री नारायण कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन के प्राचार्य प्रो. ए. उन्नीकृष्णन ने अकादेमी द्वारा इस आयोजन के लिए अकादेमी को बधाई दी। सत्रांत में अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुंदर मुरुगन ने आभार व्यक्त किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री एम. परमेश्वरम ने की। इस सत्र में श्री निर्माल्य एवं श्री एम. उपेंद्रियन ने क्रमशः 'सच्चिदानंदन

की कविताएँ : आधुनिक तमिळ सौंदर्यशास्त्र का प्रभाव' एवं 'वल्लतोल और भारतीचर' शीर्षक अपने आलेखों का पाठ किया।

द्वितीय सत्र कविता-पाठ का था, जिसमें पाँच प्रतिष्ठित मलयाळम् कवियों सर्वश्री ए. गंगाधरन, राजन ई. पीड़िका, मुकुंदन पुलारी, जिनचंद्रन चोंवला एवं एम. अजय कुमार ने अपनी कविताएँ सुनाईं।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. उरु अशोकन ने की। श्री एच. पद्मनाभन ने समापन वक्तव्य दिया। परिसंवाद में भारी संख्या में लेखक, कवि, छात्र तथा स्थानीय लोग मौजूद थे।

सिंधी साहित्य को महिलाओं का योगदान

21 नवंबर 2015, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा मारुई, नई दिल्ली के सहयोग से अकादेमी के सभागार में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए ऐसे महिला उन्मुखी कार्यक्रमों के आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया।

अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए विनोदपूर्ण ढंग से कहा कि इस महिला प्रधान आयोजन में वे एकमात्र पुरुष प्रतिभागी हैं। सिंधी परामर्श मंडल की सदस्य एवं मारुई की प्रतिनिधि सुश्री वीणा शृंगी ने बीज वक्तव्य दिया और कहा कि 1926 के बाद से महिलाएँ सिंधी साहित्य में अपना योगदान दे रही हैं। कुछ प्रसिद्ध लेखिकाएँ जैसे चंद्रा आडवाणी, गुली सदारंगाणी, देवी वासवाणी ने स्वतंत्रता पूर्व विविध विधाओं में लेखन किया। सत्रांत में अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बाएँ से दाएँ डॉ. प्रेम प्रकाश, डॉ. कृष्णा किंबहुने, श्रीमती वीणा शृंगी

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुश्री वीणा शृंगी ने की तथा श्रीमती माया राही, श्रीमती देवी नागरानी एवं श्रीमती संध्या कुंदनानी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुश्री माया राही ने सिंधी महिला कवयित्रियों की कविता के संबंध में बात की। सुश्री देवी नागरानी ने सिंधी में लिखी जा रही नई कविताओं के संदर्भ में बात की। सुश्री संध्या कुंदनानी ने महिला लेखिकाओं द्वारा लिखे जा रहे यात्रा वृत्तांत के संदर्भ में बात की तथा पोपटी हीरानंदानी, सुंदरी उत्तमचंदानी, रीटा शहाणी एवं वीना शृंगी के लेखन को रेखांकित किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्रीमती माया राही ने की। सुश्री शालिनी सागर ने अपने अनुभवों को साझा किया। सुश्री भारती केवल रमानी एवं रितु मारिया ने भी सिंधी साहित्य में महिला लेखन के अपने अनुभवों को साझा किया।

डॉ. प्रेम प्रकाश के धन्यवाद ज्ञापन से परिसंवाद का समापन हुआ।

'कलिंगांध्र में तेलुगु साहित्य की वर्तमान प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद

22 नवंबर 2015, बरहामपुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा विकासम, बहरामपुर के सहयोग से 'कलिंगांध्र में तेलुगु साहित्य की वर्तमान प्रवृत्तियाँ' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन

किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से विस्तार से अवगत कराया।

अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने अकादेमी एवं कलिंगांध्र के संयुक्त आयोजन एवं तेलुगु साहित्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला। तेलुगु के प्रसिद्ध कवि श्री विजय चंद्र ने ओड़िशा के आधुनिक लेखकों की चर्चा करते हुए बरहामपुर के बारे में विशेषरूप से बात की। कलिंगांध्र के दूसरे लेखक डॉ. सहदेवराव ने कलिंगांध्र के लेखकों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

डॉ. चागंति तुलसी, डॉ. तुरलापति राजेश्वरी, डॉ. टी. वेंकटेश्वर राव, डॉ. पी. दिनकर, डॉ. सहदेवराव, डॉ. जी. श्रीरामुलु, श्री श्रीपति एवं एम. रविकुमार ने क्रमशः 'पड़ोसी भाषाओं में साहित्यिक विनिमय एवं अनुवाद', 'कलिंगांध्र में तेलुगु की', 'उप्पल लक्ष्मण राव कृत *अतदु-आमे*–राष्ट्रीय आंदोलन एवं लिंग-समानता के संदर्भ', 'टी.धर्म राव : एक समाज सुधारक लेखक', 'पी. आदिनारायण शास्त्री का साहित्यिक अवदान', 'साहित्यिक आलोचना के मानदंड', 'कलिंग्रांध के कथा साहित्य में सामाजिक पहचान की प्रतिध्वनि' तथा 'कलिंगांध्र के आधुनिक तेलुगु कवि' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए। क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

'पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं में आलोचना की आधुनिक प्रवृत्तियाँ' विषयक संगोष्ठी

24 नवंबर 2015, तेजपुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा 24 नवंबर 2015 को 'पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं में आलोचना की आधुनिक प्रवृत्तियाँ' विषय पर मास कम्युनिकेशन एवं जर्नलिज़्म विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर के स्क्रीनिंग हॉल में संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी उद्घाटन सत्र के अतिरिक्त दो सत्रों में विभाजित थी। अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए तेजपुर यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. मिहिर कांति चौधुरी ने यूनिवर्सिटी परिसर में अकादेमी द्वारा संगोष्ठी का आयोजन किए जाने की सराहना की। अपने बीज वक्तव्य में प्रो. रणजीत कुमार देव गोस्वामी ने कहा कि भारतीय भाषाओं में आधुनिकता पूर्वी भारत के असमिया, बाङ्ला और ओड़िया के विशेष संदर्भ में भारत के ब्रिटिश शासन काल में आया, एक उपहार है। सत्र के अध्यक्ष प्रो. अमर ज्योति चौधुरी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अकादेमी के कार्यों की सराहना की। तेजपुर यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ़ ह्यूमेनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़ के डीन प्रो. प्रदीप ज्योति महंत ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. मदन मोहन शर्मा ने की। प्रो. शर्मा ने अपने आलेख में अपने स्थापना के समय अर्थात् रूमानी युग के बाद के असमिया साहित्य की आलोचना के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की। बोडो साहित्य में आलोचना के विकास की चर्चा करते हुए

संगोष्ठी का एक सत्र

प्रसिद्ध बोडो लेखक श्री गोपीनाथ ब्रह्म ने कहा कि आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में बोडो को मान्यता मिलने के बाद बोडो साहित्य में आलोचना की जाने लगी। श्री ब्रह्म ने युवा लेखकों के समूह का उल्लेख किया, जो सक्रियता से इसमें योगदान कर रहे हैं। अपने आलेख में मैथिली के डॉ. अशोक अविचल ने मैथिली में आलोचनात्मक लेखन के इतिहास का विश्लेषण प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. विजय कुमार दत्त ने की तथा ओड़िया, मणिपुरी, नेपाली और संताली भाषाओं के विद्वानों ने अपनी भाषा की आलोचनात्मक प्रवृत्तियों की चर्चा की। मणिपुर यूनिवर्सिटी के मणिपुरी विभाग की डॉ. काङ्जम शांतिबाला देवी ने अपने आलेख में आधुनिक मणिपुरी साहित्य के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की। ओड़िया के प्रसिद्ध कवि एवं विद्वान श्री बाबाजी चरण पटनायक ने ओड़िया में आलोचना की प्रवृत्तियों पर बात की। श्री पटनायक ने प्रो. सुदर्शन आचार्य, गौरांग चरण दाश एवं भाग्यलिपि मल्ल को संदर्भित किया, जिन्होंने ओड़िया की साहित्यिक आलोचना में बहुमूल्य योगदान दिया है।

नॉर्थ बंगाल यूनिवर्सिटी के डॉ. नरेश चंद्र खाती ने नेपाली साहित्य में आलोचना के रुझान की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए मोतीराम भट्ट को उद्धृत किया। श्री मदन मोहन सोरेन ने अपना आलेख 'संताली साहित्य में आलोचना की प्रवृत्तियाँ' विषय पर प्रस्तुत किया तथा कहा कि संताली भारत की सबसे कमउम्र भाषा है, जिसे 2003 में भारतीय संविधान के द्वारा मान्यता दी गई।

समापन सत्र की अध्यक्षता डिब्रूगढ़ यूनिवर्सिटी के अंग्रेज़ी विभाग के प्रो. पोना महंत ने की। श्री महंत ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य में आलोचना की भूमिका को रेखांकित किया। अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पॉल के धन्यवाद ज्ञापन से संगोष्ठी का समापन हुआ।

कंचन बरुआ पर संगोष्ठी

27 नवंबर 2015, डिब्रूगढ़, असम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा डिब्रूगढ़ पुस्तक मेला में कंचन बरुआ पर संगोष्ठी का आयोजन 27 नवंबर 2015 को किया गया। अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. करबी डेका हज़ारिका ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की तथा असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष तथा लब्धप्रतिष्ठ कथाकार, कवि डॉ. नगेन सैकिया ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में डॉ. नगेन सैकिया ने कंचन बरुआ के प्रसिद्ध उपन्यास *असिमत जर हेरल सीमा* के बारे में बात की। बाङ्ला के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री तपन बंद्योपाध्याय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, ने विशेष रूप से बाङ्ला उपन्यास के अतीत और वर्तमान स्थिति के बारे में बात की। प्रसिद्ध आलोचक एवं लेखक डॉ. आनंद बदमुदै ने कंचन बरुआ के साहित्यिक लेखन पर समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया तथा लेखक - कवि एवं *साताश्री के* प्रबंध संपादक श्री अतनु भट्टाचार्य ने कंचन बरुआ के व्यक्तित्व एवं लेखन के बारे में बात की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. हज़ारिका ने कंचन बरुआ के उपन्यासों के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डाला तथा अकादेमी के इस आयोजन की सराहना की।

क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल बर्मन ने अतिथियों का स्वागत किया तथा मिलन ज्योति संघ के अध्यक्ष डॉ. बी. एन. बरठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बावा बलवंत जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

27-28 नवंबर 2015, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा भाईवीर सिंह साहित्य सदन के सहयोग से पंजाबी कवि बावा बलवंत जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 27-28 नवंबर 2015 को अकादेमी सभागार में किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने अपने आरंभिक वक्तव्य में संगोष्ठी की रूपरेखा और उद्देश्य पर प्रकाश डाला। डॉ. जसविंदर सिंह ने अपने बीज वक्तव्य में पंजाबी साहित्य में बाबा बलवंत के योगदान को रेखांकित किया। जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी के प्रो. भगवान जोश ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

संगोष्ठी को तीन सत्रों में विभाजित किया गया था। प्रथम और दूसरे सत्र की अध्यक्षता क्रमशः प्रो. गुरचरण सिंह अर्शी एवं प्रो. जगबीर सिंह ने की तथा श्री गुरिकवाल सिंह, प्रो. परमजीत एस. ढींगरा, श्री मोनिका कुमार, प्रो. सुखदेव सिंह, श्री सरबजीत सिंह, श्री मोहनजीत, डॉ. गुरनायब सिंह और डॉ. यादविंदर सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. करणजीत सिंह ने की तथा डॉ. मनमोहन, डॉ. राजिंदरपाल सिंह बरार, डॉ. वनिता, डॉ. कुलबीर और डॉ. अमरजीत घुम्मन ने क्रमशः 'बाबा बलवंत की विश्व सृष्टि', बाबा बलवंत की काव्य विचारधारा', 'बाबा बलवंत की मिथकविताओं में चित्रित नारी बिंब', 'बाबा बलवंत की दृष्टिमूलक व्यापकता' एवं 'बाबा बलवंत के काव्य का अध्ययन' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री हरविंदर सिंह ने समापन वक्तव्य दिया तथा धन्यवाद ज्ञापन से संगोष्ठी समाप्त हुई।

'बोडो एवं असमिया : भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में पारस्परिक प्रभाव' विषयक संगोष्ठी

28 नवंबर 2015, कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा कॉटन कॉलेज के बोडो विभाग एवं आलाप के सहयोग से 'बोडो एवं असमिया : भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में पारस्परिक प्रभाव' विषयक एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 28 नवंबर 2015 को कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी में किया गया। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। आलाप के सचिव डॉ. महेश्वर कलिता ने आरंभिक वक्तव्य दिया। अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेमानंद मसाहारी ने बीज वक्तव्य दिया तथा प्रसिद्ध विद्वान डॉ. प्रमोद चंद्र भट्टाचार्य मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन कॉटन कॉलेज के बोडो विभाग के प्रो. विरूपाक्ष गिरिबसुमतारी ने किया।

प्रथम सत्र में डॉ. स्वर्ण प्रभा चैनारी, डॉ. जीवेश्वर कोंच एवं डॉ. दिलीप राजबंशी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा डॉ. अनिल कुमार बोरो ने सत्र की अध्यक्षता की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. तरणी डेका ने की तथा डॉ. प्रांजल शर्मा वशिष्ठ, श्री प्रमथेश बसुमतारी एवं डॉ. महेश्वर कलिता ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र में कॉटन कॉलेज यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. ध्रुव ज्योति सैकिया मुख्य अतिथि थे तथा कॉटन कॉलेज के असमिया विभाग की प्रो. मंजू देवी पेगु ने सत्र की अध्यक्षता की। श्री नुरुल इस्लाम सैकिया तथा डॉ. अबूबकर सिद्दीक़ी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'इक्कीसवीं सदी की उर्दू नज़्म' पर परिसंवाद

28 नवंबर 2015, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 'इक्कीसवीं सदी की उर्दू नज़्म' विषय पर 28 नवंबर 2015 को बेंगळूरु में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी परिसर में उर्दू के इस आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री मुसहफ़ इक़बाल तौसीफ़ी ने की। श्री हक़्क़ानी उल क़ासमी ने 'इक्कीसवीं सदी में

उर्दू नज़्म' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए इक्कीसवीं सदी की उर्दू नज़्मों की प्रवृत्तियों को रेखांकित किया। श्री माहिर मंसूर ने इक्कीसवीं सदी में उर्दू की छोटी नज़्मों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। तीसरा आलेख 'इक्कीसवीं सदी में उर्दू की तवील नज़्में' विषय पर श्री सुलेमान खुमार ने प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री मुसहफ़ इक़बाल तौसीफ़ी ने पढ़े गए आलेखों पर अपने विचार व्यक्त किए। अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल की सदस्य सुश्री शाइस्ता यूसुफ़ ने शुक्रिया की रस्म अदा की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता सुश्री शाइस्ता यूसुफ़ ने की। इस सत्र में डॉ. आफ़ाक़ आलम सिद्दीक़ी, डॉ. ज़ुबैदा बेगम ने क्रमशः 'इक्कीसवीं सदी में उर्दू नज़्म : एक जाइज़ा' तथा 'उर्दू नज़्म उन्नीसवीं सदी से इक्कीसवीं सदी तक' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सुश्री यूसुफ़ ने पढ़े गए आलेखों पर विस्तार से चर्चा की। अंत में डॉ. शाइस्ता ने समाहार वक्तव्य देते हुए औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'यात्रा वृत्तांत एवं भारत की अमूर्त्त विरासत' विषयक परिसंवाद

28 नवंबर 2015, भोपाल

साहित्य अकादेमी एवं महारानी लक्ष्मीबाई, गवर्नमेंट गर्ल्स पी.जी. ऑटोनॉमस कॉलेज, भोपाल के सहयोग से 'यात्रा वृत्तांत एवं भारत की अमूर्त्त विरासत' विषयक परिसंवाद का आयोजन 28 नवंबर 2015 को भोपाल में किया गया। परिसंवाद के अंतर्गत इस विषय पर चर्चा की गई कि किस शहर के इर्द-गिर्द जनजातीय शिक्षा की बहुमूल्य विरासत निहित है, साथ-ही-साथ साँची के बौद्ध स्थल एवं भीमबेडका की अद्भुत चित्रित गुफाओं पर भी चर्चा की गई।

यूनेस्को ने हमेशा वैश्विक स्तर पर समुदायों एवं समूहों द्वारा निरंतर निर्मित की जा रही अमूर्त्त विरासत के बारे में बात की है तथा इनटेक के दस्तावेज़ों में भारत में लुप्तप्राय हो चुकी सांस्कृतिक भावाभिव्यक्तियों के संरक्षण की आवश्यकता के बारे में कहा गया है। परिसंवाद इसी समसामयिक विषय पर केंद्रित था, साथ ही साहित्य को जीवन से जोड़ने एवं ज्ञान की सीमाओं को विस्तृत करने के लिए अंतःविषय अध्ययन भी परिसंवाद में सम्मिलित था। यात्रा वृत्तांत के इस ढाँचे के साथ, मूलविषय ने भव्य प्रासंगिकता प्राप्त की एवं यात्रा वृत्तांत तथा मौखिक परंपराओं जैसी भारतीय सामग्री ने एक सांस्कृतिक कंपन उत्पन्न किया। प्रस्तुत आलेखों में विषयों, लेखकों एवं स्थलों—लद्दाख से बीरभूम, औपनिवेशिक काल, बंगाली महिला यात्री, ओड़िशा में प्रारंभिक मुठभेड़, हिमाचल के गुप्त क़िले तथा अमिताभ घोष की अद्वितीय शैली में इतिहास की पुनःव्याख्या इत्यादि को प्रतिबिंबित किया गया। उद्घाटन सत्र में एमएलबी कॉलेज की प्राचार्या डॉ. इंदुप्रभा तिवारी ने सभी लोगों का स्वागत किया तथा संयोजिका डॉ. सीमा रायज़दा ने कॉलेज के विद्यार्थियों एवं फ़ैकल्टी के लिए आयोजित इस परिसंवाद के महत्त्व के बारे में बात की। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भोपाल के प्रसिद्ध लेखक एवं पद्मश्री से विभूषित प्रो. रमेश चंद्र शाह ने इस बात पर ज़ोर दिया कि कैसे साहित्यिक ज्ञान संस्कृति को समझने में हमारी सहायता करता है। सम्मानीय अतिथि के रूप में उपस्थित शिक्षाविद् एवं प्रशासक श्री पद्मवीर सिंह ने वैश्विक प्रवचन के रूप में यात्रा के दर्शनशास्त्र की ओर विषय को विस्तार दिया। अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की सदस्या प्रो. मालाश्री लाल ने साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित परिसंवाद के विषय चयन के औचित्य पर प्रकाश डाला।

सत्र के अध्यक्ष श्री सुजॉय थाओसेन (आईपीएस) नए क्षितिज के उदाहरण के रूप में उत्तर-पूर्व की संस्कृति को सामने लाने पर चर्चा की।

दो विचार सत्रों के अंतर्गत केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट के कुलपति प्रो. सच्चिदानंद महांति ने 'शाही प्रवेशद्वार' पूर्वी भारत में औपनिवेशिक यात्रा पर आलेख प्रस्तुत किया, जिसके अंतर्गत ओड़िशा के सैलबाला दास, आनंद शंकर राय, कैलाश चंद्र भारतकर एवं महेश चंद्र राय जैसे यात्रियों के उदाहरण देते हुए उन्होंने प्रतिपादित किया कि पूर्वी भारत में औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत यात्रा लेखन स्वयं को परिभाषित करने का प्राथमिक साधन थी। कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रो. संयुक्ता दासगुप्ता के आलेख टैगोर परिवार की महिला यात्री' ने साबित किया कि जिन महिलाओं ने 'महिला दृष्टि' का प्रयोग किया, वही महिलाएँ लिखने, रिकॉर्ड करने, टिप्पणी तथा भावों एवं आलोचनात्मक, अवलोकन को शब्दों में गढ़ने में सक्षम थीं, चूँकि उन्होंने घर से बाहर निकलकर संसार में क़दम रखा था। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पुरस्कृत लेखक श्री मंज़ूर एहतेशाम ने की, साथ ही उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. सुमन्यु सतपथी की ओड़िशा के फ़कीर मोहन सेनापति के यात्रा वृत्तांत विशेष रूप से कम चर्चित/व्याख्यायित रचनाओं भ्रमणकारीर पत्र (1884) तथा वाल्तेयर दर्शन (1903) पर आधारित पुस्तक भी प्रस्तुत की। तत्पश्चात्, लेखक एवं स्वप्न विश्लेषक श्री मधु टंडन ने लद्दाख पर आधारित अपने नए उपन्यास 'हेमिस : ए सॉल एडवेंचर' पर बात की, जिसके अंतर्गत उन्होंने सुदूर मठ में बौद्ध तरीके से जीवन जीने का अन्वेषण किया है। यात्रा वृत्तांत की प्रभावोत्पादकता पर अध्यक्ष की विचारशील टिप्पणियों ने उनके स्वयं के रचनात्मक कार्य को इंगित किया।

परिसंवाद में संभाषण करते हुए श्रीमती उषा बंदे

भोजनोपरांत तृतीय सत्र में डॉ. उषा बंदे ने 'विरासत यात्रा मूर्त्त के माध्यम से अमूर्त्त– हिमाचल प्रदेश के क़िलों एवं महलों की यात्रा' पर बेहद सचित्र व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए इन विरासतों को भारत के अन्य भागों से बिलकुल अलग उन्हें उनके मूलरूप में प्रदर्शित किया। इसके पश्चात् अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली की प्रो. राधा चक्रवर्ती ने 'वास्तविक एवं काल्पनिक यात्रा : अमिताभ घोष को पढ़ना', के माध्यम से एक उत्कृष्ट सैद्धांतिक ढाँचे के साथ मिस्र तथा भारत के साथ उसके संबंधों का आकर्षक वर्णन प्रस्तुत किया।

चतुर्थ एवं अंतिम सत्र के अंतर्गत प्रो. मालाश्री लाल ने साहित्य एवं सामाजिक परिवर्तन के ज़मीनी प्रमाणों के साथ 'ग्रामीण पर्यटन : बीरभूम एवं पश्चिम बंगाल में संथाल महिलाएँ' पर आधारित सचित्र प्रलेखन प्रस्तुत किया।

अपराह्न के सत्रों की अध्यक्षता आईएएस अधिकारी श्री पीके दास ने की, जिनके स्वयं के यात्रा वर्णनों एवं समकालिक अंतः यात्राओं ने परिसंवाद में नया परिप्रेक्ष्य जोड़ दिया।

साहित्य अकादेमी द्वारा इस प्रकार के अर्थगर्भित परिसंवाद को आयोजित करने एवं भोपाल के एमएलबी कॉलेज के उत्कृष्ट वक्ताओं को उनके अर्थपूर्ण आलेखों के लिए धन्यवाद दिया गया। प्रत्युत्तर में, वक्ताओं ने साहित्य अकादेमी की ओर से प्रो. सीमा रायज़दा को उनके उत्कृष्ट सहयोग एवं व्यवस्था के लिए धन्यवाद दिया। परिसंवाद के अंतर्गत विद्यार्थी, शिक्षक एवं सभ्य समाज के आमंत्रित नागरिक उपस्थित थे। आलेखों एवं अध्यक्ष की टिप्पणियों की गुणवत्ता की सराहना की गई।

भक्त चरणदास पर संगोष्ठी

29 नवंबर 2015, बोलगढ़, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा नंदी घोष (सांस्कृतिक संस्था) बोलगढ़, खुर्द के सहयोग से ओड़िशा के युगांतर कवि भक्त चरणदास पर संगोष्ठी का आयोजन 29 नवंबर 2015 को किया गया।

अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री मिहिर कुमार साहू ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने भक्त चरणदास की रचनाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्री निरंजन साहू ने भक्त चरणदास के *मनबोध चौंतिसा* के बारे में बात करते हुए कहा कि यह मानव मन के अहंकार और अभिमान से मुक्ति दिलाने के लिए जागृत करता है। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी डॉ. बलभद्र साहू ने अपने बीज वक्तव्य द्वारा भक्त चरणदास के प्रशंसकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री श्री हरिबंधु साहू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में श्री विजय कुमार चौधुरी, श्री विश्वनाथ मल्लिक एवं श्री पूर्णचंद्र महापात्र ने भक्त चरणदास की रचनात्मकता पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री रामचंद्र मिश्र ने सत्र की अध्यक्षता की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री दुखी श्याम दास ने की तथा श्री आदिकंद साहू, श्री कैलाश चंद्र बंथा एवं श्री प्रदीप पटनायक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

बाएँ से दाएँ : डॉ. एम.एस.एच. जॉन, डॉ. शिव प्रसाद यादव, डॉ. केष्कर ठाकुर, डॉ. वीणा ठाकुर एवं डॉ. अवधकिशोर राय

साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद के सदस्य प्रो. प्रफुल्ल सुबुद्धि ने समापन सत्र की अध्यक्षता की तथा प्रो. प्रफुल्ल सुबुद्धि प्रमुख वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए। संगोष्ठी में लेखक, विचारक तथा मीडिया के लोग उपस्थित थे।

'मैथिली साहित्य में समालोचना की स्थिति और अपेक्षा' पर परिसंवाद

29 नवंबर 2015, भागलपुर

साहित्य अकादेमी और मारवाड़ी कॉलेज, भागलपुर (बिहार) के संयुक्त तत्त्वावधान में 29 नवंबर 2015 को भागलपुर में 'मैथिली साहित्य में समालोचना की स्थिति और अपेक्षा' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. अवधकिशोर राय ने कहा कि मैथिली भाषा नहीं, संस्कृति है। इसे मिथिलांचल में रहने वाले हर जाति, धर्म के लोग बोलते हैं। उन्होंने साहित्यकारों से अपील की कि वे युवाओं को भाषा-संस्कृति से जोड़ने के लिए आवश्यक क़दम उठाएँ। आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण देते हुए अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला तथा बताया कि किस प्रकार अकादेमी मिथिलांचल के सुदूर और अब तक उपेक्षित क्षेत्रों में जाकर कार्यक्रमों और पुस्तक-प्रदर्शनियों का आयोजन कर रही है।

परिसंवाद में विषय प्रवर्त्तन अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. वीणा ठाकुर द्वारा किया गया, जबकि बीज भाषण प्रख्यात मैथिली साहित्यकार डॉ. देवेंद्र झा ने दिया। उन्होंने कहा कि मैथिली साहित्य में समालोचना का उच्च स्थान है। डॉ. झा ने लेखन और समालोचना के अंतर को स्पष्ट करते हुए कहा कि बिना प्रतिभा, विद्वता और अभ्यास के साहित्य के गूढ़ार्थ की पहचान कर पाना संभव नहीं है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए मारवाड़ी कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. एम. एस. एच. जॉन ने मैथिली साहित्य के प्रति युवावर्ग की उदासीनता को रेखांकित करते हुए कहा कि जब तक हम अपनी भाषा को जनसरोकार की भाषा में तब्दील नहीं करेंगे, यह उदासीनता दूर नहीं होगी। सत्र का संचालन करते हुए अंत में कॉलेज के मैथिली विभागाध्यक्ष डॉ. शिव प्रसाद यादव ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद का विचार सत्र प्रख्यात मैथिली लेखक प्रोफ़ेसर केष्कर ठाकुर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. प्रमोद कुमार पांडेय, डॉ. रामसेवक सिंह एवं डॉ. महेंद्र नारायण राम ने क्रमशः 'मैथिली समालोचना की वर्तमान स्थिति', 'मैथिली समालोचना का दायित्व और अपेक्षा' तथा 'मैथिली समालोचना के अवरोधक तत्त्व' शीर्षक आलेखों का पाठ किया।

'मैथिली संस्कार गीत के विविध आयाम' विषयक परिसंवाद

1 दिसंबर 2015, सहरसा

साहित्य अकादेमी और एम. एल. टी. कॉलेज, सहरसा (बिहार) के संयुक्त तत्त्वावधान में 1 दिसंबर 2015 को सहरसा में 'मैथिली संस्कार गीत के विविध आयाम' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन सत्र प्रख्यात मैथिली साहित्यकार डॉ. धीरेंद्र नारायण झा 'धीर' की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश

बाएँ से दाएँ : डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, डॉ. धीरेंद्र झा धीर, डॉ. वीणा ठाकुर, डॉ. कुलानंद झा एवं डॉ. के.पी. यादव

डाला तथा विशेषकर मैथिली भाषा एवं साहित्य के संवर्द्धन के लिए किए जाने वाले प्रयासों की जानकारी दी। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित *मिथिलाक साहित्यिक-सांस्कृतिक उत्कर्ष में संतकवि लोकनिक अवदान* (सं. देवनारायण साह) नामक पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया।

परिसंवाद में आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए अकादेमी में मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. वीणा ठाकुर ने कहा कि मैथिली लोकगीत आज भी मिथिला के जनमानस का कंठहार बना हुआ है। जन्म से लेकर मृत्यु संस्कार तक के गीत मिथिला में प्रचलित हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी वाचिक परंपरा से चले आ रहे हैं। बीज भाषण देते हुए मैथिली लेखक डॉ. कुलानंद झा ने मैथिली संस्कार गीतों पर उपलब्ध कृतियों का उल्लेख करते हुए गीतों का समुचित वर्गीकरण किया और उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. धीर ने कहा कि संस्कार का मूल उद्देश्य यह है कि हम किसी से बेहतर बातें सीखें। सत्रांत में एम. एल. टी. कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. के. पी. यादव ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद का विचार सत्र डॉ. जगदीश यादव की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. रामनरेश सिंह, डॉ. रणजीत कुमार सिंह और डॉ. हरिवंश झा ने क्रमशः 'मिथिला में प्रचलित विविध संस्कारों के निहितार्थ', 'मैथिली संस्कार गीतों की व्यावहारिक स्थिति' तथा 'मैथिली संस्कार गीतों में शृंगार और अध्यात्म' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए।

'कोंकणी कविता और गीत' पर परिसंवाद

2 दिसंबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा कोंकणी कविताओं एवं गीतों पर एक अद्‌भुत परिसंवाद का आयोजन अकादेमी सभागार में किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने

डॉ. तानाजी हलर्नकर और श्री अजय वैद्य

प्रतिभागियों, कलाकारों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कोंकणी की गीतात्मक कविता के बारे में संक्षेप में बताया। कोंकणी के लब्धप्रतिष्ठ नाटककार श्री अजय वैद्य ने परिसंवाद का उद्‌घाटन करते हुए कहा कि पिंगल कविता का एक मुश्किल रूप है और कविता मुक्त छंद होती है। अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हर्लनकर ने बताया कि कोंकणी गीतों का मुंबई में ज़बरदस्त स्वागत हुआ और इसका पहला गीत आकाशवाणी मुंबई से प्रसारित किया गया, क्योंकि गोवा में गीत रिकॉर्डिंग की कोई सुविधा नहीं थी। कविता और गीत दोनों एक ही इकाई हैं।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता कोंकणी कवि श्री उदय भेंब्रे ने की। उन्होंने कहा कि गेय कविता भाषा के प्रवाह के बिना आदर्श रूप होती है, लेकिन उसका निष्कर्ष भाषा की जातीयता के अनुसार निकलता है। सत्र में तीन आलेख प्रस्तुत किए गए। श्री अक्षय नायक ने कोंकणी के भक्ति गीतों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। ये गीत मराठी के संत कवियों जैसे तुकाराम, नामदेव आदि से प्रभावित होकर लिखे गए। कोंकणी संस्कृति में आध्यात्मिक गीतों की शुरुआत श्री मनोहर शरगांवकर ने आरंभ किया था। सुश्री बिन्दिया वत्स ने भावनात्मक गीतों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गीत विधा की रचना 1952 में कृष्ण पै ने की थी। ये गीत भावनाओं, प्रेम दर्शन आदि को अभिव्यक्ति

करते हैं। सुश्री शकुंतला भरने ने कोंकणी भाषा की सबसे लोकप्रिय विधा यात्रा पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। गीत की यह विधा कोंकणी भाषा की मूल पहचान है। ये गीत प्रायः पार्टियों एवं उत्सवों में गाए जाते हैं। ये गीत लीक से हटकर और पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित हैं।

दूसरा सत्र अपनी तरह का एक अलग सत्र था, जिसमें किसी आलेख की प्रस्तुति नहीं हुई। यह सचमुच एक गोवा उत्सव था, जिसमें तीनों आलेख प्रस्तुतकर्ताओं ने संबंधित शैलियों में कोंकणी गीतों को गाकर प्रस्तुत किया। श्रोताओं ने इस अद्‌भुत प्रस्तुति का आनंद उठाया।

'मैथिली साहित्य में बदलती सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्य' पर परिसंवाद

6 दिसंबर 2015, जमशेदपुर

साहित्य अकादेमी और मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, जमशेदपुर (झारखंड) के संयुक्त तत्त्वावधान में 6 दिसंबर 2015 को जमशेदपुर में 'मैथिली साहित्य में बदलती सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद के आरंभ में श्रोताओं एवं विद्वानों का औपचारिक स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला तथा बताया कि अकादेमी मिथिलांचल के अतिरिक्त उन शहरों/नगरों में कार्यक्रम आयोजित कर रही है, जहाँ मैथिली भाषी बहुतायत में निवास कर रहे हैं। टाटा स्टील के उपाध्यक्ष श्री बी. के. दास ने उद्‌घाटन भाषण करते हुए साहित्य के सामाजिक सरोकार पर अपने विचार व्यक्त किए। अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. वीणा ठाकुर ने विषय प्रवर्त्तन करते हुए कहा कि सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्य का अर्थ है, समकालीन होना। बीज भाषण देते हुए डॉ. अशोक अविचल ने सामाजिक चेतना के प्रति मैथिली साहित्यकारों की सजगता को रेखांकित किया। विशिष्ट अतिथि श्री हरिवल्लभ सिंह 'आरसी' ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। सत्राध्यक्ष और मिथिला सांस्कृतिक परिषद् के अध्यक्ष श्री लक्ष्मण झा ने समाज पर मैथिली साहित्य के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पर अपने विचार व्यक्त किए।

परिसंवाद का विचार सत्र श्री ब्रजकिशोर मिश्र की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। डॉ. रवींद्र कुमार चौधरी ने 'मैथिली साहित्य में मूल्यगत परिवर्तन की प्रवृत्ति' शीर्षक आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि मूल्य द्वारा ही मनुष्य सामाजिक प्राणी बना रहा है। श्री जयंत कुमार झा ने 'मैथिली साहित्य में सामाजिक चेतना और संवेदना' शीर्षक आलेख में विद्यापति सहित अनेक मैथिली कवियों को संदर्भित करते हुए कहा कि इन लोगों ने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया है। श्री अनमोल झा ने 'मैथिली कहानी एवं उपन्यासों में सामाजिक चेतना' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। सत्र के अध्यक्ष श्री ब्रजकिशोर मिश्र ने कहा कि जब-जब समाज को जागरूक करने और झकझोरने की ज़रूरत पड़ी है, तब-तब लेखकों ने अपनी क़लम से लोगों में सामाजिक चेतना जागृत करने का कार्य किया है।

'अनुवाद में शिल्प एवं चुनौतियाँ' विषयक परिसंवाद

9 दिसंबर 2015, पोल्लची

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा अरुतशेलवर डॉ. एन. महालिंगम ट्रांसलेशन इंस्टीट्यूट के सहयोग से 'अनुवाद में शिल्प एवं चुनौतियाँ' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 9 दिसंबर 2015 को डॉ. एन. महालिंगम कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी कैम्पस, पोल्लची में किया गया।

कार्यालय प्रभारी डॉ. एस. राजमोहन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नाचिमुथु ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। लब्धप्रतिष्ठ अनुवादक श्रीमती प्रभा श्रीदेवन ने बीज वक्तव्य दिया। डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र में श्रीमती जयंत, श्री बालकृष्णन एवं श्री जी. कुप्पुस्वामी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता श्री मालन ने की।

द्वितीय सत्र में श्री पुविआरसु एवं श्रीमती तारा गणेशन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने सत्र की अध्यक्षता की।

समापन सत्र की अध्यक्षता ट्रांसलेशन इंस्टीट्यूट के श्री सी. रामास्वामी ने की तथा समापन वक्तव्य श्री के. चेलप्पन ने दिया। महालिंगम कॉलेज के सहायक प्रवक्ता ए. सेंतिल कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डोगरी कविता पर संगोष्ठी

12-13 दिसंबर 2015, जम्मू

साहित्य अकादेमी और जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी, जम्मू के संयुक्त तत्त्वावधान में 12-13 दिसंबर 2015 को जम्मू में 'डोगरी कविता' पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. डी. शर्मा ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने सामाजिक जीवन में कविता के महत्त्व का उल्लेख किया और अनेक संदर्भ देकर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि संगोष्ठी के दौरान होने वाले विचार-विमर्श द्वारा डोगरी कविता की और उसकी समृद्धि को लेकर कुछ ठोस बातें हो सकेंगी, ऐसी आशा है। इस अवसर पर अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि डोगरी साहित्य की हर विधा में भरपूर लेखन हो रहा है, लेकिन ज़रूरत इस बात की है कि स्तरानुकूल उसका मूल्यांकन भी हो। यह संगोष्ठी इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि इसमें डोगरी कविता के अनेक अनछुए पहलुओं को उजागर करनेवाले आलेख पढ़े जाएँगे।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी कवयित्री श्रीमती पद्मा सचदेव ने की, जबकि बीज वक्तव्य श्री छत्रपाल ने दिया। संगोष्ठी के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत किया, जबकि सत्र-संचालन करते हुए जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी के अतिरिक्त सचिव अरविंदर सिंह अमन ने सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

श्री छत्रपाल ने अपने बीज वक्तव्य में डोगरी कविता के अतिरिक्त भारतीय कविता में समय-समय पर होनेवाले परिवर्तनों और समय के साथ कविता के संग जुड़ने वाले प्रतिमानों पर विस्तार से बात की। डोगरी कविता के अब

बाएँ से दाएँ : डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, प्रो. ललित मंगोत्रा, प्रो. आर.डी. शर्मा, श्री छत्रपाल और श्रीमती पद्मा सचदेव

तक के सफ़र में होने वाले परिवर्तनों से संबंधित आयामों पर भी उन्होंने अपने विचार रखे और अनेक डोगरी कवियों की रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्रीमती पद्मा सचदेव ने कहा कि ऐसे आयोजनों से हमें यह अवसर प्राप्त होता है कि वैश्वीकरण के दौर में हम अपनी भाषा और साहित्य का सही-सही मूल्यांकन कर सकें। उन्होंने श्रोताओं से अपने अनुभव साझा किए और अनेक डोगरी कवियों की रचनाओं का उल्लेख करते हुए उन्हें स्मरण किया। उन्होंने डोगरी कविता के छंदयुक्त और छंदमुक्त स्वरूप की बात भी की।

भोजनोपरांत प्रथम सत्र जाने-माने डोगरी साहित्यकार श्री देशबंधु डोगरा 'नूतन' की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. ओम गोस्वामी, श्री नरेंद्र भसीन और श्री सुरजीत होश ने क्रमशः 'डोगरी कविता में राजनीतिक चेतना-सन् 2000 तक', 'डोगरी कविता में राजनीतिक चेतना-सन् 2000 के बाद' तथा 'डोगरी कविता में मानवीय अधिकार विमर्श' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र जम्मू विश्वविद्यालय के डोगरी विभागाध्यक्ष प्रो. परमेश्वरी शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. सुनील कुमार, डॉ. यश रैणा और डॉ. निर्मल विनोद ने क्रमशः 'डोगरी कविता में सूफ़ियाना रंगत', 'डोगरी कविता में मिथ' और 'स्वच्छंद डोगरी कविता : वर्तमान स्थिति' शीर्षक आलेखों का पाठ किया। दोनों ही सत्रों में सुधी श्रोताओं के साथ प्रश्नोत्तर एवं विमर्श का अवसर भी प्रदान किया गया।

दूसरे दिन संगोष्ठी के तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. अर्चना केसर ने की। इस सत्र में डॉ. चंचल भसीन और डॉ. अशोक अंबर ने क्रमशः 'डोगरी कविता में नारी-विमर्श' तथा 'उर्दू बहर एवं वज़न की रोशनी में डोगरी ग़ज़ल' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र सुपरिचित डोगरी गीतकार श्री ज्ञानेश्वर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में डॉ. जोगिंदर सिंह और श्री जगदीप दुबे ने क्रमशः 'डोगरी कविता में कालचेतना-सन् 2000 तक' तथा 'डोगरी कविता में कालचेतना-सन् 2000 के बाद' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए।

'बाल साहित्य : स्वरूप एवं चुनौतियाँ' विषयक परिसंवाद

26 दिसंबर 2015, कालवान

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा इंस्टीट्यूट ऑफ़ नॉलेज इंजीनियरिंग, नासिक तथा आर्ट्स, साइंस और कॉमर्स कॉलेज, कालवान के सहयोग से 'बाल साहित्य : स्वरूप एवं चुनौतियाँ' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 26 दिसंबर 2015 को आर्ट्स, साइंस एवं कॉमर्स कॉलेज, कालवान में किया गया।

बाएँ से दाएँ : बाबा भांड, श्रीमती मंगला वारखेडे, श्रीमती उषा शिंदे, श्री शशिकांत पवार एवं डॉ. कृष्णा किंबहुने

क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। श्रीमती मंगला वरखडे ने आरंभिक वक्तव्य दिया।

परिसंवाद का उद्घाटन मराठी लेखक श्री बाबा भांड ने किया। उन्होंने कहा कि साहित्य बच्चों के मन को बहुत सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। श्री भांड ने एमोरी और ग्रेगोरी बर्नस के तंत्रिका विज्ञान के हाल के प्रयोगों का उदाहरण देते हुए कहा कि बच्चों के लिए लिखना बहुत मुश्किल काम है। मराठी में साने गुरु जी, एन. डी. थमांकर, विनोबा भावे, यदुनाथ थट्टे, बी. आर. भागवत, सई परांजपे, विजया वाड तथा भारत सासने निरंतर बच्चों के लिए लिखते रहे हैं।

प्रथम सत्र का विषय था—'बाल साहित्य : प्रकृति एवं विषय' तथा सत्र की अध्यक्षता श्री जी. ए. बुवा ने की। श्री नवनाथ तुपे ने अपने आलेख में कहा कि लेखकों को केवल बच्चों की भाषा पर नहीं, बल्कि उनके विचारों की प्रक्रिया पर भी ध्यान देना चाहिए। श्री नरेंद्र लंजेवर ने अपने आलेख में कहा कि मौखिक कहानी कथन बच्चों के सीखने एवं विकास में मददगार साबित होती है। श्री विद्याधर करंदीकर ने बाल रंगभूमि पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि मराठी साहित्य में बाल नाट्य मंच की 150 वर्षों की परंपरा है। उन्होंने कहा कि थियेटर का विकास पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, लोक कला और कल्पना से हुआ है।

द्वितीय सत्र का विषय था 'बाल साहित्य में अनुवाद, अनुकूलन एवं दूसरे प्रयोग' तथा सत्र की अध्यक्षता एकनाथ पगारे ने की। श्री पृथ्वीराज तौर ने अपने आलेख में कहा कि अनूदित पुस्तकें, जिसका आवरण सुंदर, रंगीन चित्रकारी हो, वे बच्चों को ज़्यादा आकर्षित करती हैं। श्री विलास गीते ने बाङ्ला में बाल साहित्य के बारे में बात की। सुश्री संध्या ठकसाणे ने बाल साहित्य के अनुभवों को साझा किया। श्री भारत सासने ने समापन वक्तव्य दिया।

सत्येंद्रनाथ शर्मा जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

27 दिसंबर 2015, गुवाहाटी

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा असम प्रकाशन परिषद् के सहयोग से सत्येंद्रनाथ शर्मा जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन गुवाहाटी पुस्तक प्रदर्शनी, गुवाहाटी में 27 दिसंबर 2015 को किया गया। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया। परिसंवाद में बीज वक्तव्य प्रसिद्ध विद्वान श्री नगेन सैकिया ने दिया। अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक श्री रामकुमार मुखोपाध्याय परिसंवाद में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री गोविंद प्रसाद शर्मा, श्रीमती मंजूमाला दास और श्री सैलेन भराली ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्रीमती करबी डेका हज़ारिका ने सत्र की अध्यक्षता की।

'मराठी कथा साहित्य' पर परिसंवाद

29 दिसंबर 2015, जालना, मुंबई

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा श्रीमती दानकुँवर महिला महाविद्यालय, जालना के सहयोग से 'मराठी कथा साहित्य' विषय पर 29 दिसंबर 2015 को कॉलेज में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध मराठी लेखक श्री मनोहर शहाणे ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में अकादेमी द्वारा साहित्यिक जागरूकता के लिए किए जा रहे प्रयासों के लिए अकादेमी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि कथन प्रत्येक और हर दिल की आत्मा होती है। उन्होंने आगे कहा कि कथन की पहली अवधारणा को पेंटिंग की कला में देखा जा सकता है।

बाएँ से दाएँ : श्री अविनाश सन्ने, श्री राजा होळकुंडे एवं श्री महेश खरात

श्री अविनाश सप्रे ने अपने बीज वक्तव्य में संस्कृति और साहित्य के बंधन की पृष्ठभूमि के आख्यान पर सोचने की सिफ़ारिश की। कल्पनाओं के संकाय के द्वारा लेखक / कलाकार अपनी कल्पना को वास्तविकता में बदल देता है और यह परिवर्तन कला है। श्रीमती दानकुँवर महिला महाविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग की अध्यक्ष सुश्री अलका नाथरेकर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री अविनाश सप्रे ने की। श्री विद्यासागर पाटंगकर ने 'प्राचीन मराठी साहित्य की कथा परंपरा', विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि कथन की कला को वक्ता और श्रोता के बीच संवाद से विकसित किया गया। प्राचीन समय में आख्यान, प्रवचन, कीर्तन आदि कथन के रूप में प्रचलित थे। श्री महेश खरात ने अपने आलेख में विभिन्न प्रकार के कथात्मक साहित्य जैसे कहानी, उपन्यास आदि की चर्चा की। श्री राजा होळकुंडे के आलेख में कथात्मक साहित्य, कहानी, समय एवं स्थान, सूत्रधार एवं शैली आदि महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का उल्लेख था। श्री रणधीर शिंदे ने लोक साहित्य कथा तकनीक के बारे में बात की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री प्रदीप देशपांडे ने की तथा श्री कृष्णात खोत, श्री आसाराम लोमटे ने अपनी रचनात्मक प्रक्रिया को साझा किया।

'दक्षिण भारत का दलित लेखन' विषयक परिसंवाद

29 दिसंबर 2015, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा डॉ. बी. आर. अंबेडकर स्टडी एंड रिसर्च सेंटर, बेंगळूरु यूनिवर्सिटी के सहयोग से 'दक्षिण भारत का दलित लेखन' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन प्रो. वेंकटगिरि गौड़ा हॉल, बेंगळूरु यूनिवर्सिटी में 29 दिसबंर 2015 को किया गया। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महाळिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि इस परिसंवाद द्वारा दक्षिण भारत में लिखे जा रहे दलित लेखन का मूल्यांकन करने में आसानी होगी। बेंगळूरु यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. एम. थिम्मेगौड़ा ने परिसंवाद का उद्घाटन किया तथा कुलसचिव प्रो. के. सीतम्मा तथा अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल थे तथा अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने सत्र की अध्यक्षता की।

प्रो. एम. थिम्मेगौड़ा ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में भारत में दलित लेखन के विकास और अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया, जो साहित्य के क्षेत्र में एक अनूठे आंदोलन के रूप में उभर कर आया। डॉ. बी. आर. अंबेडकर स्टडी एंड रिसर्च सेंटर के निदेशक डॉ. सिद्धलिंगैया ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि दलितों

संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

के चेहरे पर मुस्कान होती है, जबकि उनके दिल दर्द से भरे होते हैं। उन्होंने कहा कि हर जाति के ग़रीब लोगों को दलित के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। डॉ. के. सीतम्मा ने कहा कि दलित साहित्य दुनिया में अदम्य मानवीय जीवन के अनुभवों के लिए जाना जाता है। डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने कहा कि दलित साहित्य पिछड़ी संस्कृति के एक साहित्य के रूप में उभरा है। डॉ. कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में ब्रिटिश शासन में दो बड़े आंदोलन—भक्ति आंदोलन तथा सार्वजनिक शिक्षा आंदोलन की तरफ़ संकेत किया, जिसकी ज्ञान और अभिव्यक्ति ने स्वतंत्रता के लिए लोगों को प्रशिक्षित किया।

प्रथम सत्र में मलयाळम् के प्रसिद्ध दलित कवि डॉ. एम. बी. मनोज ने 'मलयाळम् में दलित कविता' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में तेलुगु कथाकार श्री चिलकुरी देवपुत्र ने 'तेलुगु में दलित कथा' विषय पर तथा तेलुगु कवि एवं लेखक डॉ. पुतल हेमलता ने 'तेलुगु में दलित कविता' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र में दलित कवि एवं लेखक श्री रवि कुमार ने 'तमिऴ में दलित कथा' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। प्रसिद्ध दलित कवयित्री डॉ. अरंग मल्लिका ने 'तमिऴ में दलित कविता' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। कन्नड भाषा के दलित लेखक एवं आलोचक डॉ. मोगल्ली गणेश ने 'कन्नड में दलित कथा' विषय पर तथा कन्नड की दलित कवयित्री डॉ. के. अनसूया कांबले ने 'कन्नड में दलित कविता' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रस्तुत किए गए आलेखों में उदाहरण सहित दक्षिण भारतीय भाषाओं में दलित लेखन को रेखांकित किया गया था। डॉ. बी. आर. अंबेडकर स्टडी एंड रिसर्च सेंटर की डॉ. शारदा ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा आभार व्यक्त किया।

इस्मत चुग़ताई जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

2-3 जनवरी 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा उर्दू मासिक *इंशा* के सहयोग से आयोजित द्वि-दिवसीय इस्मत चुग़ताई जन्मशतवार्षिकी राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 2-3 जनवरी 2016 को कोलकाता में हुआ। पहले दिन का कार्यक्रम भारतीय भाषा परिषद् के मुख्य सभागार शेक्सपीयर सरणी में हुआ, जिसमें अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने मेहमानों का स्वागत किया। श्री चंद्रभान ख़याल, संयोजक, उर्दू परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने आरंभिक वक्तव्य में इस्मत पर गुफ़्तगू करते हुए कहा कि वह पहली महिला हैं, जिन्हें हम उत्तर आधुनिकता से जोड़ सकते हैं। विख्यात बाङ्ला लेखिका श्रीमती नवनीता देवसेन का आरंभिक वक्तव्य श्री रामकुमार मुखोपाध्याय ने पढ़कर सुनाया। स्वास्थ्य ठीक न होने की वजह से वह

परिसंवाद का उद्घाटन सत्र

संगोष्ठी में नहीं आ सकीं। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डोगरी लेखिका श्रीमती पद्मा सचदेव ने की। श्रीमती सचदेव ने इस्मत चुग़ताई से अपने घरेलू संबंधों पर प्रकाश डाला। उर्दू के मशहूर कवि और आलोचक फ़रहत एहसास ने बीज-भाषण दिया। सत्र के अंत में माहनामा *इंशा* के संपादक श्री फ़े. सीन. एजाज़ ने तमाम मेहमानों का शुक्रिया अदा किया।

पहले सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध उर्दू कथाकार श्री सैयद मुहम्मद अशरफ़ ने की तथा श्री इक़बाल मसूद और श्री निज़ाम सिद्दीक़ी ने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने की। इस सत्र में सर्वश्री मोईन शादाब, अबूज़र हाशमी और अनीस रफ़ी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तीसरे सत्र की अध्यक्षता हिंदी लेखिका श्रीमती चंद्रकांता ने की। इस सत्र में श्रीमती शबनम अशाई और श्री ज़हीर अनवर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। ख़ास मेहमान की हैसियत से प्रो. मोहम्मद ज़मान आज़ुर्दा ने भी इस सत्र में शिरकत की।

दूसरे दिन 3 जनवरी 2016 की संगोष्ठी सत्यजित रे सभागार, आई.सी.सी.आर. में आयोजित की गई। दूसरे दिन के पहले और संगोष्ठी के चौथे सत्र की अध्यक्षता डॉ. सोमा बंद्योपाध्याय ने की और इस सत्र में श्रीमती सादिक़ा नवाब सेहर, श्री पापुलर मेरठी और श्री आसिम शहनवाज़ शिब्ली ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के पाँचवें और अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. शाफ़े क़िदवई ने की तथा डॉ. मौला बख़्श और श्री फे. सीन. एजाज़ ने आलेख प्रस्तुत किए।

आख़िर में अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने संगोष्ठी की कामयाबी पर रोशनी डाली। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मुश्ताक़ सदफ़ ने अंत में तमाम श्रोताओं एवं प्रतिभागियों का शुक्रिया अदा किया।

'पश्चिमी क्षेत्र में अनुवाद संस्कृति' विषयक परिसंवाद

6 जनवरी 2016, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा 'पश्चिमी क्षेत्र में अनुवाद संस्कृति' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 6 जनवरी 2016 को अकादेमी के सभागार में किया गया। क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि विभिन्न भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य को अनुवाद संस्कृति के रूप में अपनाना चाहिए। आलोचना का भी समान रूप से अनुवाद किया जाना चाहिए। लब्धप्रतिष्ठ मराठी अनुवादक श्री राम पंडित ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में अनुवाद के अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने निरंतर मराठी-उर्दू-मराठी साहित्य का अनुवाद किया है। उन्होंने कहा कि अनुवाद के द्वारा हम दो विभिन्न संस्कृतियों को जान पाते हैं। किसी भाषा के मुहावरे का अनुवाद नहीं किया जा सकता। स्रोत भाषा से कविता का अनुवाद बहुत कठिन होता है। उर्दू लेखक एवं अनुवादक श्री

बाएँ से दाएँ : श्री नामदेव ताराचंदाणी, श्री रमण सोनी, श्री गोकुलदास प्रभु, श्री बलवंत जेऊरकर

मुइनुद्दीन उस्मानी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि अनुवाद कार्य मूल लेखन से अधिक कठिन होता है। यह बहुत दुख की बात है कि अनुवादक को उसके काम का श्रेय नहीं दिया जाता तथा मूल लेखक की तुलना में अनुवादक को दूसरे दर्जे का माना जाता है। उद्घाटन सत्र का समापन मंगेश पडगांवकर एवं लाभशंकर ठकार को श्रद्धांजलि अर्पित कर किया गया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री नामदेव ताराचंदाणी ने की तथा श्री रमण सोनी ने 'गुजराती भाषा में अनुवाद संस्कृति' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने अपना आलेख *पंचतंत्र* के 1824 में प्रकाशित गुजराती अनुवाद से आरंभ किया। गुजराती साहित्य में अनुवाद का आरंभ एक पारसी द्वारा किया गया था। सुश्री प्रशांती तलपंकर ने 'कोंकणी साहित्य में अनुवाद संस्कृति' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने युवा अनुवादकों का उदाहरण देते हुए कहा कि उन्हें अनुवाद की अवधारणा की समझ ही नहीं है। उनका यह निष्कर्ष था कि भाषा से बैर नहीं किया जाना चाहिए। तीसरा आलेख सुश्री नीलिमा भावे ने 'मराठी साहित्य में अनुवाद संस्कृति' पर प्रस्तुत किया। सुश्री भावे ने मराठी में अनुवाद का एक रचनात्मक लेखन के रूप में वर्णन किया। उन्होंने कहा कि मराठी अनुवाद भी बाङ्ला साहित्य से प्रभावित है। मामा वरेरकर ने कई बाङ्ला कहानियों का मराठी में अनुवाद किया है। दिलीप चित्रे ने पाश्चात्य साहित्य को मराठी में रूपांतरित किया है। सत्र का अंतिम आलेख श्री जेठो लालवाणी ने 'सिंधी में अनुवाद संस्कृति' पर प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि सिंधी साहित्य में पहला अनुवाद 1736 में किया गया था।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री रमण सोनी ने की तथा गुजराती, कोंकणी, मराठी एवं सिंधी में क्रमशः सुश्री पन्ना त्रिवेदी, श्री गोकुल दास प्रभु, श्री बलवंत जेउरकर एवं श्री नामदेव ताराचंदाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री पन्ना त्रिवेदी ने अपने आलेख में प्रसिद्ध अनुवादक श्री उमाशंकर जोशी को याद करते हुए कहा कि वे *संस्कृति* नाम की पत्रिका निकालते थे। श्री गोकुल दास प्रभु का कहना था कि कोंकणी भाषी लोग अलग-अलग राज्यों में चले गए और वहाँ की स्थानीय भाषा को उन्होंने अपना लिया, जो कोंकणी साहित्य के लिए एक बड़ा झटका था।

श्री बलवंत जेउरकर ने 'मराठी साहित्य की अनुवाद संस्कृति' पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि कई ऐसी साहित्यिक पत्रिकाएँ हैं, जो अनुवाद के लिए एक स्वस्थ वातावरण बना रही हैं। श्री नामदेव ताराचंदाणी ने 'सिंधी साहित्य में अनुवाद संस्कृति' पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि अनुवादक को कम से कम दो

संस्कृतियों का ज्ञाता होना चाहिए तथा अनुवाद कार्य करते समय पुरजोश और शांत होना चाहिए।

क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबहुने के धन्यवाद ज्ञापन से परिसंवाद समाप्त हुआ।

सच्चिदानंद राउतराय जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

12-13 जनवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने दिनांक 12-13 जनवरी 2016 को, प्रख्यात ओड़िया लेखक सच्चिदानंद राउतराय की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया तथा देश भर में साहित्य को प्रोत्साहित करने हेतु अकादेमी द्वारा की गई विभिन्न पहलक़दमियों पर संक्षेप में बात की और बताया कि आधुनिक भारतीय साहित्य के अग्रणी एवं अमर व्यक्तियों को उनकी जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर स्मरण किया जाता है। अपने आरंभिक वक्तव्य में अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने सच्चिदानंद राउतराय के जीवन एवं कृतित्व पर बात की। अपने बीज भाषण में प्रख्यात ओड़िया लेखक डॉ. हरप्रसाद दास ने सच्चिदानंद राउतराय की रचनाओं की विशिष्ट एवं प्रमुख विशेषताओं के बारे में बात की। अपने उद्घाटन वक्तव्य में विशिष्ट ओड़िया लेखक एवं साहित्य अकादेमी के मानद सदस्य डॉ. रमाकांत रथ ने ओड़िया साहित्य में सच्चिदानंद रातउराय के मौलिक योगदान के बारे में बात की। अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने सच्चिदानंद राउतराय की विशिष्टता, अनुभूतियों की मौलिकता तथा उनकी कालातीत कविता के बारे में बात की एवं कहा कि सच्चिदानंद रातउराय का संबंध केवल ओड़िया साहित्य से नहीं, बल्कि भारतीय साहित्य से भी है। उद्घाटन सत्र के प्रारंभ से पूर्व सच्चिदानंद राउतराय पर आधारित वृत्तचित्र का भी प्रदर्शन किया गया। प्रथम सत्र 'सच्चिदानंद राउतराय का काव्य' को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. सुमन्यु सत्पथी ने की तथा तीन विद्वानों सर्वश्री रोहिणीकांति मुखर्जी, हरप्रसाद परिचा पटनायक तथा जतिन नायक ने क्रमशः 'स्वागत' में युग्म की उपस्थिति : खंडित मानस की द्विविधता, 'पल्लीश्री' में ग्रामीण रूपक : लुप्त गाँव का विलाप, 'बाजी राउत में क्रांति का रोमांस : मृत्यु का गर्व नहीं' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र 'सच्चिदानंद राउतराय का काव्य' को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. जे. पी. दास ने की तथा चार विद्वानों सर्वश्री सौभाग्य कुमार मिश्रा, भगवान जयसिंह, संग्राम जेना तथा वसंत कुमार पंडा ने क्रमशः 'सचि राउतराय एवं समकालीन ओड़िया काव्य', 'सचि राउतराय : दिगंत के संपादक', 'कविता 1962 को परिभाषित करते हुए' तथा 'जीवनानंद दास के साथ सचि राउतराय का तुलनात्मक अध्ययन' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र 'कथाकार सच्चिदानंद राउतराय' को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता श्रीमती प्रतिभा राय ने की तथा तीन विद्वानों सर्वश्री जे.एन. पटनायक, अध्यापक विश्वरंजन तथा दाश बेनहुर ने क्रमशः 'चित्रग्रीवा का पुनर्पाठ : 'मशानीर फूल एंड अंडर स्टोरीज़' : सामाजिक सरोकार का विलंबित रूपक' तथा 'कहानीकार सचि राउतराय' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. प्रफुल्ल के. महांति ने की तथा दो विद्वानों सर्वश्री अशोक महापात्र एवं देवदास छोटराय ने क्रमशः 'उत्तरकक्ष में तत्कालीन ओड़िशा', 'सचि राउतराय की आत्मकथा' तथा 'सचि राउतराय का रूमानी पक्ष' पर आलेख प्रस्तुत किए।

'साहित्य एवं स्वतंत्रता संग्राम' पर संगोष्ठी

16 जनवरी 2016, भुवनेश्वर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा 'साहित्य एवं स्वतंत्रता संग्राम' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन

16 जनवरी 2016 को भुवनेश्वर में किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी की रूपरेखा के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि हम मूलरूप से इस प्रकार की संगोष्ठी का आयोजन देश के अन्य भागों में लेखकों को क़रीब लाने के लिए करते हैं। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक एवं प्रसिद्ध ओड़िया कथाकार गौरहरि दास ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि साहित्य एक अति सूक्ष्मग्राही सोने की पत्ती की तरह है, जो समाज या संस्कृति को बहुत तेज़ी से प्रोत्साहित करती है। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए ओड़िशा के वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं प्रसिद्ध गाँधीवादी श्री भवानी पटनायक ने कहा कि हम सभी गाँधी जी से प्रेरित होकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े थे, परंतु उस समय बहुत थोड़े लोग थे, जिन्हें गांधी जी के सिद्धांतों पर विश्वास था। गाँधी जी के महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक गाँवों का विकास तथा खादी एवं हस्त-शिल्प को बढ़ावा देना था। सफल होने के लिए हमारे अंदर समर्पण एवं त्याग की भावना होनी चाहिए। अपने बीज वक्तव्य में प्रसिद्ध विद्वान श्री रवींद्रनाथ साहू ने कहा कि स्वतंत्रता की खोज भी एक अंतहीन खोज है। इसलिए स्वराज की हमारी कल्पना, जैसा कि गाँधी जी ने विस्तार से बताया था। अकादेमी के पूर्वी क्षेत्रीय मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने सत्र की अध्यक्षता की तथा क्षेत्रीय सचिव श्री गोपाल चंद्रबर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में असमिया के श्री दिलीप बोरा ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष केवल ब्रिटिश राज के विरुद्ध संघर्ष नहीं था, बल्कि राजनीति में पहचान और आत्मप्रतिनिधित्व के भीतर का भी संघर्ष था। बाङ्ला के श्री सुशांत दास ने 'स्वतंत्रता संघर्ष एवं बाङ्ला साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि साहित्यिक इतिहास में 'स्वतंत्रता संघर्ष' राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए संघर्ष का पर्याय है। बोडो के लोक साहित्यकार श्री अनिल कुमार बोरो ने 'साहित्य एवं स्वतंत्रता संघर्ष : बोडो साहित्य के संदर्भ में' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि साहित्य मनुष्य और उनके जीवन की सामाजिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक समूह की वास्तविकताओं से जीविका लेता है। प्रथम सत्र की अध्यक्षता सेंट्रल यूनिवर्सिटी, कोरापुट के कुलपति श्री सच्चिदानंद महांति ने की।

दूसरे सत्र में 'ओड़िया साहित्य एवं स्वतंत्रता संघर्ष' (उपन्यास एवं कहानियाँ) विषय पर आलेख प्रस्तुत करते हुए सुश्री जयंती रथ ने कहा कि स्वतंत्रता हर व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। ओड़िया साहित्य निश्चित ही महान भारतीय साहित्यिक परंपरा का अभिन्न अंग रहा है। मणिपुरी लेखक डॉ. रतन कुमार सिंह, नेपाली के श्री जीवन नामदुंग एवं मैथिली के श्री भैरव लाल दास ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री पवन कानूनगो ने की।

'कन्नड साहित्य एवं संस्कृति में महिला अभिव्यक्ति' विषयक परिसंवाद

19 जनवरी 2016, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने कर्नाटक महिला लेखिका संघ के सहयोग से 19 जनवरी 2016 को भारतीय विद्या भवन, बेंगळूरु में 'कन्नड साहित्य एवं संस्कृति में महिला अभिव्यक्ति' विषयक एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया तथा देश भर में एवं अपने द्वारा मान्यता प्रदत्त सभी 24 भारतीय भाषाओं में नारीवादी लेखन को बढ़ावा देने हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों की संक्षेप में चर्चा की। अपने आंरभिक व्याख्यान में कर्नाटक लेखिका संघ की अध्यक्षा डॉ. वसुंधरा भूपति ने नारी संबंधी मुद्दों को प्रतिबिंबित करने के लिए महिलाओं के लिए और अधिक

अनुकूल नियमों, क़ानूनों एवं साहित्य की आवश्यकता के बारे में बात की।

अपने उद्घाटन व्याख्यान में प्रख्यात द्विभाषी लेखिका डॉ. मालती पट्टनशेट्टी ने कहा कि पुरुष प्रधान समाज होने के बावजूद कन्नड लेखिकाओं ने पारंपरिक रूप से महिलाओं को संस्कृति में जकड़ने वाली बाधाओं एवं बेड़ियों को तोड़कर उन्हें नया मार्ग दिखाया है तथा अपने तर्कों के समर्थन में उन्होंने 12वीं सदी की अक्क महादेवी एवं साँची होनम्मा तथा अन्य आधुनिक लेखिकाओं की रचनाओं की ओर संकेत किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने कहा कि प्रत्येक महिला का जीवन बहुमुखी है, अतः यह आवश्यक है कि उसकी आवाज़ एवं नारीवादी अभिव्यक्ति को सुना जाए तथा साहित्य में भी दर्ज किया जाए।

प्रथम सत्र का केंद्रीय भाव 'संघर्ष की राह पर' था। इस सत्र में डॉ. ई. रति. राव ने महिलाओं के संघर्ष पर बात की तथा श्रीमती रूपा हसन ने बाल अधिकारों पर आलेख प्रस्तुत किया। 'मीडिया एवं अभिव्यक्ति' पर आधारित द्वितीय सत्र के अंतर्गत डॉ. एल.जी. मीरा ने कला पर आलेख पाठ प्रस्तुत किया तथा श्रीमती सुधा शर्मा चावथी ने मीडिया पर बात की। श्रीमती गीता कृष्णमूर्ति ने कानून तथा श्रीमती बी.एस. शैलजा ने विज्ञान साहित्य पर बात की। 'लोकप्रिय साहित्य' पर आधारित तृतीय सत्र के अंतर्गत श्रीमती आशा बेनकप्पा ने चिकित्सा पर आलेख पाठ किया। प्रतिष्ठित कन्नड लेखिका डॉ. धरणीदेवी मालागट्टी ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया, जिसके अंतर्गत उन्होंने इतिहास के माध्यम से प्रमुख साहित्यिक रचनाओं में प्रबल महिला पात्रों पर बात की तथा सभी आधुनिक महिलाओं से साहित्य के इतिहास के क्रमिक वृत्तांत में वर्णित इन महिलाओं का अनुकरण करने का आग्रह किया। कर्नाटक लेखिका संघ के कार्यकारी मंडल की सदस्या श्रीमती सर्वमंगला ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

एन. वी. कृष्णवारियर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

22 जनवरी 2016, कालिकट

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा केरल साहित्य समिति, कालिकट के सहयोग से एन. वी. कृष्णवारियर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 22 जनवरी 2016 को होटल अलकापुरी, कालिकट के कॉन्फ्रेंस हॉल में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा भारतीय भाषाओं के साहित्य के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रसिद्ध इतिहासकार श्री एम. जी. एस. नारायणन ने किया। उन्होंने मलयाळम् साहित्य में एन. वी.वारियार के योगदान की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इस बात पर दुख व्यक्त किया कि जो सम्मान केरल में वारियार को मिलना चाहिए था वह उन्हें नहीं मिला। वारियार 18 भाषाओं के जानकार थे।

केरल साहित्य समिति की अध्यक्ष श्रीमती पी. वत्सला ने कहा कि कृष्णवारियर सदैव संसार में साहित्य विज्ञान या राजनीति या पर्यावरण समस्याओं के प्रति हो रहे परिवर्तनों या घटनाओं के प्रति सजग एवं भिज्ञ रहते थे। सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि कृष्णवारियर अपने लेखन कैरियर के शुरुआत के चरण में किस प्रकार स्नेही एवं सहायक रहे थे। केरल साहित्य समिति के जनरल सेक्रेटरी श्री पी. पी. श्रीधर नुन्नी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में श्री एम. आर. राघव वारियर ने एन. वी. एवं मलयाळम् कविता में आधुनिकतावाद आंदोलन पर अपने विचार प्रस्तुत किए। श्री आत्म रमन ने 'एन. वी. : साहित्यिक आलोचक के रूप' में विषय पर अपने

विचार रखे। तीसरे सत्र में डॉ. अनिल के. एम. ने 'एन. वी. के राजनैतिक विचार'; तथा श्री साइलक उन्नीकृष्णन ने 'एन. वी. का संपादकीय योगदान' पर तथा प्रो. के. पी. कुन्नी कन्न ने 'एन. वी. कृष्णवारियर का पर्यावरणविद् तथा शिक्षाशास्त्री के रूप में योगदान' पर अपने विचार व्यक्त किए।

केरल साहित्य समिति के उपाध्यक्ष डॉ. सी. राजेंद्रन ने समापन वक्तव्य दिया। केरल साहित्य समिति के कोषाध्यक्ष श्री पी. एम. नारायणन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'वाग्मी विश्वनाथ कर की 150वीं जयंती' पर संगोष्ठी

23 जनवरी 2016, कटक

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा उत्कल साहित्य समाज के सहयोग से वाग्मी विश्वनाथ कर की 150वीं जयंती पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री मिहिर कुमार साहू ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। उत्कल साहित्य समाज के अध्यक्ष श्री विजयानंद सिंह ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। मुख्य वक्ता श्री देवेंद्र कुमार ने कहा कि वाग्मी विश्वनाथ कर उत्कल साहित्य समाज के संस्थापक अध्यक्ष थे। उत्कल गौरव मधुसूदन दास की भाँति विश्वनाथ जी ओड़िशा एवं ओड़िया भाषा के अध्यक्ष थे। वे पहले ओड़िया लेखक थे, जिन्होंने 1921 में बिहार-ओड़िशा विधान परिषद में ओड़िया भाषा में भाषण दिया था। उनकी बहुत-सी रचनाएँ ओड़िया की प्राचीन साहित्यिक पत्रिकाओं जैसे *आशा, सेवक* आदि में प्रकाशित हो चुकी हैं।

अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने राज्य के हर व्यक्ति और कोने तक पहुँचने के लिए इस प्रकार के आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने वाग्मी विश्वनाथ कर द्वारा गोपाल च. बहराज को सही और दुरुस्त किए जाने का उदाहरण दिया। सत्र के मुख्य अतिथि श्री दाशरथि प्रसाद दास ने विश्वनाथ कर पर 1960 में लिखे अपने आलेख का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि उनकी ब्रह्मधर्म पर लिखने की प्रकट इच्छा है। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य श्री विजयानंद सिंह ने कहा कि उनके सारे निबंध सामयिक और अद्वितीय हैं।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुश्री अर्चना नायक ने की एवं विजय कुमार नंद, प्रदीप्त कुमार पंडा एवं अर्चना नाथ द्वारा क्रमशः आलेख प्रस्तुत किए गए। श्री विजय कुमार नंद ने ओड़िया निबंध के विकास में सामान्यतः तथा विशेषतः ओड़िया निबंध के विकास पर ज़ोर दिया। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री दाशरथि प्रसाद दास ने की जबकि श्री कृष्ण चंद्र प्रधान एवं श्री गोविंद चंद्र चांद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र की अध्यक्षता शरतचंद्र प्रधान ने की। श्री डी. पी. पटनायक एवं श्री जीवानंद ने भी अपने आलेख प्रस्तुत किए।

वाग्मी विश्वनाथ कर संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

भीष्म साहनी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

28-29 जनवरी 2015, अमृतसर, पंजाब

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार तथा साहित्य अकादेमी के संयुक्त तत्त्वावधान में भीष्म साहनी जन्म शतवार्षिकी के अवसर पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 28-29 जनवरी 2015 को खालसा कॉलेज, अमृतसर, पंजाब में किया गया। समारोह की शुरुआत 28 जनवरी 2016 को भीष्म साहनी के जीवन पर आधारित चित्र प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुई। प्रो. सत्येंद्र सिंह, पूर्व समकुलपति, गुरुनानक देव विश्वविद्यालय ने इसका उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में भीष्म साहनी के संपूर्ण जीवन क्रम को विभिन्न चित्रों द्वारा सँजोया गया था। इसमें उनके जीवन की मुख्य घटनाएँ, उनके जीवन पर विभिन्न लेखकों के प्रभाव, *तमस* की निर्माण प्रक्रिया पर विभिन्न फ़ोटो पैनल लगाए गए थे। इसमें उनके रावलपिंडी के पुश्तैनी घर से लेकर दिल्ली तक की जीवन-यात्रा को चित्रों द्वारा वर्णित किया गया था। इस चित्र प्रदर्शनी के साथ-साथ साहित्य अकादेमी द्वारा एक पुस्तक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था, जिसमें साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत उनके उपन्यास *तमस* के अकादेमी द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं में किए गए अनुवाद की पुस्तकें शामिल थीं।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि भीष्म साहनी जन्मशतवार्षिकी पर 8-10 अगस्त को दिल्ली में किए गए कार्यक्रम के बाद यह दूसरा आयोजन है। उन्होंने भीष्म साहनी जी के साहित्यिक अवदान को याद करते हुए कहा कि उनका लेखन हिंदी कथा साहित्य की प्रगतिपील परंपरा का शक्तिशाली दस्तावेज़ है। उनके कथा संसार में भारतीय मध्यम वर्ग का यथार्थवादी चित्रण हुआ है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने की। उन्होंने भीष्म साहनी को भविष्यदृष्टा लेखक बताते हुए कहा कि वे सच्चे अर्थों में विशिष्ट लेखक थे, जिसने भारत के आम लोगों की इच्छाओं और कामनाओं को समझा और अपने लेखन में उसको प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि प्रो.

बाएँ से दाएँ : डॉ. ए. अरविंदाक्षन, प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, प्रो. सत्येंद्र सिंह एवं डॉ. के. श्रीनिवासराव

सत्येंद्र सिंह ने अपने व्याख्यान में कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि हम आज उसी खालसा कॉलेज में भीष्म जी को याद कर रहे हैं, जिसमें उन्होंने कुछ दिन पढ़ाया था। प्रख्यात साहित्यकार डॉ. ए. अरविंदाक्षन ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि भीष्म साहनी जी का रचना संसार वैविध्यपूर्ण है और उसमें मानव जीवन के सुख-दुख, उसमें आए उतार-चढ़ाव को बड़ी जीवंतता से चित्रित किया गया है। उनकी हर रचना लोक-जीवन से उनके गहरे जुड़ाव को प्रदर्शित करती है। उनका लेखन आज के लेखकों के लिए एक मशाल की तरह है, जो लेखन के अँधेरे को दूर कर सच्ची राह दिखाता है। सत्रांत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन खालसा कॉलेज के प्राचार्य श्री महेल सिंह ने किया।

'भीष्म साहनी : रचना का आलोक और साहित्यिक सरोकार' विषय पर केंद्रित संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री रवेल सिंह ने की, जिसमें श्री सतीश वर्मा, श्री आरसु तथा श्री वेन्ना वल्लभराव ने अपने आलेखों का पाठ किया। सभी वक्ताओं ने उनके विभिन्न विधाओं में लिखे गए कार्य को रेखांकित करते हुए कहा कि यह उनके लेखन का ही प्रकाश है कि आज भी चाहे *तमस* हो या उनके नाटक, पाठकों को इनको पढ़ने और देखने की ललक अभी भी बनी हुई है। सभी वक्ताओं ने यह स्वीकार किया कि भीष्म साहनी का विपुल लेखन आज भी समसामयिक है।

इसी दिन सायं 6 बजे विरसा विहार सभागार में रामजी बाली के निर्देशन में भीष्म साहनी की कहानी 'लीला नंदलाल की' का नाट्य मंचन हुआ। यह कहानी आज के परिवेश पर एक ज़बर्दस्त व्यंग्य है। कहानी का नायक मध्यमवर्गीय युवा है जिसके ख़ून-पसीने की कमाई से लिया गया एक स्कूटर नाटक देखने जाने के दौरान चोरी हो जाता है। आगे पूरे नाटक में स्कूटर प्राप्ति के लिए नायक की मार्मिक दौड़-भाग सामने आती है।

दूसरे दिन 29 जनवरी 2016 को सुबह 'भीष्म साहनी : साहित्यिक अवदान' विषयक सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात विद्वान श्री रमेश कुंतल मेघ ने की। सत्र में श्री तरसेम गुजराल तथा माधव कौशिक ने अपने आलेखों का पाठ किया। श्री रमेश कुंतल मेघ ने भीष्म साहनी के साहित्यिक अवदान की चर्चा करते हुए कहा कि उनका लेखन ही नहीं, बल्कि प्रगतिषील लेखक संघ के महासचिव (1972-1986) रहने के दौरान उनके द्वारा संगठन के लिए किए गए कई महत्त्वपूर्ण कार्य भी उल्लेखनीय हैं। वे अफ्रो-एषियाई लेखक संघ से भी जुड़े रहे थे।

तृतीय सत्र का विषय 'भीष्म साहनी और उनके नाटक' था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात नाट्यकार श्री भानु भारती ने की तथा श्री रवेल सिंह, श्री सुरेश सेठ और श्री फूलचंद मानव ने अपने आलेखों का पाठ किया। इस सत्र में भीष्म जी के नाटक *हानुश, कबिरा खड़ा बजार में, माधवी, मुआवजे, रंग दे बसंती चोला, आलमगीर* की विस्तार से चर्चा हुई। ये सभी नाटक अलग-अलग विषयों और समस्याओं पर केंद्रित थे और भीष्म जी की लेखन प्रतिबद्धता के उत्कृट उदाहरण के रूप में हमेशा दर्शकों के मन में बैठे रहेंगे।

'भीष्म साहनी : समकालीन प्रासंगिकता' विषयक चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री चंद्र त्रिखा ने की और श्री सुदर्शन वशिष्ठ और श्री अरुण होता ने आलेख पाठ किया। श्री चंद्र त्रिखा ने भीष्म जी के अलग-अलग विधाओं में लिखी गई रचनओं के आधार पर कहा कि चाहे उनकी कहानी हों या उनके नाटक वे आज भी सामान्य जनों की उन मुश्किलों और उन सपनों को प्रस्तुत करते हैं, और आज भी उतने ही प्रासांगिक हैं, जितने उनके लेखन के समय थे। उन्होंने भीष्म जी की उस अंतरदृष्टि का ज़िक्र किया, जिसके सहारे वे बिना आक्रामक हुए भी धर्मनिरपेक्षता के प्रति प्रतिबद्ध रहे।

संगोष्ठी के अंत में सायं 6 बजे श्री केवल धालीवाल के निर्देशन में भीष्म साहनी द्वारा लिखित नाटक 'कबिरा खड़ा बजार में' का मंचन विरसा विहार सभागार में किया गया। यह नाटक मध्यकालीन भारतीय संतों के उस तर्कसंगत दर्शन को उजागर करता है जो अंधविश्वास,

जाति-पूर्वाग्रहों, झूठे अहंकार, अंधविश्वास और अतार्किक व्यवहार से समाज को छुटकारा दिलाने की माँग करता है।

शंभू मित्र जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

5-6 फ़रवरी 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा शंभू मित्र जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 5-6 फ़रवरी 2016 को अकादेमी के सभागार में किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए शंभू मित्र का संक्षिप्त जीवन परिचय दिया। अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने अपने आरंभिक वक्तव्य में शंभू मित्र के आगमन के महत्त्व को संदर्भित किया। प्रसिद्ध नाटककार श्री रुद्रप्रसाद सेनगुप्त ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने हर व्यक्ति के जीवन के नाटकीय पहलुओं को सहन करने पर बल दिया। प्रसिद्ध आलोचक एवं विद्वान श्री शमीक बंद्योपाध्याय ने बीज वक्तव्य दिया। अपने बीज वक्तव्य में उन्होंने शंभू मित्र और विजन भट्टाचार्य के साथ ही अन्य प्रमुख नाटककारों की नाट्य अवधारणाओं के मतभेद पर बल दिया। अकादेमी के उपाध्यक्ष एवं कन्नड लेखक श्री चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में शंभू मित्र के नाटक के विशिष्ट अवयवों पर चर्चा की। उन्होंने भारत के अन्य महान नाटककारों के साथ उनकी तुलना की। सत्रांत में क्षेत्रीय सचिव गोपाल च. बर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में 'महर्षि एवं शंभू मित्र' तथा 'शिशिर कुमार एवं शंभू मित्र' विषय पर क्रमशः सर्वश्री प्रभात कुमार दास तथा मलय रक्षित ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र के अध्यक्ष श्री पवित्र सरकार ने 'गपनाट्य एवं शंभू मित्र' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

प्रथम दिन के दोनों सत्र तथा दूसरे दिन का पहला सत्र शंभू मित्र के मंच शिल्प, मंच उत्पादन, अभिनय और मंच निर्देशन पर आधारित थे। उन दो सत्रों में छह प्रसिद्ध विद्वानों ने शंभू मित्र के विभिन्न नाटकों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन सत्रों के वक्तव्य सर्वश्री अरुण मुखोपाध्याय, सौमित्र बसु, देवतोष घोष, रुस्ती सेन, सुप्रीती मुखोपाध्याय एवं अभीक मजुमदार थे। *गैलिलियो एर-जीबन, चार अध्याय, विसर्जन, राजा, मुद्राराक्षस, राजा ओडिपस, चांद बिकानेर पाला, दाश चक्र* एवं *पुतुल खेला* नाटकों का प्रदर्शन किया गया। सर्वश्री देवतोश घोष एवं अभीक मजुमदार ने क्रमशः दो सत्रों की अध्यक्षता की। संगोष्ठी के पहले दिन शाम को सुश्री लाडली मुखोपाध्याय द्वारा शंभू मित्र पर निर्मित वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया।

दूसरे दिन के दूसरे सत्र में श्री प्रदीप घोष ने शंभू मित्र के सस्वर पाठ के बारे में बात की, जबकि श्री देवाशीष मजुमदार ने शंभू मित्र के नाटकों के वैकल्पिक विचार पर प्रकाश डाला। श्री मजुमदार ने सत्र की अध्यक्षता की। अंतिम सत्र में सर्वश्री अमित कुमार राय, अशोक मुखोपाध्याय एवं अमिताभ राय ने क्रमशः शंभू मित्र द्वारा लिखित निबंधों, नाटकीय तकनीक के

डॉ. चंद्रशेखर कंबार

क्रियान्वयन तथा शंभू मित्र द्वारा अनूदित नाटकों के बारे में बात की। सुश्री प्रतिभा अग्रवाल ने सत्र की अध्यक्षता की तथा 'नाटक की भारतीय अवधारणा एवं शंभू मित्र' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के अंत में अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पॉल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'उत्तर--पूर्वी भारतीय साहित्य : परंपरा एवं नवोन्मेष' विषयक परिसंवाद

12 फ़रवरी 2016, वडोदरा, गुजरात

साहित्य अकादेमी तथा पश्चिमी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में ऑक्टेव 2016 के अंतर्गत 12 फ़रवरी 2016 को वडोदरा, गुजरात में 'उत्तर-पूर्वी भारतीय साहित्य : परंपरा एवं नवोन्मेष' तथा 'कवि सम्मिलन' का आयोजन किया गया। प्रतिष्ठित कवि एवं आलोचक डॉ. डेज़्मॉन्ड खरमॉवफ्लाङ ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। मुंबई कार्यालय के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने दर्शकों का स्वागत किया तथा प्रतिभागी कवियों एवं आलोचकों—बोडो के श्री स्वमडवन ब्रह्म, असमिया के श्री प्रणवज्योति नार्ज़ारी, मणिपुरी के श्री नाओरेम विद्यासागर सिंह तथा श्री एच. ननीकुमार सिंह एवं नेपाली के श्री जीवन नामदुंग तथा श्री भक्त सवर से सभी का परिचय कराया। डॉ. खरमॉवफ्लाङ ने बीज भाषण देते हुए कहा—"उत्तर-पूर्वी भारत की गतिशील नाटकीय भौतिक विशेषताएँ उन विचलित लोगों एवं समुदायों के लिए एक घर की भाँति है, जो काफ़ी लंबे समय से अपनी जैविक विविधताओं के साथ संपूर्ण विश्व में बेजोड़ माने जानेवाले सामंजस्य में नहीं रह पा रहे हैं। गीत एवं महाकाव्य, लोकसाहित्य एवं साहित्य, प्रकृति तथा संस्कृति अंतराफ़लक के प्रत्यक्ष उत्पाद हैं—मानव संस्था अपनी काव्य-प्रतिभा इसी सम्मिश्रण से प्राप्त करती है तथा इसी सम्मिश्रण से भाषाओं तथा स्वरों का सृजन होता है। कवि परिस्थितिकी, मिथकों, रीति-रिवाज़ों, रहस्यों, रहस्यपूर्ण आस्थाओं तथा जनसंख्या संबंधी लक्षणों को विस्फारित करने में मुखर तथा आनंदित होता है। कवियों की कविताएँ उनके जन्म स्थान के ग्रामीण आस्वाद का उत्सव होती हैं, जो विषाद एवं अपनी भूमि से संबद्धता के तर्कहीन बोध को निर्मित करती हैं, समसामयिक साहित्य में ऐसा कम ही देखने को मिलता है।" बीज भाषण के पश्चात् श्री स्वमडवन ब्रह्म ने अपनी "मोनथाइनी सरदु", "द फयूनाइल ऑफ राइट्स", "इकहम्बा इकहम्बा", "समटाइम्स", "ऑन द फ़ील्ड", "ड्रीम्स", "लामा" आदि कविताओं का पाठ किया। श्री नाओरेम विद्यासागर सिंह ने "रिफ़्यूज़ी गीता", "रीवर्स, आई लव यू" कविताओं का पाठ किया। श्री भक्त सवर ने "पिक्चर मेमोरीज़", "डिवाइन लव", "अ मैप ऑफ़ अफ्रीका" कविताओं का पाठ किया।

परिसंवाद का एक सत्र

विख्यात नेपाली लेखक श्री जीवन नामदुंग ने परिसंवाद का संचालन किया तथा असमिया में श्री दिलीप बोरा ने, बोडो में श्री प्रणव ज्योति नार्ज़री एवं मणिपुरी में श्री एच. ननीकुमार सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

श्री दिलीप बोरा ने कहा कि "असमिया समुदाय, लोक त्योहारों, उत्सवों, कला एवं संस्कृति से समृद्ध है, उसके पास लोककथाओं का विशाल ख़ज़ाना है, जो हमेशा से सबके लिए आश्चर्य का विषय रहा है। यह लोक साहित्य जिस प्रकार असमिया समुदाय के पारंपरिक

परिदृश्य को प्रतिबिंबित करता है, उसी प्रकार से असम तथा उसके लोगों के प्रवर्तित गुणों को भी प्रमाणित करता है। असमिया साहित्य ने काफ़ी लंबी यात्रा तय की है। यह समझना आवश्यक है कि साहित्य परंपराओं में सीमित होकर जीवित नहीं रह सकता, परंपराओं को केवल साहित्य के आधार अथवा नींव के रूप में ही देखा जाना चाहिए, साहित्य परंपराओं तथा नवपरिवर्तन के माध्यम से अनदेखे भविष्य की ओर बढ़ता रहता है तथा यही संवेग असमिया साहित्य में देखा जा सकता है।'' श्री प्रणवज्योति नाज़ारी ने महसूस करते हुए कहा कि बोडो भाषा नई, उभरती हुई भाषा है। बोडो भाषा की साहित्यिक उन्नति भारत की अन्य बड़ी भाषाओं के मुकाबले काफ़ी समय बाद हुई है। बोडो भाषा में कहानी, उपन्यास तथा कविता जैसी विधाएँ अभी किशोरावस्था में हैं। तथापि, परंपरा एवं आधुनिकता संबंधी तत्त्वों को प्रमुखता से बोडो साहित्य में चित्रित किया जाता है। यात्रा वृत्तांत, जीवनी एवं बाल साहित्य जैसी विधाएँ नए उत्साह एवं यथार्थ के साथ उभरकर आ रही हैं। सामाजिक अशांति, जातीय आंदोलन तथा स्थायी शांति का अभाव, ये कुछ ऐसे कारक हैं, जो बोडो साहित्य की नियमित प्रगति में बाधा बनकर खड़े हैं। श्री एच. ननीकुमार सिंह ने अपने आलेख के अंतर्गत इस बात पर चर्चा की ''किस प्रकार परंपराओं ने मणिपुरी साहित्य को अभिनव बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है?''

अंत में उदयपुर के पश्चिमी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक श्री सुधांशु सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'रचनात्मकता एवं स्वतंत्रता' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

14-15 फ़रवरी 2016, तिरूर, केरल

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु तथा थुनचन मेमोरियल ट्रस्ट, तिरूर के संयुक्त तत्त्वावधान में 14-15 फ़रवरी 2016 को थुनचन परंभु, तिरूर में 'रचनात्मकता एवं स्वतंत्रता' विषयक द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

14 फ़रवरी 2016, प्रातः 10:00 बजे संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र प्रारंभ हुआ। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य श्री के.पी. रामनुन्नी ने अतिथियों का स्वागत किया। ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता तथा अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. भालचंद्र नेमाड़े ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। प्रख्यात तेलुगु कवि श्री के. शिव रेड्डी ने बीज भाषण दिया।

डॉ. भालचंद्र नेमाड़े ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि असहिष्णुता कोई शब्द नहीं है तथा हाल ही में इस शब्द का प्रयोग काफ़ी बढ़ गया है। स्वयं को निरंतर रचनात्मक प्रयास अथवा लेखन में संलग्न रखकर ही हम आज़ादी अथवा स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। हमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का फ़ायदा नहीं उठाना चाहिए, यदि कोई ऐसा करता है, तो उसे जेल भेजना चाहिए। महात्मा गाँधीजी, जिन्होंने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की वकालत की, उन्होंने सावधानीपूर्वक इस स्वतंत्रता का उपयोग करने के नियम भी लिखे थे। जो लोग जनता के विरुद्ध लेखन करेंगे, उन्हें धमकियाँ दी जाएँगी। यदि हम इतिहास को टटोलें तो पता चलेगा कि विकसित देशों में भी ऐसा ही होता आ रहा है। भारत में ब्रिटिश आक्रमण के पश्चात्, कई स्वदेशी लेखकों ने अंग्रेज़ी भाषा में लिखना प्रारंभ कर दिया और अपनी मातृभाषा की अनदेखी की। संप्रेषण के लिए अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग किया जा सकता है, परंतु हमें अपनी मातृभाषा को कभी नहीं भूलना चाहिए।

श्री के. शिव रेड्डी ने बीज भाषण दिया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि वास्तविक स्वतंत्रता के साथ ही कोई व्यक्ति बेहतर तथा हिम्मत के साथ लेखन कर सकता है। लेखन का अर्थ स्वतंत्रता के लिए लड़ना नहीं है, बल्कि यह एक आग्रह है, स्वयं को सार्थक शैली में अभिव्यक्त करके अखंडता एवं वैयक्तिता को बनाए रखने का। प्रख्यात मलयाळम् लेखक एवं अकादेमी के

मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। थुनचन ने पूरे साहस के साथ अपनी बात कही, अपने शब्दों तथा लेखन के प्रति वे एकदम सच्चे थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री सी. राधाकृष्णन ने यह बात कही। थुनचन आजीवन बुरे कृत्यों के विरुद्ध लड़ते रहे हैं तथा अपने जीवन में उन्होंने काफ़ी परेशानियों को भोगा है। उन्होंने कहा कि लेखन आदर्शपूर्ण तथा धर्मनिरपेक्ष होना चाहिए।

'रचनात्मकता एवं स्वतंत्रता–भारतीय सदंर्भ' पर आधारित द्वितीय सत्र मध्याह्न 2:30 पर प्रारंभ हुआ। प्रख्यात मलयाळम् तथा अंग्रेज़ी लेखक प्रो. के. सच्चिदानंदन ने सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. रुक्मिणी भाया नायर एवं श्री सी.वी. सुब्रह्मणियन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र 15 फ़रवरी 2016 को प्रातः 10:00 बजे प्रारंभ किया गया। प्रख्यात मलयाळम् लेखक तथा पत्रकार श्री शशिकुमार ने सत्र की अध्यक्षता की। दिग्गज मलयाळम् लेखकों श्रीमती सारा जोसेफ़ तथा श्री के.सी. नारायणन ने अपने आलेख पढ़े।

'असमिया कहानी' विषयक परिसंवाद

29 फ़रवरी 2016, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा गुवाहाटी विश्वविद्यालय के आधुनिक भारतीय भाषाएँ एवं साहित्य अध्ययन विभाग के सहयोग से 29 फ़रवरी 2016 को 'असमिया कहानी' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध लेखक श्री गोविंद प्रसाद शर्मा ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने अकादेमी एवं विश्वविद्यालय को इस परिसंवाद के आयोजन पर बधाई दी।

अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. करबी डेका हज़ारिका ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में असमिया कहानियों पर विमर्श करते हुए आग्रह किया कि कहानी असमिया साहित्य का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने आगे कहा कि असमिया साहित्य अन्य भारतीय साहित्य से पीछे नहीं है। आज असमिया साहित्य भारतीय साहित्य की अन्य विधाओं के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री गोविंद प्रसाद शर्मा ने की। सर्वश्री विभास चौधरी, मनोज सैकिया एवं डॉ. तरणी डेका ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री बिभास चौधरी ने 'असमिया कहानी में पश्चिमी दर्शन और आधुनिकता का प्रभाव' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने भवेंद्रनाथ सैकिया के लेखन में फ़ोटोग्राफी यथार्थवाद के बारे में बात की। श्री मनोज सैकिया ने 'असमिया लघुकहानी में महिलाओं के मनोविज्ञान एवं नारीवाद' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. तरणी डेका ने 'कहानी लेखन पैटर्न के परिवर्तन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि नई साहित्यिक अवधारणा रामधेनू के बाद *प्रांतिक, गरियोशी* आदि जैसी पत्रिकाओं द्वारा बनाई गई थी। उन्होंने कहा कि मनोज कुमार गोस्वामी, देवव्रत दास की कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंध, अंतर्विरोध, आतंकवाद, बेरोज़गार आदि विषयों का चित्रण मिलता है।

दूसरे सत्र में सर्वश्री अनिरुद्ध शर्मा, अपूर्व बोरा एवं सिद्धार्थ गोस्वामी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री अपूर्व बोरा ने 'असम आंदोलन और असमिया कहानियों पर उनका प्रभाव' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्जी, कृष्ण भूइयां, अरुण शर्मा की कहानियों में आज़ादी के युग की समस्याएँ परिलक्षित होती हैं। श्री सिद्धार्थ गोस्वामी ने असमिया कहानी पर लोक संस्कृति और मिथक का प्रभाव विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि वैश्वीकरण के युग में स्थानीय लोककथाएँ प्रायः लुप्त हो रही हैं।

श्रीमती अनुराधा शर्मा ने '1950-2010 के दौरान असमिया कहानी में पिछड़े लोगों का जीवन' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री शर्मा ने इस अवधि के दौरान हाशिए पर पड़े लोगों की दुर्दशा के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि सैयद अब्दुल मलिक ने स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक स्थितियों का अपनी कहानियों में चित्रण किया है।

प्रसिद्ध कहानीकार श्री कुल सैकिया ने समापन वक्तव्य दिया। आधुनिक भारतीय भाषा एवं साहित्य अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. दिलीप बोरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'पश्चिम बंगाल के बोडो समाज की भाषायी और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि' पर परिसंवाद

6 मार्च 2016, अलिपुर दुआर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा पश्चिम बंग बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 'पश्चिम बंगाल के बोडो समाज की भाषायी और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि' विषयक परिसंवाद का आयोजन 6 मार्च 2016 को हेमागुरी में किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता पश्चिम बंग बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष ज्ञान सिंह असुमता ने की। पश्चिम बंग बोडो साहित्य सभा के महासचिव श्री सुबिन साइबा ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। परिसंवाद का उद्घाटन श्री रमेश चंद्रसुबा के वक्तव्य से हुआ। श्री बलेंद्र मसाहरी ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि किसी भी समुदाय की पहचान भाषा के बिना संभव नहीं है। वास्तविकता यह है कि आज भाषा लुप्त होती जा रही है। प्रथम और दूसरे सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के सदस्य श्री फुकनचंद्र बसुमतारी ने की। श्री असित बरनार्ज़ारी ने पश्चिम बंगाल के संदर्भ में बोडो लोककथाओं के पुनरुद्धार की चर्चा की। श्री महेशचंद्र नार्ज़ारी ने पश्चिम बंगाल के बोडो त्योहारों के बारे में संक्षेप में चर्चा की। श्री समेंद्र नार्ज़ारी ने पश्चिम बंगाल के बोडो भाषा के ध्वन्यात्मक एवं रूपात्मक चरित्र की चर्चा की। उन्होंने आगे कहा कि पश्चिम बंगाल में अब तक बोडो भाषा को एक बोली के रूप में मान्यता प्राप्त है। पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा इस भाषा को तुरंत स्वीकृति प्रदान की जानी चाहिए। श्री गोविंद ठाकुर ने पश्चिम बंगाल के बोडो लोकगीत और विश्वास पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बोडो समाज की रीतियों एवं परंपराओं की भी चर्चा की। श्री विदेश सुब्बा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बोडो नृत्य प्रस्तुति

'आदिवासी संस्कृति का पतन और उसका भविष्य' पर परिसंवाद

7 मार्च 2016, बिजनी

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा बिजनी कॉलेज के सहयोग से 'आदिवासी संस्कृति का पतन और उसका भविष्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन कॉलेज परिसर में 7 मार्च 2016 को किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बोडो साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री गोविंद बसुमतारी ने की। बिजनी कॉलेज के प्राचार्य श्री बिरहास गिरि बसुमतारी ने अतिथियों का स्वागत किया। गौहाटी विश्वविद्यालय के फोकलोर विभाग

परिसंवाद का एक सत्र

के प्रोफ़ेसर डॉ. अनिल बोरो मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। डॉ. बोरो एवं डॉ. फुकन बसुमतारी ने क्रमशः प्रथम एवं दूसरे सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. जीवेश्वर कोंच ने 'गारो एवं राभा के लोकसंगीत : अस्तित्व एवं पतन' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री कोंच ने असम की गारो एवं राभा समुदायों के संगीत के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा कि अन्य आदिवासी समुदायों की तरह गारो एवं राभा समुदायों की अपनी भाषा, साहित्य, संस्कृति और पहचान है। दो भाषाओं के प्रयोग की आवश्यकता ने धीरे-धीरे आदिवासी भाषा के महत्त्व को कम कर दिया है। उधार के शब्दों का मिश्रण लगभग हर वाक्य में पाया जाता है।

श्री सुरजीत डिकरी ने 'बोडो एवं गारो के पारंपरिक भोजन : पतन एवं भविष्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने इस बात की भी चर्चा की कि किस प्रकार दिन प्रतिदिन इन दो आदिवासी समुदायों के पारंपरिक भोजन प्रणाली में गिरावट आई है। बोडो एवं गारो दोनों समुदाय खेती पर निर्भर करते हैं। दोनों समुदायों का मुख्य भोजन चावल है। दोनों समुदाय अपना भोजन प्रकृति से प्राप्त करते हैं। श्री मोतीसन डिकरी ने 'बोडो समुदाय का पारंपरिक पोशाक़ और उनके पतन के कारण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। बोडो असम में सबसे बड़ी जनजाति है। उनकी अपनी भाषा, पोशाक़, संस्कृति और साहित्य है। बोडो समुदाय का अपना पारंपरिक पोशाक़ डोल्हाना, फ़शारा या शिमा (शॉल), पुरुष तथा नारी दोनों ही धारण करते हैं। विभिन्न अवसरों पर विभिन्न पोशाक़ धारण किए जाते हैं। सुश्री चंबावती खखलरी ने 'असम आदिवासी की बुनाई परंपरा—पतन एवं भविष्य' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने असम में बुनाई की आदिवासी परंपरा, उनके पतन और भविष्य पर बात की। उन्होंने कहा कि असम के आदिवासी समुदाय की अपनी भाषा, साहित्य और संस्कृति है। हम यह भी कह सकते हैं कि आदिवासी संस्कृति का असमिया संस्कृति में बड़ा योगदान है। उन्होंने यह भी कहा कि यद्यपि असम के आदिवासी कम शिक्षित, ग़रीब आर्थिक पृष्ठभूमि के होने के बावजूद अपनी परंपरा और संस्कृति से समृद्ध हैं। हालाँकि, आधुनिकता के प्रभाव में उनकी परंपरा और संस्कृति में दिन-प्रतिदिन गिरावट देखी जा रही है। डॉ. अदाराम बसुमतारी ने 'आदिवासी संस्कृति और वैश्वीकरण की सीमा (बोडो समुदाय के विशेष संदर्भ में)' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संस्कृति क्षणिक होती है और यह बदलती रहती है। उनके अनुसार वैश्वीकरण संस्कृति के क्षणिक प्रकृति के पीछे बड़ा योगदान है। आज विज्ञान और तकनीक की दुनिया है, समस्त संसार का ज्ञान दुनिया के हर कोने और नुक्कड़ तक पहुँच सकता है। श्री रूपनाथ ओवरी के अनुसार बोडो समुदाय के बीच कुटीर उद्योगों में दिन-प्रतिदिन बदलाव तथा उन पर वैश्वीकरण के प्रभाव को देखा जा सकता है। धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

जसवंत शुक्ल एवं जसवंत ठकार जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

13 मार्च 2016, नाडियाड

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा बलवंत पारेख सेंटर वडोदरा एवं सुरजबा आर्ट्स महिला कॉलेज के सहयोग से दो महान निबंधकारों जसवंत शुक्ल एवं नाटककार जसवंत ठकार के जन्मशतवार्षिकी पर 13 मार्च 2016 को नाडियाड में परिसंवाद का आयोजन किया गया।

श्री प्रकाश शाह ने अपनी बीच वक्तव्य में जसवंत भाई के साथ बिताए अंतिम दिनों को याद करते हुए कहा कि वे उमाशंकर जोशी, भोगी लाल गाँधी, जयंती लाल, नागिनदास पारेख, मनुभाई पंचोली एवं जसवंत शुक्ल से परिचित थे। डॉ. रमण सोनी ने अपने वक्तव्य में कहा कि वह एच.के. कालेज में प्रथम वर्ष से एम.ए. तक जसवंत भाई के शिष्य रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि कक्षा में उनके व्याख्यान सुनना एक सुखद अनुभव था। तत्पश्चात् उन्होंने साहित्य में जसवंत भाई के योगदान को अंकित किया।

परिसंवाद का उत्तरार्द्ध जसवंत ठकार एवं उनके परिवार की स्मृतियों को समर्पित था। यशवंत भाई की बेटी सुश्री नीला जयंत जोशी, जो कि दर्शनशास्त्र के प्रोफ़ेसर पद से सेवानिवृत्त हुई हैं, ने जसवंत भाई से जुड़ी बहुत-सी यादों को साझा करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि उस समय कई विकल्प होने के बावजूद उन्होंने साहित्य को अपनाया। उन्होंने कहा कि अपनी पीएच. डी. की थिसिस को मूल्यांकन हेतु देते हुए हमेशा अपने पिता का भय था, अपने श्वसुर से नहीं। साहित्य के बड़े दिग्गजों से वे अपने पिता के द्वारा ही मिल सकीं।

उसके पश्चात् अपने पिता जसवंत भाई को याद करने की बारी आशुतोष की थी। उन्होंने याद करते हुए कहा कि वे चाहते थे कि मैं कला संकाय में जाऊँ, यद्यपि मैं पेशे से इंजीनियर था। उन्होंने जसवंत ठकार के बारे में बताते हुए एक घटना का वर्णन किया जब एक अभिनेता अभिनय के लिए समय पर नहीं पहुँच सका था। अंततः नाटक में अभिनय करने के लिए उन्होंने सख़्त निर्देश दिया कि आपको जैसा सिखाया गया है वैसा ही अभिनय करें। उन्होंने इस बात का आभार व्यक्त किया कि वे केवल अपने पिता की वज़ह से कई साहित्यिक हस्तियों से मिल सके। इस अवसर पर जसवंत पर एक विडियो दिखाया गया। तत्पश्चात्, श्री प्रवीण पंड्या ने जसवंत ठकार के नाटकों के कुछ अंश प्रस्तुत किए और कहा कि वे दोनों विद्वानों के छात्र रहे हैं। यसवंत भाई के पोते कवि एवं नाटककार श्री समय ने 'मोती' का पाठ किया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ परिसंवाद समाप्त हुआ।

हरचरण सिंह जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

14-15 मार्च 2016, भटिंडा

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा बाबा फ़रीद कॉलेज, भटिंडा के सहयोग से वरिष्ठ पंजाबी लेखक हरचरण सिंह जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 14-15 मार्च 2016 को सेमिनार हॉल, बाबा फ़रीद कॉलेज, भटिंडा में किया गया। अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा हरचरण सिंह के पंजाबी भाषा एवं साहित्य में योगदान की विस्तार से चर्चा की। बाबा फ़रीद ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस के अध्यक्ष श्री गुरमीत सिंह धालीवाल ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। संगोष्ठी में भटिंडा के डिप्टी कमिश्नर श्री बसंत गर्ग मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। श्री सतीश कुमार वर्मा ने अपने बीज-वक्तव्य में कहा कि भारतीय साहित्य में हरचरण सिंह के योगदान का पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए। प्रसिद्ध नाटककार अजमेर सिंह औलख विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल थे। कार्यक्रम तीन सत्रों में विभाजित था। सर्वश्री हरभजन सिंह भाटिया, जसविंदर सिंह, सतनाम सिंह जस्सल ने

सत्रों की अध्यक्षता की तथा उमा सेठी, पाली भुपिंदर सिंह, गुरमीत सिंह हुंदाल, अनिता मडिया, रंजू बाला, सतप्रीत सिंह जस्सल, गुरप्रीत कौर, रवींद्र कुमार, प्रदीप कुमार, उषा रानी, मनोरमा समाग एवं तरसपाल कौर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दीनानाथ नादिम जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

15-16 मार्च 2016, श्रीनगर

साहित्य अकादेमी एवं जे. एंड के. एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रसिद्ध कश्मीरी शायर दीनानाथ नादिम जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 15-16 मार्च 2016 को जे. एंड के. एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के सेमिनार हॉल में किया गया।

साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी एवं जे. एंड के. एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ द्वारा कश्मीरी भाषा एवं साहित्य के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया। प्रो. रहमान राही ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में दीनानाथ नादिम की विभिन्न साहित्यिक उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। डॉ. गुलज़ार अहमद ने श्री मुहम्मद यूसुफ़ टेंग की तरफ़ से बीज-वक्तव्य दिया। प्रो. मरग़ूब बनिहाली ने कश्मीरी भाषा को संरक्षित और मातृभाषा के रूप में बढ़ावा देने और सामाजिक क्षेत्र में अपनी भूमिका बढ़ाने की ज़रूरत पर बल दिया। जे. एंड के. एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के सचिव डॉ. अजीज़ हाजिनी ने नादिम के कश्मीरी शायरी में योगदान को रेखांकित किया। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मुश्ताक़ अहमद ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री फ़ारूक़ नाज़की ने की तथा श्री शफ़ी शौक़ और फ़ारुक़ फ़ैयाज़ ने नादिम के व्यक्तित्व एवं लेखन पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री शांतिवीर कौल ने की। प्रो. बशर बशीर, श्री ग़ुलाम नबी आतिश एवं श्री अब्दुल अहद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। विद्वानों ने अपने आलेख में कश्मीरी शायरी के विकास में उस विशेष अवधि के संदर्भ में नादिम की भूमिका को रेखांकित किया, जिसमें यह शायर उभरा।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री ग़ुलाम नबी ख़याल ने की। श्री जी. आर. हसरत गड्डा, श्री मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़ एवं श्री सतीश विमल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चौथे सत्र की अध्यक्षता श्री मिशल सुल्तानपुरी ने की तथा सर्वश्री बी.एन.बेताब एवं आफ़ाक़ अजीज़ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कश्मीरी लेखकों, विद्वानों, भाषाविदों एवं कवियों की भारी संख्या में उपस्थिति रही तथा वे चर्चा में शामिल रहे।

प्रतिभा बसु जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

17 मार्च 2016, गुवाहाटी

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा कॉटन कॉलेज के सहयोग से प्रतिभा बसु जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 17 मार्च 2016 को कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी में किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के.

श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। कॉटन कॉलेज की बाङ्ला विभागाध्यक्ष प्रो. मीता चक्रवर्ती ने आरंभिक वक्तव्य दिया। प्रसिद्ध बाङ्ला लेखक श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। श्री गोपाल दत्त भौमिक ने बीज वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सुश्री बेलादास एवं श्रीमती कनकवती दत्ता ने प्रथम सत्र में प्रतिभा बसु के उपन्यास लेखन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता श्रीमती सुमिता चक्रवर्ती ने की। द्वितीय सत्र में विनीताराय चौधुरी एवं नंदिता भट्टाचार्य ने प्रतिभा बसु के लेखन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा सुश्री मधुमिता भट्टाचार्य ने सत्र की अध्यक्षता की। तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री ब्रजगोपाल ने की तथा प्रतिभा बसु के यात्रा वृत्तांत का पाठ किया। इस सत्र में श्री अभीक मजुमदार ने प्रतिभा बसु के *महाभारत* के बारे में तथा सुश्री मंजू ने अपने वक्तव्य में प्रतिभा बसु को याद किया। समापन वक्तव्य सुश्री उषा रंजन भट्टाचार्य ने दिया।

'प्राचीन साहित्य एवं इतिहास आधारित कोंकणी साहित्य' पर परिसंवाद

20 मार्च 2016, गोवा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा गोवा कोंकणी एकेडमी तथा इन्स्टीट्यूट मेंजेस ब्रगेंजा के सहयोग से 'प्राचीन साहित्य एवं इतिहास आधारित कोंकणी साहित्य' विषय पर इंस्टीट्यूट ब्रगेंजा, पणजी में 20 मार्च 2016 को एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक श्री तानाजी हलर्नकर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। श्री गोपाल कृष्ण पै मुख्य अतिथि थे। श्री उदय भेंब्रे, श्री

बाएँ से दाएँ : श्री माधव बोरकर, श्री गोपाल कृष्ण पै, श्री तानाजी हलर्नकर एवं श्री संजय हरमालकर

महाबलेश्वर सैल, डॉ. जयंती नायक, श्री एस. रामकृष्ण किनी एवं मेल्विन रोड्रिग्स ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री माधव बोरकर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'नेपाली साहित्यिक लघु पत्रिकाओं की सामाजिक भूमिका' पर परिसंवाद

20 मार्च 2016, शिलांग

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य परिषद्, शिलांग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नेपाली साहित्यिक लघु पत्रिकाओं की सामाजिक भूमिका' विषयक परिसंवाद का आयोजन 20 मार्च 2016 को बाबू मणिसिंह गुरुङ सभागार, गोर्खा पाठशाला उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शिलांग में किया गया। परिसंवाद के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी (कार्यक्रम) डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए संक्षेप में साहित्य अकादेमी की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। परिसंवाद के मुख्य अतिथि के रूप में नेपाली के प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री नवसापकोटा उपस्थित थे। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में समाज पर पड़नेवाले साहित्य के प्रभावों पर विमर्श करते हुए नेपाली पत्रिकाओं की भूमिका को रेखांकित किया। साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने अपने आरंभिक वक्तव्य में

परिसंवाद की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए कहा कि इसमें ध्यान रखा गया है कि वृहत्तर भारतीय नेपाली परिक्षेत्र से निकलने वाली सभी प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं का आकलन किया जा सके। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता नेपाली साहित्य परिषद्, शिलांग के सचिव प्रो. नर बहादुर राई ने की।

परिसंवाद का विचार सत्र श्री विक्रमवीर थापा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री सचिन राई (भारतीय नेपाली साहित्य के विकास में *दियालो* पत्रिका की भूमिका), श्री टेकनारायण उपाध्याय (भारतीय नेपाली समाज के सरोकार और नेपाली की साहित्यिक लघु पत्रिकाएँ), श्री कृष्ण प्रधान (भारतीय नेपाली साहित्यिक लघु पत्रिकाएँ : एक विहंगावलोकन) और श्रीमती लक्ष्मी मीनू (पूर्वोत्तर के संदर्भ में नेपाली की साहित्यिक लघु पत्रिकाएँ और भारतीय नेपाली समाज) ने अपने-अपने नाम के साथ अंकित विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी : बोडो लोक साहित्य और इसके सामाजिक व शैक्षिक मूल्य

21 मार्च 2016, बक्सा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 'बोडो लोक साहित्य और इसके सामाजिक व शैक्षिक मूल्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन बरमा कॉलेज, बरमा, असम में 21 मार्च 2016 को किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बरमा कॉलेज के प्राचार्य डॉ. टिकेन च. दास ने की। अपने उद्घाटन वक्तव्य में डॉ. अनिल बोरो ने साहित्य अकादेमी द्वारा बोडो भाषा एवं साहित्य के लिए किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया, लोक साहित्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमेशा के लिए स्थानांतरित होता रहता है। बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष डॉ. कामेश्वर ब्रह्म ने अपने वक्तव्य में कहा कि संगोष्ठी का विषय भाषा के विकास के लिए महत्त्व रखता है।

संगोष्ठी का एक सत्र

उन्होंने संगोष्ठी का आयोजन कॉलेज परिसर में करने के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। बोडो साहित्य सभा के उपाध्यक्ष श्री विश्वेश्वर बसुमतारी ने बीज वक्तव्य दिया और उन्होंने लोककथाओं की उत्पत्ति, विकास और प्रासंगिकता तथा 21वीं सदी के लोक साहित्य के बारे में बात की। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. टिकेन च. दास ने कॉलेज परिसर में संगोष्ठी के आयोजन के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। बोडो साहित्य सभा के सचिव श्री कमलकांत मसाहारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता बिजनी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. बिरहसगिरी बसुमतारी ने की। इस सत्र में श्रीमती खिरुप ब्रह्म, श्री प्रशांत ने क्रमशः बोडो में रोज़मर्रा के जीवन में बोडो लोक साहित्य की भूमिका तथा अनपढ़ों को शिक्षित करना तथा लोक साहित्य का सामाजिक और शैक्षिक विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री धरणीधर वारी ने की तथा श्री रुजब मसाहारी, श्री चित्तरंजन मसाहारी एवं श्री सीताराम बसुमतारी ने लोकसाहित्य समाज के दर्पण के रूप में, लोक साहित्य में बोडो शब्दावली की व्यापकता तथा लोक साहित्य के प्रकार विषय पर क्रमशः अपने विचार व्यक्त किए। श्री धरणीधर वारी के अनुसार लोक साहित्य आरंभ है और साहित्य के प्रेम को पूरा करता है।

संगोष्ठी : तेलुगुभाषी क्षेत्रों में आदिवासी भाषा एवं साहित्य

26-27 मार्च 2016, विशाखापत्तनम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु एवं गिरिजन को-ऑपरेटिव कॉरपोरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 'तेलुगुभाषी क्षेत्रों में आदिवासी भाषा एवं साहित्य' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 26-27 मार्च 2016 को विशाखापत्तनम में किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा आदिवासी साहित्य के विकास के लिए पूरे देश में किए जा रहे कार्यों को रेखांकित किया। उन्होंने आदिवासी साहित्य को एकत्र एवं संकलित करने पर बल दिया और देश में अकादेमी द्वारा आदिवासी और वाचिक साहित्य केंद्रों की स्थापना के अलावा भाषा सम्मान और नियमित रूप से भाषा सम्मेलनों के आयोजन पर प्रकाश डाला। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में एक समय में आदिवासी भाषाओं से मुख्यधारा की भाषाओं के विकास पर प्रकाश डाला और कहा कि इस परिदृश्य में आदिवासी भाषाओं को कमतर समझना ठीक नहीं होगा। उन्होंने कहा कि यह 'सभ्य' है जो अपनी जड़ों से दूर हो रहा है और 'आदिवासियों' में ऐसा नहीं है, इसलिए वे अलग-थलग हैं। इस आयोजन के लिए उन्होंने अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस सत्र के विशिष्ट अतिथि श्री अकेला रवि प्रकाश ने अपने वक्तव्य में कहा कि जनजातीय भाषाओं के साहित्य के दस्तावेज़ी रूप और लिपि के विकास के लिए कुछ प्रयास किए गए हैं, इन प्रयासों को जारी रखने की कोई कोशिश नहीं की गई। प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. रामकृष्ण रेड्डी ने अपने बीज वक्तव्य में भाषाओं की पूर्व कल्पना के बारे में बात करते हुए कहा कि लोगों को यह समझाना मुश्किल है कि बिना लिपि के भी भाषाएँ हो सकती हैं। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि कई भाषाओं के बारे में बड़ी अज्ञानता है कि एक समय में एक ही लिपि में कई भाषाएँ अपनी अद्वितीय साहित्यिक एवं भाषायी परंपराओं के साथ संभव है। संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री जी. उमा महेश्वर राव ने की। उन्होंने 'गोंडी भाषा एवं साहित्य' विषय पर बात की। इस सत्र में सुश्री एस. प्रसन्ना एवं श्री च. श्रीनिवासराव ने क्रमशः 'जनजातीय भाषा में लिपि एवं एन्कोडिंग मानक' तथा 'आदिवासी समाज के साहित्य में संघर्ष और आंदोलन' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. वी. रामकृष्ण रेड्डी ने की तथा 'जथापुलु कोंडुली एवं गदाबा की भाषा एवं साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र में श्री शक्ति शिवराम कृष्ण, डी. सूर्यधनंजय एवं ए. चंद्रशेखर राव ने क्रमशः 'कोंडा रेड्डी, बगथा वाल्मिकुलु एवं कोंडा दोरालू का भाषा एवं साहित्य', 'बंजारा का भाषा एवं साहित्य' तथा 'सवारा का भाषा एवं साहित्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तीसरे सत्र की अध्यक्षता सुश्री के. मलाया वासिनी ने की तथा 'क्लासिकी तेलुगु साहित्य पर आदिवासी भाषाओं और साहित्य का प्रभाव' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र में तीन विद्वानों सुश्री वादरेवु वीर लक्ष्मी देवी, सुश्री के. श्यामला एवं श्री मदाभुषी संपत कुमार ने क्रमशः 'आदिवासी भाषाओं और साहित्य के अध्येता विद्वान', 'चेंचू एवं यनादुला की भाषाएँ एवं साहित्य' तथा 'एरुकला की भाषाएँ एवं साहित्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चौथे सत्र की अध्यक्षता श्री एन. भक्तवत्सला रेड्डी ने की तथा 'कोर्राजुलु एवं पुजारी की भाषाएँ एवं साहित्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र में श्री सी.आर.एस. सरमा, श्री गोपराजू नारायण राव एवं श्री न. च. चक्रवर्ती ने क्रमशः 'कोया का भाषा एवं साहित्य', 'आदिवासी साहित्य में परिलक्षित मान्यम पिथुरी' तथा 'आदिवासी छात्र और मेरे शिक्षण अनुभव' आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. एन. गोपी ने समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए आदिवासी साहित्य और भाषा के शोध के महत्त्व को रेखांकित किया। श्री वादरेवु चिना वीर बहादुरदु ने

शिक्षित वर्ग के बीच जागरूकता की कमी के बारे में बात की और साहित्य अकादेमी से आदिवासी साहित्य का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराए जाने की अपील की। समापन वक्तव्य में डॉ. के. श्रीनिवासराव ने आश्वासन दिया कि जहाँ तक संभव होगा अकादेमी आदिवासी साहित्य का अनुवाद उपलब्ध करवाएगी, क्योंकि आदिवासी भाषाओं और मुख्य धारा की भाषाओं में अनुवादकों की भारी कमी है।

'स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली कथा साहित्य की प्रवृत्तियाँ' पर परिसंवाद

27 मार्च 2016, मणिपुर

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य परिषद्, मणिपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली कथा साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन 27 मार्च 2016 को चारहजारे, मणिपुर में किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन प्रतिष्ठित नेपाली विदुषी श्रीमती (डॉ.) दुर्गा शर्मा ने किया। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया तथा यह बताया कि सुदूर मणिपुर में नेपाली भाषा परिक्षेत्र में पहली बार स्वतंत्र रूप से नेपाली कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। नेपाली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि अकादेमी के परामर्शदाता होने के नाते उनका प्रयास रहता है कि अकादेमी भाषा के उन क्षेत्रों तक पहुँचे, जहाँ अब तक किन्हीं कारणों से नहीं पहुँच पाई है। इस संदर्भ में विभिन्न पहलक़दमियों की जानकारी भी उन्होंने दी। अपने अध्यक्षीय भाषण में परिषद् के अध्यक्ष श्री लोक बहादुर बस्नेत ने कहा कि नेपाली भाषा साहित्य के लिए मणिपुर एक ऐतिहासिक भूमि है, क्योंकि नेपाली भाषा की पहली कृति का प्रकाशन इसी धरती पर 1893 में हुआ था। सत्र का संचालन डॉ. हरिकृष्ण सिवाकोटी ने किया, जबकि सत्रांत में परिषद् के सचिव श्री कीर्तिमणि खतिवड़ा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के विचार सत्र की अध्यक्षता श्री अर्जुन प्रधान ने की। इस सत्र में श्री मिलन बांतवा, श्रीमती पुष्पा शर्मा और डॉ. टंकनाथ खतिवड़ा ने क्रमशः 'स्वातंत्र्योत्तर नेपाली कथा साहित्य और उत्तर आधुनिकता', 'नारी विमर्श और स्वातंत्र्योत्तर नेपाली कथा साहित्य' तथा 'स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली कथा साहित्य और युद्ध' विषयक अपने आलेख प्रस्तुत किए।

भुवनेश्वर बेहरा जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

27 मार्च 2016, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा भुवनेश्वर बेहरा जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 27 मार्च 2016 को भुवनेश्वर में किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने

उद्घाटन सत्र में बोलते हुए श्री रमाकांत रथ

समापन भाषण करते हुए श्री मधुसूदन पति

प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि श्री बेहरा ने कई मायनों में लेखकों और पाठकों की कई पीढ़ियों को प्रेरित किया है तथा आनेवाली पीढ़ियों को प्रेरित करना जारी रहेगा। अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रसिद्ध ओड़िया कवि श्री राजेंद्र किशोर पंडा ने भुवनेश्वर बेहरा के जीवन से भी बड़ी उनके मानवतावादी व्यक्तित्व की बात करते हुए उनके जीवन से जुड़ी कई घटनाओं को याद किया। साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य एवं संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. रमाकांत रथ ने श्री बेहरा की असाधारण योग्यता के बारे में बात करते हुए उनके कलात्मक कौशल के साथ-साथ लेखन पर बात की। भुवनेश्वर बेहरा की पुत्री डॉ. यशोधारा मिश्र ने अपने बीज वक्तव्य में श्री बेहरा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में बात की तथा श्री बेहरा की रचनात्मक विरासत के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा कि श्री बेहरा ओड़िया लेखकों के पहले बैच में से एक थे जिन्होंने अफ़्रीका का यात्रा वृत्तांत लिखा। श्री बेहरा सशक्त व्यंग्यकार के रूप में भी जाने जाते हैं। सत्र के अध्यक्ष श्री शान्तनु कुमार आचार्य ने श्री बेहरा को एक महान कहानीकार के रूप में याद किया, जो आम आदमी के प्रति सहानुभूति रखते थे। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य श्री पीतबास राउतराय ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र का विषय था 'भुवनेश्वर बेहरा की आलोचना एवं यात्रा वृत्तांत' तथा सत्र की अध्यक्षता श्री गोपालकृष्ण रथ ने की। सुश्री प्रतिभा सत्पथी एवं प्रो. सुमचु सत्पथी ने श्री बेहरा की आलोचना एवं यात्रा वृत्तांत पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र का विषय था 'बेहरा की कहानियाँ एवं आत्मकथा' तथा सत्र की अध्यक्षता श्री सतकड़ी होता ने की। सुश्री ममता दास एवं श्री विनय कुमार बेहरा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. गौरहरि दास ने समापन सत्र की अध्यक्षता की तथा प्रो. मधुसूदन पति ने समापन वक्तव्य दिया। अकादेमी के सहायक संपादक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'भारतीय जनजातियों की सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपराएँ' विषयक संगोष्ठी

29-30 मार्च 2016, बेंगळूरु

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा भारतीय जनजातियों की सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपराएँ विषयक संगोष्ठी का आयोजन भारतीय विद्या भवन, बेंगळूरु में 29-30 मार्च 2016 को किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा देश भर में जनजातीय साहित्य को बढ़ावा देने के संदर्भ में की जा रही पहल क़दमियों संक्षेप में बात की। उन्होंने आगे कहा कि यह संगोष्ठी भी अकादेमी द्वारा मुख्यधारा की भाषाओं-संस्कृतियों एवं आदिवासी समाज के संबंधों पर बीच एक बड़ी बहस कराने का प्रयास है। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली

बालसुब्रह्मण्यम ने अपने आरंभिक वक्तव्य में जनजातीय संस्कृतियों के बारे में संबंधित पक्षों से उचित परिप्रेक्ष्य और समझ की ज़रूरत के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि वैश्वीकरण, औद्योगीकरण आदि के कारण देश के आदिवासी समाज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में अकादेमी के महत्तर सदस्य डॉ. सीताकांत महापात्र ने कहा कि आदिवासी समाज के अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए अलग अकादेमी की स्थापना समय की माँग है और प्रस्तावित अकादेमी में जनजातीय जीवन के सभी परिदृश्यों के अध्ययन और शोध के लिए संसाधन होने चाहिए।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. तेजस्वी कट्टीमणी ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि आदिवासी समुदाय को मुख्यधारा में लाया जाना चाहिए। उन्होंने एक घटना को उद्धृत किया कि काका कालेलकर ने वरियर एल्विन से आग्रह किया कि भारतीय आदिवासियों के साथ काम करें तथा एक पुस्तक तैयार करें। उन्होंने कहा कि वे इस वास्तविकता से आहत हैं कि जनजातीय भाषाएँ तेज़ी से विलुप्त हो रही हैं। उन्होंने भारत के जनजातीय समुदाय की संस्कृति और भाषाओं के संरक्षण के लिए जनजातीय विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों की संक्षेप में चर्चा की। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि कला एक वस्तु बनती जा रही है। लोकतंत्र में जनजातीय समुदाय की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए, जंगलों एवं वनवासियों का शोषण रोका जाना चाहिए तथा जनजातीय समुदाय को मुख्यधारा में लाना चाहिए। क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी.महालिंगेश्वर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का विषय था 'आदिवासी भाषा साहित्य एवं संस्कृति में मिथक' तथा सत्र की अध्यक्षता डॉ. एस. सी. बोरा लिंगय्या ने की। सर्वश्री बी. आर. कचारिया, जावेद राही एवं हेमंत खड़के ने क्रमशः 'गिर के राबड़ी-सरजुगन में मिथक', 'जम्मू कश्मीर के गुज्जर एवं बेकर जनजातियाँ : एक अध्ययन' एवं 'महाराष्ट्र की जनजातियों का मिथक' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. बोरा लिंगय्या ने जनजातीय जीवन जैसे जोनु कुरबास, कोरागास, सिद्धि एवं अन्य के जीवन को पावर प्रेजेंटेशन द्वारा प्रस्तुत किया। सिद्धि समुदाय के बारे में उन्होंने कहा कि ये जांबिया से आए थे और उन्हें एक दास के रूप में बेचा गया था। उनमें से कुछ कर्नाटक आ गए तथा कुछ गुजरात चले गए। उन्होंने आगे कहा कि जनजातीय नेताओं ने देश के लोगों एवं धरती के साथ संबंध स्थापित किए हैं। मिथक सांस्कृतिक सूचकांक की तरह हैं। संध्या में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम 'लंबिनी नृत्य' का आयोजन किया गया, जिसे श्री गुजासत्ती लंबिनी डांस ट्रुप, बेन्दीगिरी सन्ना थांडा, दावनगेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी का दूसरा सत्र 'भारतीय साहित्य, सांस्कृतिक परिवर्तन और संरक्षण में जनजातियाँ' पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता डॉ. अर्जुन देव चारण ने की। सर्वश्री एच. कामखेताङ् बसवराज दोनुर एवं सुछदकुमार भौमिक ने क्रमशः 'मणिपुर की जनजातियों की सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपराएँ' तथा 'बंगाल की जनजातियों की सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपराएँ' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. चारण ने कहा कि संस्कृति का तात्पर्य है विकसित करना, भारत की आदिवासी संस्कृति में मन की अवधारणा सबसे महत्त्वपूर्ण है और भारत के आदिवासी जहाँ रहते हैं, उस पर उनका पहला अधिकार है।

तृतीय सत्र का विषय था 'भारत की जनजातियों पर वैश्वीकरण के प्रभाव' और सत्र की अध्यक्षता डॉ. भानु भारती ने की। सर्वश्री राजकिशोर मिश्र, उपेन राम हकचाम एवं मालन ने क्रमशः 'ओड़िशा की जनजाति पर वैश्वीकरण के प्रभाव', 'संताली जनजाति' तथा 'तमिळ जनजाति' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। चौथा सत्र 'आदिवासी संस्कृति के मिथक और वास्तविकता' विषय को समर्पित था तथा सत्र की अध्यक्षता डॉ. अनिल कुमार बोरो ने की। सर्वश्री पी.सी. हेम्ब्रम, ए.टी. मोहनराज एवं काशीनाथ विनायक बरहते ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से संगोष्ठी समाप्त हुई।